अन्तिम क्षण

अन्तिम क्षण

जगदीश प्रसाद मण्डल



पल्लवी प्रकाशन
बेरमा/निर्मली

ANTIM KSHAN (अन्तिम क्षण)
A Maithili Novel by Shri Jagdish Prasad Mandal

ISBN: 978-81-951070-7-0
दाम: 250/- (भा.रु.)

दोसर संस्करण: 2023 (पहिल संस्करण: 2021)

प्रकाशक: पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड नं.: 06, निर्मली
जिला- सुपौल, बिहार: 847452
मुद्रक: पल्लवी प्रकाशन (मानव आर्ट)

वेबसाइट: http://pallavipublication.blogspot.com
ई-मेल: pallavi.publication.nirmali@gmail.com
मोबाइल: 6200635563; 9931654742

फोण्ट सोर्स: https://fonts.google.com/,
https://github.com/virtualvinodh/aksharamukha-fonts
आवरण: श्रीमती पुनम मण्डल, निर्मली (सुपौल), बिहार: 847452
अक्षर संयोजन: डॉ. उमेश मण्डल

समर्पण भाव

अपना-ले सभ जीबै-मरै छी
अपने-ले जीबैक लूरि सीखू
अपने-आन आनमे अपने
सम समदाउन गाएब सीखू।
अपना-ले सभ...।

सम-समदाउनिक गति सीखिते
दिन, दिन-चरिया बनाएब सीखू।
दिने चरिया चरिये दिनक
दिन-चरिया चलाएब सीखू।
दिन-चरिया...।

सभ चाहैए आगू दौड़ी
दौड़-दौड़ीक रूप बनाएब सीखू।
दौड़ा-दौड़ी करैत-करैत
कुदि समुद्रक टपान सीखू।
कुदि समुद्रक टपान...।

अनुक्रमः

प्रथम पड़ाव

सात बजे साँझमे बससँ उतैर मंगलदेव दरबज्जापर पहुँचबे केलाह कि भातीज (सहदेव) कहलकैन-

“काका, रामकिसुन कक्काक हालत बहुत रद्दी भऽ गेल छैन।”

मंगलदेव आ रामकिसुन दू साल अन्तरक एकउमेरिये छैथ। करीब पचास बर्खसँ दुनू एक बात-विचारमे रहला अछि जइसँ अनेको मुकदमोमे संगे फँसला, अनेको बेर जहलो संगे गेला आ अनेको बेर लाठी उठा विरोधीक संग लड़ाइयो लड़ल छैथ। ऐठाम लड़ाइक माने ई अछि जे सामाजिक मुद्दापर दुनू गोरे एक पक्ष बनि लड़ला।

पाँच दिनक पछाइत पटनासँ मंगलदेव घुमल छला तँए चूरमचूर भेल शरीर छेलैन तहूमे सत्तैर बर्खक उमेर सेहो टपि चुकल छैथ। ओना, अखन तक जे श्रम करैक अभियास मंगलदेवक छैन तइसँ बहुत असोथकित नहियेँ छला, मुदा पटना-प्रवासक जे किसान आन्दोलनक कार्यक्रम छेलैन तइसँ शारीरिक-मानसिक थकान तँ भइये गेल छेलैन। तहूमे तीन दिनसँ ने नहेने छला आ ने व्यवस्थित ढंगसँ खेबे केने छला, तँए शरीरक शक्ति थोड़ेक क्षीण भइये गेल छैन। ओना, कृष्ण जकाँ आत्मिक शक्ति प्रज्वलित छैन्हे तइसँ सभ किछु अङेज शान्तचित्त छथिए। भातीजक मुहसँ रामकिसुनक समाचार सुनि पत्नीकेँ शोर पाड़ि मंगलदेव बजला-

“एक लोटा पानि दरबज्जापर नेने आउ।”

एक तँ ओहुना मानेसरी पतिक आज्ञाकारी छथिए तैपर पाँच दिनक पछातिक आवाज सुनलैन। आन स्त्रीगण जकाँ मानेसरी नहियेँ छैथ जे कहितथिन अखन गप-सप्प करै छी तँए कनी ठहैर कऽ आएब। मानेसरी ओहन आज्ञाकारी, सत्तैर बर्खक रहितो, अखनो छथिए जे जखने पतिक

कोनो आढ़ैत होइ छैन, ऐठाम स्पष्ट बुझि लिअ जे पतिक मुँहक आवाज परेख अपन काजक महत्व मानेसरी अंकै छैथ, कि दासो-दास जकाँ भऽ जाइ छैथ।

कानमे पतिक आवाज पहुँचते मानेसरी, अपन सूपमे पसरल दालिकेँ ओहिना छोड़ि माने दालिक आँकर-पाथर बीछब छोड़ि, ओसारपर सँ लोटा उठा सोझे चापाकल दिस बढ़ली। पानि भरि दरबज्जापर मानेसरी पहुँचबे केली कि मंगलदेव बजला-

"जाबे मुँह-हाथ धोइ पानि पीब ताबे चाह बनेने आउ।"

दरबज्जा परक बात, माने मानेसरी आ मंगलदेवक बीचक बात पुतोहु (सुदेसरी) सुनि लेली, जइसँ चाहक ओरियानमे लागि गेली।

चाह पीबैसँ पहिने मंगलदेव अपन देहक कपड़ा बदैल लेलैन। ओना, गाममे मंगलदेव ओहन लोक छैथ जे लूँगी आ गमछामे सौंसे गाम घुमै छैथ। लूँगी पहीरि देहपर गमछा लइते छला कि मानेसरी चाह नेने पहुँचलैन। चाहक पहिल घोंट मंगलदेव लेनहि छला कि सुवंशलाल पहुँचल। सुवंशलाल तीस बर्खक युवक, मंगलदेवक सम्पर्कमे दस-बारह बर्खसँ आबि चुकल अछि। सुवंशलालकेँ देखिते मंगलदेव बजला-

"बौआ सुवंश, गामक की हाल-चाल अछि। अखने पटनासँ एलौं कि सहदेव कहलक जे रामकिसुन कक्काक हालत बड़ रद्दी छैन। से की भेलैन अछि?"

मंगलदेवक बात सुनि सुवंशलाल बाजल-

"काका, कम आशा रामकिसुन कक्काक छैन। ओना, जखन तकक समाचार अछि तखन तक ओ जीवित छला, मुदा अखन की स्थिति छैन से नहि बुझि पेलौं अछि।"

जहिना थाकैन-ठेहीसँ मन्हुआएल आदमीक मन, पानिमे निमक-चीनी घोड़ि पीबिते फुरफुरा जाइए तहिना मंगलदेवकेँ सेहो पानि-चाह पीला पछाइत फुरफुरी जागि गेलैन। बजला- "सुवंश, गाड़ी कंडीशनमे

छह।"

सुवंशलाल बाजल- "किए, अखन कोन एहेन हलतलबी काज गाड़ीक भऽ गेल?"

मंगलदेव बजला-

"झंझारपुर चलह। पहिने रामकिसुनक भेँट करबैन, पछाइत जे जेना हएत से करब।"

जहिना एकबोलिया लोक मंगलदेव छैथ तहिना एकचलिया लोक सुवंशलाल अछिए। जहिना मंगलदेव बजला तहिना सुवंशलाल तैयार होइत बाजल-

"जाबे अहाँ दरबज्जापर सँ निकैल सड़कपर जाएब ताबे हमहूँ गाड़ी निकालि सड़कपर आबि जाएब।"

सुवंशलालक तैयारी देखि मंगलदेव बजला-

"झंझारपुरमे किनका ऐठाम माने कोन डॉक्टर ऐठाम रामकिसुन छैथ से तँ जानाकरीमे हेतह।"

सुवंशलाल बाजल-

"हँ, पहिने जकाँ कि आब प्रभासेबाबूटा डॉक्टर छैथ, आब तँ गाहीकेँ के कहए जे दर्जनो डॉक्टर झंझारपुरमे छैथ।"

नवयुवक सुवंशलाल अछि, तँए बजैक ओ ठेकान नहि आएल अछि जे ठेकान प्रौढ़, सियानकेँ होइ छैन। तँए डॉक्टरक नाम नहि लऽ समूहेक चर्चा उठा देलक। समूहक चर्च सुनि मंगलदेव बजला-

"प्रभासबाबूक गप किए करै छह, अपना मुइनहि हुनकर सभ किछु बिलैट गेलैन।"

मंगलदेवक मुहसँ सभ किछु बिलटब, माने प्रभासबाबूक, सुनि सुवंशक मनक जिज्ञासा आरो जगि गेल। बाजल-

"से की काका?"

ओना, मंगलदेव झंझारपुर जेबाक धुनिमे छला, मुदा ऐठाम विचित्र द्वन्द्व मनमे ठाढ़ भऽ गेलैन। माने ई जे एकदिस रामकिसुनकेँ देखब छेलैन, जे मृत्यु सज्यापर छैथ, दोसर दिस सुवंशक जीवित प्रश्न छेलैन जे प्रभासबाबूक आगमनसँ ऐ परोपट्टाक लोककेँ चिकित्सीय सुविधा की भेटलैन। प्रभासबाबूपर नजैर पड़िते मंगलदेवक मन रामकिसुनपर सँ कनी निच्चाँ ससैर गेलैन जइसँ प्रभासबाबूक विचार अगुआ गेलैन। मंगलदेव बजला-

"बौआ सुवंश, उन्नैस साए चालीस इस्वीक करीबक बात छी। बंगालमे जबरदस्त अकाल भेल। ओइ समयमे अपना देशमे गाँधीजीक अगुआइमे अंगरेजी शासनक विरोधमे धनघोर आन्दोलन पसैर गेल छल। बंगाल अंगरेजी शासनक अड्डो छल आ बेपारक केन्द्र सेहो छल।"

बिच्चेमे सुवंश बाजल-

"एक तँ ओहुना बंगाली सभ बेसी अगिलह होइए, तैपर तेहेन गर भेटल जे आरो धुआँधार आन्दोलन पसैर गेल हएत।"

सुवंशक विचारकेँ रोकैत मंगलदेव बजला-

"तेहेन अकाल बंगालमे भऽ गेल जे बंगाली सभकेँ अपना धरतीपर जीब कठिन भऽ गेलैन। जइसँ पड़ाइन लगि गेलैन।"

सुवंश बाजल-

"केहेन अकाल भेल?"

मंगलदेव बजला-

"आजुक जे बंगाल अछि, माने औद्योगिक रूपसँ विकसित, से तहिया नहि छल। खाली कोलकाता शहर भरि उद्योग छल बाँकी क्षेत्र किसानीक छल। तीन-चारि साल जहिना पानिक अकाल भेल, तहिना खेतक फसलमे बिमारीक प्रकोप तेहेन भेल जे उपजा भेबे ने कएल। जइसँ जबरदस्त भूखमरी पसरल। पाँच लाखसँ ऊपर लोक मरबो केलाह आ बंगाल छोड़ि-छोड़ि भगबो केलाह।"

सुवंश बाजल- “प्रभासबाबू सेहो ओही समयमे झंझारपुर एला?”

मंगलदेव- “हँ। झंझारपुर हुनका धाइर देलकैन। परिवार चलबैत काफी सम्पैत, खेत-मकान इत्यादि, सेहो बना लेलैन। तैसंग एते प्रतिष्ठा परोपट्टामे सेहो अरैज लेलैन जे बच्चा-बच्चा हुनकर नाओं जनै छैन।”

सुवंश बाजल-

“आब तँ सभ किछु समाप्त भऽ गेलैन। बेटा-भातीज सभ सम्पैत–माने खेत-मकान–बेचि-बिकीन बंगाले चलि गेला।”

तही बीच छेदीलाल आबि बाजल-

“मंगलदेव भैया, बड़ जुलुम भेल। रामकिसुन भैया मरि गेला, अखने एक आदमी आएल अछि, वएह बाजल।”

छेदीलालक मुहसँ समाचार सुनिते मंगलदेवक शरीरक शक्ति बैलूनक हवा जकाँ निकैल गेलैन। जइसँ थुस-दे सड़कपर बैस गेला। दुनू आँखिसँ दहो-बहो नोर खसए लगलैन। एक्के-दुइये काने-कान गाममे समाचार पसैर गेल जे रामकिसुन मरि गेला..!

मंगलदेवक आँखिसँ दहो-बहो नोर खसैत देखि छेदीलाल बाजल-

“भैया, कनला-खिजलासँ किछु ने हएत। ऐ देहक कोनो ठेकान अछि जे कखन चेतनशील रहत आ कखन चेतनहीन भऽ जाएत।”

ओना, मंगलदेव अपनो ई बात बुझिते छैथ जे शरीर क्षणभंगुर अछि मुदा जीवनक जे सम्बन्ध केकरो संग बनि गेल रहैए ओ तँ मनो आ विचारोकेँ प्रभावित करिते अछि। तहीकाल सुवंश सड़कपर गाड़ी, मोटर साइकिल, ठाढ़ कऽ मंगलदेव लग पहुँचल। छेदीलालकेँ देखि सुवंश बुझि गेल जे कोनो दुखद समाचार मंगलदेव काकाकेँ भेटलैन तँए एना दुखी भेल छैथ। अपन मनक खुट-खुटीकेँ मेटबैक खियालसँ सुवंश बाजल- “छेदी भाय, रामकिसुन कक्काक की समाचार छैन?”

आँखिमे ढबकल नोरकेँ पोछैत छेदीलाल बाजल-

“रामकिसुन भैया मरि गेला.!”

सुवंश बाजल- “से अहाँ केना बुझलिऐ?”

छेदीलाल-

“रामकिसुने भैया ऐठामसँ आबि रहल छी। आँगनमे कन्ना-रोहट भऽ रहल अछि।”

एक तँ ओहुना गामक हवामे पसरल किछु एहेन समाचार तँ होइते अछि जे सोल्होअना सच होइए, भलेँ किछु समाचार सोल्होअना फुसियो किए ने होइत होउ। सुवंश बाजल-

“काका, ऐठाम कनलासँ किछु ने हएत। गाड़ी हमहूँ आँगनमे रखि दइ छिऐ आ चलू दुनू बापूत रामकिसुन काका ऐठाम। अपन जे आँखिक देखल रहत तइमे कोनो तरहक झूठ-फूस नइ ने हएत।”

मंगलदेव बजला-

“सुवंश, पहिने ई भाँज लगाबह जे जँ रामकिसुन मरि गेला तँ लहास झंझारपुरसँ आएल आकि पछुआएले अछि।”

सुवंश बाजल-

“से तँ ओइठाम गेले पछाइत ने देखब।”

संजोग बनल, मंगलदेव आ सुवंशो रामकिसुन ऐठाम पहुँचला आ झंझारपुरसँ टेम्पूपर रामकिसुनक मृत्यु शरीर माने शव सेहो पहुँचल। टेम्पूसँ रामकिसुनक शवकेँ उतारि दरबज्जेपर पाड़ि देलकैन। टेम्पूबला घुमि गेल। मंगलदेवकेँ देखिते जीवनलाल बाजल-

“मंगल भैया, चौधरीजी ऐठाम, चौधरीजी माने डॉक्टर, रामकिसुन भैयाकेँ लऽ गेल छेलियैन। जाँच-पड़ताल करिते छेला कि बिच्चेमे प्राण छुटि गेलैन।”

मंगलदेव- “रामकिसुनक मन कखनसँ खराब भेल छेलैन?”

जीवनलाल बजला- “दिनमे माने बारह बजेमे, खेबाकाल कटहरक कोह खेने छेला, पछाइत पेट फुलए लगलैन। जाधैर बरदास भेलैन ताधैर तँ

केकरो ने कहलखिन। मुदा जखन छत्ता जकाँ पेट तानि देलकैन आ साँस लइमे तकलीफ हुअ लगलैन तखन हमरा शोर पाड़लैन। दुनू भाँइ संगे-संग एगारह बजे तक कोदरवाहि केने छेलौं, तँए मनमे कोनो तेहेन शंका छेलए-हे नहि।"

सुवंश बाजल-

"पछाइत की भेलैन?"

जीवनलाल बजला-

"जखन भैया लग पहुँचलौं तँ देखलयैन जे कछ-मछ, कछ-मछ कऽ रहला अछि। पुछलयैन जे भैया की होइए? बजैक सामर्थ्य नहि रहलैन। हाथेक इशारासँ पेट देखौलैन। बोलती बन्न देखि भौजीकेँ, माने रामकिसुनक पत्नीकेँ, शोर पाड़ि कहलयैन जे भैयाकेँ डॉक्टर ऐठाम लऽ चलियौन।"

दिनुका भोजन सुनि मंगलदेवक मनमे ठहैक गेलैन जे एक तँ ओहिना रामकिसुन आइ बीस सालसँ शरीरक भीतरिया रोगसँ ग्रसित रहला अछि। दवाइ-दारू, पथ-परहेज करैत चलि आबि रहला अछि, तैपर कटहर सन जनमारा फल भरि पेट खेने हेता तेकरे फलस्वरूप एना भेलैन। मुदा आब ओकर दोसर उपाइये की हएत.! मंगलदेव बजला-

"जे हेबाक छल से तँ भऽ गेल। आगूक की विचार करै छह?"

जीवनलाल बजला-

"आगूक की विचार करब। ऐगला जे क्रिया अछि, सएह ने करब।"

जीवनलालक बात सुनि मंगलदेवक मनमे रामकिसुनक संग अपन पचास बर्खक सम्बन्ध नाचि उठलैन। अनेको काज, माने संग मिलि केलहा काज, एकाएकी मोन पड़ए लगलैन। मुदा कन्ना-रोहट जे परिवारक लोकक संग समाजोक लोक कऽ रहल छला जइसँ मंगलदेवक मन अपन बीतल जिनगीपर सँ ससैर आगूमे पड़ल शवपर आबि अँटैक गेलैन। एकाएक मनमे धक-दे उठलैन जे अपना समाजमे एहेन चलैन सभ दिनसँ अछि जे

जेते जल्दी हुअए शवदाह कऽ ली। मुदा लगले मंगलदेवकेँ अपने मन कहलकैन जे तीन-तीन, चरि-चरि दिन शवकेँ सेहो तँ रखले जाइए। मंगलदेव बजला-

"आगूक जे क्रिया अछि तेकरा आगू बढ़ाबह।"

जीवनलाल बाजल-

"भैया! पाँचो बहिन, माने आठ भाए-बहिन रामकिसुन छैथ, ऐठाम मोबाइलसँ जानकारी दऽ देलिऐन अछि। ओ सभ जखन औती तेकर पछातिये ने डाहैक विचार करब।"

जीवनलालक विचार मंगलदेवकेँ जँचलैन। किए तँ गाममे देखिते आबि रहल छैथ जे तीन-चारि दिन तक केते शव राखल रहैए। तैसंग मनमे ईहो विचार जगलैन जे जइ परिवारक घटना छी ओइ परिवारक विचारकेँ ने प्राथमिकता देल जाए। किए तँ समाजो तँ समुद्रे जकाँ गहींर अछिए, जइसँ रंग-रंगक बेवहारो आ चलैन सेहो चलिये रहल अछि.! मंगलदेव बजला-

"जीवनलाल, अन्तिम साँसक समय, माने रामकिसुनक मृत्युक जीवनक अन्तिम समयमे, जैठाम मृत्यु ठाढ़ रहैए, तूँ लगमे छेलह आकि दूर (हटल) छेलह?"

जीवनलाल बाजल- "लगेमे छेलौं भैया। धीरे-धीरे भैयाकेँ कछमछी कम हुअ लगलैन आ बोलीमे जेना टनक एलैन।"

मंगलदेव बजला- "किछु बजबो केलाह?"

जीवनलाल- "हँ।"

मंगलदेव- "की सभ बजला?"

जीवनलाल- "जखन प्राण छुटए लगलैन तखन बजला जे मंगलदेव भायकेँ कहि दिहौन जे परिवारकेँ देखैत रहता।"

जीवनलालक मुहसँ 'रामकिसुनक परिवार देखब' सुनि मंगलदेवक मनमे दोसर पत्नीक संग माने रामकिसुनक दोसर पत्नी, पाँचो बेटा-बेटीपर भरमए लगलैन। एकटा साधारण परिवारक रामकिसुनकेँ चारिटा बेटीक

बिआह माने आजुक परिवेशमे मध्यम परिवारक बेटी-बिआह दस लाखक भइये गेल अछि, निमाहब छेलैन जइमे तीनटा बेटीक बिआह रामकिसुन निमाहि चुकल छैथ, बाँकी एकटा, चारिम शेष रहल छैन। पाँचिम नम्बरमे बेटा छैन जे अखन हाइ स्कूलमे पढ़िये रहल अछि। अपन विचारक भारक मोटाकेँ कम करैत मंगलदेव बजला-

"आरो किछु रामकिसुन बजला आकि बस एतबे?"

जीवनलाल बाजल-

"डॉक्टरो साहैब कहलैन जे अखन तक ब्रेन (माथ) मे कोनो तरहक गड़बड़ी नहि भेलैन अछि।"

डॉक्टर साहैबक विचार सुनि मंगलदेवक अपने मन कहलकैन जे पचास बर्खक साधल ब्रेन लगले थोड़े विचलित भऽ जाएत। रामकिसुनक विषयमे आन-आन जे सोचैथ वा बाजैथ मुदा अपने तँ पचास बर्खसँ संग रहि देखैत आबि रहल छी। गाममे केते बेटा एहेन भेल अछि जे रामकिसुनक हाथ पकैड़ सकैए। एकटा साधारण परिवारक बीच रहि रामकिसुन अपना संग माने अपन परिवारक संग समाजक दुख-तकलीफक सवालपर सीना तानि सभ दिन ठाढ़ रहल, आइ ओइ आदमीक ने अन्त भेल अछि। नवका पीढ़ीक लोक, तेहेन सृजित भऽ रहल अछि जे अपनो कुल-खनदानक पूर्वजक नाम नहि जनैए, तखन रामकिसुन सन लोककेँ मोन राखत। एकाएक मंगलदेवक मन मोम जकाँ पघिलए लगलैन। बजला- "जीवनलाल, आरो किछु रामकिसुन बजला?"

जीवनलाल बाजल- "अन्तिम बात यएह कहलैन जे जहिना मृत्युक पछातिक जे क्रिया-कर्म अछि ओ मंगल भाइक विचारसँ करिहह।"

जीवनलालक मुँहक बात सुनिते मंगलदेवक करेजमे जेना धराम-दे धक्का लगैए तहिना भेलैन। मोन पड़लैन रामकिसुनक ओ दिन जइ दिन भोगेन्द्रजी–पूर्व सांसद आ साम्यवादी विचारधाराक चिन्तक–क मुहसँ ब्राह्मणवादपर पहिल भाषण सुनि रामकिसुन शपथ लेलैन जे जाबे शरीरमे प्राण रहत ताबे तक ब्राह्मणवादक विरोध करब। जइसँ समाजमे मृत्युक

पछातिक जे क्रिया-कर्म अछि तेकरा जड़ि-मूलसँ उखाड़िकऽ समाजसँ फेंक देब। कमलपुर गामक बीच मंगलदेवक संग रामकिसुन संगी बनि गामक साइयो नवयुवककेँ एक विचारधाराक संग जोड़ि श्राद्ध-कर्मक जे दुरबेवहार अछि तेकरा उठाव शुरू केलैन। दर्जनो एहेन घटना भेल जे मृत्युक पछाइत, केश कटबै-सँ-श्राद्ध-कर्मक संग भोज-भातक उठाव भेल। आजुक परिवेशमे अनेको तोड़-जोड़ भेल अछि जइसँ विचारधारामे सेहो घटन-बढ़न भेबे कएल अछि। अखन तक माने बीचक समयमे, जहियासँ श्राद्धक क्रिया-कर्मक उठाव समाजमे भेल, रामकिसुनक परिवारमे मातो-पिताक मृत्यु सेहो भेलैन। जइमे ओ क्रिया-कर्मकेँ उठा चूकल छला। आजुक एहेन परिवेश बनियेँ गेल अछि जे जएह विरोधक अगुआइ, माने क्रिया-कर्मक, केलैन सएह समर्थक बनि अगुआइ कऽ रहला अछि। एहना स्थितिमे की कएल जाए..?

एकाएक मंगलदेवक मन चकभौर लेलकैन। मुदा बजला किछु ने। नहि बजैक कारण भेलैन जे अखन तँ रामकिसुनकेँ जरबैक काज पहिल नम्बरमे अछि, तँए पहिने एकरा सम्पन्न कएल जाए। तहूमे अखन तक एक्केटा बहिन एलैन अछि बाँकी चारिटा पछुआएल छैन। धीरे-धीरे अन्हार सेहो बढ़ले जाएत। जइसँ हो-न-हो रातिक दुआरे काल्हि बहिन सभ आबैन। तहूमे सभकेँ सभ कहबो केलखिन परिवारक जे हलतलबी काज अछि तेकरा सम्हारिकऽ आएब। गाड़ी-सवारीक सुविधा भेने राता-रातीक यात्रा सेहो लोक कइये रहला अछि।

दोसर साँझ समाप्त होइते तेसर साँझक करिखाएल अन्हार पसरए लगल। मंगलदेव बजला- "जीवनलाल, अखन जाइ छी, जँ रातियोमे लहास जरबैक विचार हुअ तँ समाद दिहह। नहि जँ कौल्हुका विचार हएत तँ भोरमे अपने आएब।"

ओना, जीवनलाल सेहो श्राद्ध-कर्ममे दू-दिशिया भऽ गेल अछि। माने ई जे तीन भाँइक भैयारीमे जीवनलाल रामकिसुनसँ छोट आ ननूलाल जेठ भाय, जे पहिने मरि गेला। ननूलालक दुनू बेटा सेहो दू-दिशिया बनि

गेल अछि। दू-दिशियाक माने भेल जे श्राद्ध-कर्मक जे अबेवहारिक रूप अछि, तेकर विरोधमे जे जमात समाजक रूपमे ठाढ़ अछि, आ दोसर ई जे अखन धरि जे परम्परानुसार कर्म चलैत आबि रहल अछि तेकर समर्थनमे। ओना, रामकिसुन आइ धरि अपन विचारधारा– माने श्राद्ध-कर्मक विरोध–क पक्ष पोषक छथिए, मुदा संयुक्त परिवारमे जे एक भैयारी रहितो परिवार अलग-अलग बनौने छैन, तैबीच कहियो अराड़ियो करैत आबि रहल छला तँ कखनो मरारियो नहि करैत एला अछि सेहो बात नहियेँ अछि। ओना, मंगलदेवक मनमे भीतरिया खुशी रहबे करैन जे जहिना अर्जुनकेँ कृष्ण कहने रहथिन जे हे अर्जुन अहाँक दुनू हाथमे लड्डू अछिए, तँए लड़ाइ लड़ू। जँ रणक्षेत्रमे मरि जाएब तँ वीरगतिक प्राप्ति हएत आ जँ नहि मरब माने जीतब तँ स्वर्गक प्राप्ति हएत। श्राद्ध-कर्मक विधान तँ दस दिनक पछाइत शुरू हएत, ताबे नअ दिन तँ असमसानेक कर्म हएत, जे पहिने हएत। मृत्य शरीरकेँ चाहे आगिमे जरा अन्त करी कि माइटिक तरमे गाड़िकऽ अन्त करी, आकि धार-धूरमे फेंक-फाकि भँसिया कऽ अन्त करी, जिनगीक अन्तिम सीमा तँ यएह ने भेल। से तँ समाजमे अखनो जीवित अछिए जे जाधैर लहासक अन्त हएत ताधैर समाज एकमुँहरी रहि काजकेँ सम्पन्न करत आ जखन तेसर दिन माने लहास अन्त भेलाक तेसर दिन, माने छाउरझँप्पीक पछाइत, सारा बनत तखन विधि-विधान शुरू हएत। जइमे श्राद्ध-कर्मक केश कटबैसँ लऽ कऽ भोज-भात तक बाड़ो-बाड़ी हएत आ मरो-मिलान तँ हेबे करत। खाएर जे हएत से होइत रहत, अखन तँ रामकिसुनक लहासकेँ जराएब पहिल काज भेल जे अपनो परीक्षा छीहे। अपन परीक्षा ई जे जहिना रामकिसुन बिसवासक संग संगी बनला तहिना जिनगीक अन्तिम क्षण धरि संगो पूरैक अछि। मनुक्खकेँ शुरूसँ अन्त धरि जीबे ने जिनगी भेल, से तँ भइये रहल अछि।

संजोग बनल, खेबा-पीबा रातिमे बरखा भऽ गेल। बरखा कोनो भारी नहियेँ भेल मुदा हल्लुको नहियेँ कहल जाएत। किछु धिया-पुता सबेरेमे खा सुति रहल तँए बुझबे ने केलक जे कखन बरखा भेल, मुदा जे

माता-पिताक संग खाइ-पीबैबला पछुआएल रहल ओ पछुआएले रहि गेल, किए तँ पानि (बर्खाक पानि) तँ कम्मे भेल, माने बरखा बरसैक हिसाबसँ, मुदा भेल बेसी काल।

रामकिसुन ऐठाम तँ चुल्हिमे पजारे ने पड़ल, किए तँ आँगनमे मरनी (मृत्यु शरीर) छैन। चारि बहिनमे तीन बहिन बरखे काल पहुँचली मुदा चारिम पछुआएले रहली। ओना, मंगलदेवक मनमे घनघोर प्रश्न जगि गेल छेलैन। घनघोर प्रश्न ई जगल छेलैन जे सामाजिक मुद्दापर माने समाजक बीच जे सइयो रंगक बान्ह-छेक (बन्धन-बन्हन) अछि तेकरा तोड़ैक विरोधमे जमातक बीच सेहो जमात बनि गेल अछि। किछु मुद्दा एहेन अछि जइमे जमातमे सँ, माने संगठित समूहमे सँ, किछु गोरे विरोध स्वरूप अलग भऽ विरोधी बनि ठाढ़ भेल अछि तँ बहुसंख्यक माने संगठनक, लोकक जमात (संगठन) सेहो बनले रहल अछि।

ओछाइनपर पड़ल मंगलदेवक मनमे उठलैन जे एहेन तँ अनेको बेर जीवनमे भेबे कएल अछि जे कहियो मृत्युक दियादी परिवारसँ अलग जे समाजक लोक मुरदा जरबैमे सहयोगी बनै छैथ, ओ जरौलाक (मुरदा जरौलाक) पछातियेसँ नह-केश कटा अपनाकेँ पाक-साफ बुझए लगै छैथ। तेकरो पाछू कारण अछिए जे जे कियो मुरदा जरबए गेला आ प्रात भने माने दोसर दिन, गामक सीमा टपि बाहरक काजे जेता, ओ अपन काज छोड़ि नह-केशक भाँजमे पड़ल रहता सेहो नीक नहियेँ ने भेल। तेकर अतिरिक्तो सिनेमाक कलाकारक देखौंससँ केशक मर्मक तत्त्वकेँ बुझए लगल अछि ओ केश कटैबते ने अछि। खाएर जे अछि। मंगलदेवक मनमे घनघोर घटा जकाँ ई विचार उठलैन जे रामकिसुन तँ सामाजिक मुद्दाकेँ अपन जीवनक लक्ष्यक मुद्दा बना ठाढ़ रहला जइसँ सामंती समाजक सड़ल-गड़ल रूप-सभमे सभसँ किछु-ने-किछु मुहाँ-ठुट्ठी भेबे केलैन, तँए हो-न-हो ओहन बिमरियाह देह जकाँ, जइमे अनेको बिमारी घेरिकऽ पकैड़ नेने रहैए आ एक्केबेर मुड़ी उठा जागि सभ अपन गुण-अवगुण प्रकट करैए, तहिना ने सभ (समाजक) एक्केबेर उठि जाए। जँ से हएत तँ मृत्य

शरीरक बेइज्जती हएत.! ओना, जाबे शरीरमे चेतनशक्ति रहैए ताबैये तक विचारमे इज्जत-बेइज्जतक प्रश्न रहैए, मुदा शरीर तँ से नहि छी। तँए इज्जत-बेइज्जतक प्रश्न नहियेँ अछि। किएक तँ देखिते छी जे कोनो-कोनो लहास फेकलो जाइए तँ कोनो-कोनो जरौलो जाइते अछि। एकाएक मंगलदेवक मनमे जगलैन जे किए ने भोरे लहास उठैसँ पहिने, समस्त परिवारक बीच एकमत विचार बना काजकेँ अगुआ लेब, जइसँ बीचमे कोनो विघ्न-बाधाक सम्भावना नहियेँ रहत। जे आगूक क्रियाक लेल शुभ्र-शाभ्र सेहो बनल रहत।

सूर्य निकलैसँ पहिने मंगलदेवक अपन विचारक जे रहैन माने समाजमे जे एकविचारक लोक रहैथ, तिनका सभकेँ सूचित करैत अपने रामकिसुन ऐठाम पहुँच गेला। संजोग मंगलदेवक ईहो बनलैन जे पाँचो बहिन माने रामकिसुनक पाँचो बहिन, सँ भेँट-घाँटक संग जीवित रामकिसुनक विचार सेहो भेटलैन। माने ई जे रामकिसुन सभ बहिन ऐठाम, सालमे दू बेर, तीन बेर जेबे करै छला। गप-सप्पक क्रममे समाजक बीच मृत्युक पाछू जे धनक अपव्यय होइए ओ जँ परिवारक जीवितक पाछू कएल जाए तँ लोक अपन जीवनकेँ जीबै-जोकर बना सकैए। सभक जानकारीमे छेलैन्हे।

संजोग नीक रहल। शुभ-शुभ-के रामकिसुनक दाह-क्रिया सम्पन्न भेल।



शब्द संख्या: 2874, तिथि: 20 मई 2021

द्वितीय पड़ाव

मिथिलांचलक बीच कमलपुर जहिना पुरान (प्राचीन) गाम अछि तहिना प्रतिष्ठित गाम सेहो अछिए। प्रतिष्ठित गामक माने भेल जे जहिना गाममे ऊसर-खासर माटि नहि अछि, माने उपजाक माटि अछि, तहिना पतालक पानि सेहो नीचला पतालक तलमे नहि, माने पतालक सात तल अछि- अतल, बीतल, सुतल, तरातल, रसातल, महातल, पाताल ऊपरके तलमे अछि, जइसँ जहिना खेत पटबैक बोरिंग ऊपरके तलमे भऽ जाइए तहिना पानि पीबाक चापाकलो आ पोखरियो-इनार असानीसँ भइये जाइए। खेत-पथारकेँ समतल रहने कमलपुरमे उपजो-बाड़ी समतल अछिए। जखने अर्थ-उपार्जनक साधन समतल रहत तखने जीवनमे सेहो समतलता आबिये जाइए। वएह समरूपता भेल माने समतलता भेल प्रतिष्ठित गामक लक्षण। अही लक्षणक आधारपर कमलपुर मिथिलाक प्रतिष्ठित गामक श्रेणीमे अबैए।

ओना, जहिना सोचै-विचारैक अपन-अपन दृष्टि आ दृष्टिकोणो सभकेँ होइए जइसँ अपना-अपना नजरिये एक्के वस्तुकेँ लोक भिन्न-भिन्न रूपो आ स्वरूपो देखबे करै छैथ जइसँ प्रतिष्ठित गाम मानैक दोसरो-तेसर कारण अछिए। कियो बुझै छैथ जे जइ गाममे पैघ (ऊँच) जाइतिक, तथाकथित पैघ जाइतिक, बासो आ संख्यो बेसी रहल तँ ओ गाम प्रतिष्ठित भेल, तँ कियो बुझै छैथ जे जइ गाममे बेसी पढ़ल-लिखल रहल ओ प्रतिष्ठित गाम भेल, तँ कियो बुझै छैथ जे जइ गाममे बेसी लक्ष्मीपात्र माने धनसँ सम्पन्न लोक रहला ओ प्रतिष्ठित गाम भेल। मुदा मुरकुटियामे ई तँ कहले जाएत जे गाम, माने भौगोलिक रूपमे ओकर चारूकातक सीमा-सरहद, घर-दुआर, रोड-सड़क, पोखैर-इनार, खेत-पथार, गाछी-कलम बेसियो आ नीको हुअए, ओ भेल गाम आ ओइ गाममे जे सद्गुण भेल ओ

भेल गामक प्रतिष्ठा।

खाएर जे हुअए, जेतए हुअए, ओ ओत्तैक मुद्दा भेल, ऐठाम तँ कमलपुरक चर्च अछि, तँए कमलपुरक प्रतिष्ठाक अपन की विशेषता अछि।

दर्जनों जाइतिक बीच बँटल समाजमे कमलपुर ओहन गाम अछि जइमे जिनगीक आवश्यकता पूर्तिक सभ साधनक पूर्ति कर्ता मौजूद अछि। जहिना किसानक बीच खेत छैन तहिना खेतीक जीवनसँ जुड़ल सभ तरहक खेतिहर सेहो छथिए। जहिना केश कटनिहार नौआ, कपड़ा धोनिहार धोबि, हँसुआ-खुरपी-चौकैठ-केबाड़ी बनौनिहार बढ़ई (बरही), तहिना बाँसक वस्तु बनौनिहार डोमो अछिए। तहिना माइटिक वस्तु बनौनिहार कुम्हार सेहो छथिए। तइ संग ईहो अछि जे जहिना पढ़ल-लिखलक संख्या सभ जाइतिक बीच अछि तहिना सभ जातिमे लक्ष्मीपात्रो छथिए। ओना, किसानक गाम रहने किसानीक किछु कारोबार खास-खास जाइतिक बीच सेहो अछिए। मुदा से कारोबार किसानक बीच बन्हाएल नहि अछि। जेना गाए-महींस पोसैबला किछु खास जाति मानल जाइ छैथ, मुदा तँए दोसर-तेसर जाति नहि पोसै छैथ सेहो बात नहियेँ अछि। सेहो पोसिते छैथ तहिना माछ पोसैक कारोबार किछु खास जाइतिक बीच अछि तँ दोसरो-तेसरो अपन पोखैर, डबरा, चभच्चा, बीरई, कोंचाढ़िमे सेहो माछ पोसिते छैथ। तहिना खेतियोक अछि, सभ जाइतिक लोक कृषिसँ जुड़ल छैथ जइसँ खेतीक काज सेहो सभ करिते छैथ। ओना, तहूमे उपजाक आधारपर कोइर-कुजराकेँ सेहो खेतिहर कहले जाइए।

सभसँ पैघ गुण गाममे ई अछि जे, एक तँ बहुसंख्य जाइतिक गाम छी, तहूमे दर्जनो एहेन जाति छैथ जे संख्याक हिसाबसँ एकरंगाह छैथ, जइसँ झगड़ा-झंझट कम होइए, पनचैतीसँ बेसी विवादक निपटान होइए। कहब जे तखन विवादे किए होइए? से तँ ताबे तक होइत रहत जाबे तक कोला-कोली खेत (सम्पैत)मे आड़ि-मेड़ बनल रहत। कखनो बर्खामे धोखैड़ कऽ आड़ि-मेड़ टुटत तँ कखनो बाढ़िमे भँसिया कऽ टुटत। तहिना

आनो-आन समस्या सभ अछिए। मुदा जहिना गाम प्रतिष्ठित बुझल जाइए तहिना वैचारिक प्रतिष्ठा सेहो गाममे अछिए। जइसँ अनेको राजनीतिक दलो आ अनेको धार्मिक सम्प्रदाय सेहो अछिए। कमलपुरमे एते अन्तर केतेको आन गामसँ अछिए। माने भेल जे कोनो गाममे एक्के राजनीतिक दलो रहल आ एक्के धार्मिको सम्प्रदाय रहल, से कमलपुरमे नहि अछि। जहिना सभ तरहक राजनीतिक दल अछि तहिना सभ तरहक धार्मिक सम्प्रदाय सेहो अछि। ई नहि कहि रहल छी जे जहिना सम्प्रदाय सभ अद्वैत, द्वैत, द्वैताद्वैत, विशिष्ठाद्वैत करै छैथ तहिना राजनीतिक दल सेहो महिला, दलित आ महादलित कइये रहला अछि जइसँ छीपापनार हर वा करीन जकाँ समाजक कखन पालो टुटत आकि छीप टुटत तेकर ठेकान नहि रहैए, तहिना अछि। सम्प्रदायोबला सभ जीवनक (मनुक्खक जीवनक) मुक्तियेक मार्ग देखबै छैथ आ राजनीति-दल बला सेहो सएह कहै छैथ। मुदा ने सम्प्रदायबला कहै छैथ जे जखन परिवारक सभ परिवारक कल्याणे चाहै छी तखन परिवारमे भैयारीक बीच झगड़ा किए होइए, तहिना राजनीतिबला सेहो कहै छैथ जे जीवनक जे मूल तत्त्व अछि ओइपर सामूहिक ढंगसँ अधिकार हुअए जइसँ जीवनक गाड़ी बिसवासक ढंगसँ चलैत रहत।

कहलौं जे छीपापनार जकाँ समाज भऽ गेल अछि। ओ ई जे गाम एक्के छी मुदा कबीर मतक जे समर्थक छैथ हुनकर विचारोधारा आ बेवहारो जे छैन तेकर विपरीत रमाउतबलाक छैन। तहिना जे धनीक छैथ ओ अपन धनक लालसामे, माने बेकतीगत सम्पैतिक लालसामे जी-जान लगा दौड़ रहला अछि, तँ बहुसंख्य लोक ओहन नहि छैथ जे अपन जीवनक लेल समुचित अहारक संग समुचित साधन नहि चाहै छैथ। जइसँ सभ देखिये रहल छी जे समाजक बीच सामाजिकताक की रूप अछि। खाएर जे अछि, तइसँ कमलपुरबलाकेँ कोन मतलब छैन।

1949 इस्वीमे रामकिसुनक जन्म ओहन परिवारमे भेल जइ परिवारक आर्थिक साधन अन्न आ पानक खेती, खास जाइतिक आधार,

सेहो छल। जहिना तरकारी खेती केनिहार तरकारीक खेतकेँ चिन्है छैथ तहिना पान उपजौनिहार सेहो पानक खेतकेँ चिन्हते छैथ। ओहने चिन्हनिहार हीरालाल छला। जइसँ परिवार चलै-जोकर ओहन खेत पूर्वजक देल हाथ लगलैन जइसँ परिवार चलै छेलैन। परिवार चलै-जोकर माने भेल ओइ काजमे परिवारजनक श्रमोक खपत आ आमदनियो ओहन जइसँ समयानुकूल जे परिवारक स्थिति अछि तइ अनुकूल चलब।

मुख्य रूपसँ हीरालालक जीवन पानक खेतीपर आश्रित छेलैन, ओना अतिरिक्तो दस कट्ठा खेत छेलैन जइमे अन्नक खेती सेहो करै छला। देशक शासन नव-नव स्वतंत्र भेले छल, अंगरेज बहादुरकेँ लोक भगा चुकल छला, तइसँ राजनीतिक चेतना समाजमे थोड़-थाड़ जगिये गेल छल। मुदा समाज जे सामंती रूप पकैड़ नेने छल, ओही अनुकूल चलि रहल छेलए। एक दिस घर-घराड़ी विहिन, वस्त्र विहिन, अन्न विहिन लोक त्राहि कृष्ण कऽ रहल छला तँ दोसर दिस रण्डीक नाच नहि चलै छल आकि अखनो नइ चलैए सेहो बात नहियेँ अछि, सेहो चलिते छल आ चलितो अछिए। यएह छी गामक समाज।

कमलपुर गाम राज दरभंगाक राजक शासनक अन्तर्गत नहि, ओइ परिवारसँ माने राज-परिवारसँ जुड़ल जमीन्दार परिवारक अन्तर्गत शासित छल। जइसँ एक मालिकक गाम छल। जमीनक निलामी साले-साल होइते छल। जे कि समाजक पुरान रोग छल जइसँ खण्डित भूमि माने कोला-कोली, समटा-समटा एकठाम होइत रहल आ ओकरा निलामपर चढ़ा गाम-गामक बिकरी होइत रहल जइसँ नव-नव मालिक बढ़ैत रहल। आजादीक समय, माने 1947 इस्वी, कमलपुरमे चारिटा मालिकक पदार्पण भऽ चुकल छल, जे गामक मालगुजारी असुलै छला आ खेती सेहो करै छला। चारू मालिक चारिटा कचहरी चारि जगहपर सेहो बनौलैन आ सबहक अपन-अपन खेत-खरिहाँन सेहो, पट्टी लगा-लगा अपन-अपन सभकेँ छेलैन। ऊच्च श्रेणीक जिनगीक सभ साधन, अपन-अपन बनौने छला।

मिथिलांचलक आन-आन गामसँ भिन्न कमलपुरबलाक अपन विधो-बेवहार छेलैन आ समाजक चालियो-ढालि छेलैन। तेकर मुख्य कारण ई छल जे आन-आन गाममे बहरबैया मालिक, माने आन-आन जिलो आ आन-आन राज्योसँ, आबि अपन मलिकियत कायम केने छला, से कमलपुरमे नहि भेल। जहिना राज-दरभंगासँ बँटा जमीन्दारक हाथमे गाम आएल आ गाम बँटा जे आन-आन मालिक सभक हाथमे गेल ओ सभ एक्के जिलो-जवार आ एक्के शासनोक छला। कमलपुरक चारू मालिक क्षेत्रीय रहला जइसँ बोली-चालीसँ लऽ कऽ खेती-बाड़ी, पाबैन-तिहार, बिआह-दानमे एकरूपता बनल रहल। जे आन-आन गाममे नहि भेल। बाहरक मालिक एने अपना संग अपन मातृभूमिक बोलियो-वाणी आ विधो-बेवहार अनबे केलैन जइसँ अनेको रंगक चलैन अखनो समाजमे अछिए।

कमलपुरक सौभाग्य रहल जे अंग्रेजीशासनक सीधा (डाइरेक्ट) शासन समाजपर नहि पड़ल। ओना, अंगरेज बहादुर ग्रामीण इलाकामे अपन पएर नहि पसारने छला सेहो बात नहियेँ अछि। सेहो अछिए। किए तँ कमलपुरक बगलेक गाम; मोतीपुरमे, नीलक कोठी बना नीलक खेती सइयो बीघा खेतमे भइये रहल छल। ई दीगर घटना भेल जे देश स्वतंत्र होइसँ बहुत पहिने, माने 1947 इस्वीसँ पूर्व जखन आजादीक आन्दोलनक शुरूआती दौड़ छल, तहिये कमलपुरबला नीलहा मालिककेँ मारि-पीटिकऽ भगा चुकल छला। पछाइत नीलक नव अविष्कार भेने नीलक खेतीमे सेहो धक्का लगबे कएल।

ओना, 1935 इस्वीमे लखनऊ अधिवेशन, माने देशक आजादीक आन्दोलनक अधिवेशनमे राजा-रजबार आ जमीन्दारक जमीन्दारीक खिलाफ सेहो प्रस्ताव पास भइये गेल, जइसँ राजो-रजबार आ जमीन्दारो मालिककेँ मालगुजारियो वाधित भेलैन आ शासनो ढील भेबे केलैन।

कमलपुरकेँ प्रतिष्ठित गाम बनैक कारण प्राकृतिक प्रभाव सेहो अछि। दर्जनो धार-धूरक बीच बसल मिथिलाक गाम सेहो ओइसँ अलग

थोड़े रहल। कोसी-कमला सन जनमारा धार सेहो अछिए। साए-साए गामक माटिकेँ धोइ-पोछि बालुसँ राजस्थान बनाइये देने अछि आ सालक साल बनैबतो अछिए। जे गाम कहियो जनकक फुलवारी जकाँ फल-फूलसँ लदल रहै छल वएह गाम अखन ओहन अछि जइमे अण्डीगाछक छाहैरमे बैस लोक जेठुआ रौद बितबै छैथ। खाएर जे अछि से आन गाममे अछि तइसँ कमलपुरबलाकेँ कोन मतलब छैन, मतलब छैन अपन बाड़ी-फुलवारीसँ। से कमलपुरक सौभाग्य रहल जे जहिना चारि कोस हटि पच्छिममे कमला धार नाच करैए तहिना चारि कोस पूबमे कोसी, तइसँ बँचल बीचमे कमलपुर अछि, जइमे मात्र एकटा सुपेन (सुपर्णा) धार अदौसँ बहैत आबि रहल अछि। ओकरा ने ढोढ़ साँप जकाँ फुफकार छै जे गामकेँ काटिकऽ नाश करत आ ने धामन जकाँ बीखमरू अछि जे सालमे धारक रूप धारण करबे नहि करैए। भदवारिमे ओहन धार बनि जाइए जे केहनो-केहनो नाविककेँ धारमे नाव पार करैमे थरथरी पैसिते अछि। तँए कि कहब जे सुपेन जनमारा धार अछि, से नहियेँ अछि। अखाढ़-सँ-आसिन धरि अपन चरिमसिया धारसँ बदैल अपन धाराकेँ समेट चारि मास पोखैर बनि जाइए, माने धारक प्रवाह रूकि जाइ छै, लोक खेत पटबैए आ बाँकी चारि मास गाए-महींसक चारागाह बनल रहैए। जइसँ जहिना गामक पूज्य धार छी तहिना धारोक पूज्य गाम कमलपुर छीहे। कहब जे की पूज्य छी? जेकरा अपन मुइल मुरदो जरबै-गाड़ैक जगह नहि अछि ओकर तँ पूज्य धार सुपर्णा छीहे किने। जेतए मन हुअए माने धारक पेटमे, सुखल समयमे, मुरदाकेँ जरा-गाड़ि लिअ, नहि जँ पेटमे पानि रहल तँ महारपर जाइर-गाइर लिअ, नहि जँ भदवारि रहल तँ धारक धारामे मुरदाकेँ फेंक दिऐ..। जे काज सुपैन (सुपर्णा) एक्के गाम समाज नहि, अनेको गाम-समाजक, आ से आइये नहि बल्कि अदौसँ माने जहियासँ धार बनल, करैत आबि रहल अछि।

सघन गामक सघन बस्ती रहने, जिनगीक मुख्य आवश्यकता भोजनक संग पानि सेहो छीहे। ओना, अन्नसँ अधिक महत्व पानिक अछि

किए तँ अन्न बिना मासो दिन तक जीवित रहि सकै छी मुदा पानि बिना तीस दिन नहि पुरा-पाबि सकै छी। ओना, पानियोँसँ आवश्यक अछि हवा (वायु)। मुदा हवा तँ धरतीसँ अकास धरि भरल अछिए, तँए एकर खगता लोकर्कें नहि बुझि पड़ै छैन। एक्कैस टोलमे, टोलक माने भेल एक बस्ती, गामक जमीनक जे बनावट सभ अछि, ओ सभ गामक कोन बात जे एको गाममे ऊपर-निच्चाँक खाड़ीसँ भिन्न-भिन्न अछिए। आन समयमे माने सुखार समयमे केतौ रहब असान होइए मुदा बरसातमे ते से सम्भव नहि अछि।

एक्केस टोलमे बँटल बस्तीमे किछु टोल एहनो अछि जइमे मात्र एक जाइतिक लोक बसल छैथ आ किछु टोल एहनो तँ अछिए जइमे अनेको जाइतिक लोकक बास छैन जे एक्के इनारक पानियोँ पीबै छैथ आ एक्के पोखैरमे नहेबो करै छैथ। तँए कहब जे गाममे एहेन पोखैर-इनार नहि अछि जइमे पानि पीबसँ लऽ कऽ नहेबा तकक रोक नहि छल। ओना, रोकक, नहाइ-पीबसँ, असर (प्रभाव) समाजपर तेहेन नहियेँ पड़ै छल जेहेन मनक इच्छा छल, किए तँ जइ पोखैर-इनारमे रोक-राक छल ओ एकजतियाक छल, तँए धर्मक प्रभाव नहि छल, अर्थक प्रभाव छल। एक जाइतिक भीतरो जे अर्थसँ कमजोर छला, माने गरीब छला, हुनकर आगि-पानि नहि ढाठल जाइ छेलैन सेहो बात नहियेँ छल, सेहो छेलैहे। तैसंग कमलपुरमे एकटा उपलब्धि आरो भेल, ओ भेल जलकरकेँ सरकारीकरण भेने। देशक आजादीक शुरूक उपलब्धि जलकरकेँ सरकारीकरण भेने सेहो भेल। माने खास जलकर (पोखैर) सँ आम रूपमे बदलल।

पान उपजबैबला ओहन किसान हीरालाल छला जे सोलह कोरबासक बीस आँतर पान अपना हाथसँ माने मेहनतसँ उपजबै छला। असकर भैयारी, तहूमे मध्यम श्रेणीक परिवारक एहेन दुर-स्थिति सभ दिन रहल जे भैयारीमे भिन्न-भिनौज होइत रहल। हीरालालक परिवार धीरे-धीरे नमहर होइत गेलैन आ कमेनिहार असकर बँचला। ओना, जाइतिक (पान उपजौनिहार जाइतिक) हिसाबसँ भिन्न हीरालालक पत्नी- सुगिया छेली।

माने ई जे आन-आन परिवारक स्त्रीगण बरेबक (पानक खेती) भाँज माने पान उपजबैक ढंग, नहि बुझै छेली जखन कि सुगियाकेँ सभ लूरि छेलैन, एते तक कि लोइटसँ पानक पटौनी तक करै छेली। लोइटक माने भेल पानिक नमहर घैल, जेकर मुँहक बुनाबट घैलसँ भिन्न होइए। ओकरा पानि रखैबला माटो नहि कहि सकै छिऐ। माटक मुँह फैलगर होइए आ लोइटक छोट। लोइटक मुँहकेँ छोट बनबैक कारण अछि जे कन्हापर उठा बामाहाथक तरहत्थी लोइटक मुँहमे घोंसिया तरहत्थीपर होइत धारा रूपमे पानि निच्चाँ मुहेँ खसाएब आ दहिना हाथक तरहत्थीसँ रोकि सजल आँगुरक बीच होइत फुहारा बना पानक मुहसँ–माने पानक गाछक मुहसँ–जड़ि धरि सिंचाई करब। ओना, सिचाइयोक अपन-अपन सुविधा-असुविधा सेहो अछिए जइसँ पानक खेतीकेँ भारी खेती कहले जाइत अछि। पानक खेती (बरेब) जेतेमे करब ओकरा चारू भागसँ अन्हरगर टाट लगा ऊपरसँ सेहो अन्हरगर छाड़सँ छाड़ल जाइए।

कमलपुरमे 1947 इस्वीमे मात्र लोअर प्राइमरी स्कूल टा छल। जइमे एकटा शिक्षक रहै छला आ गामक बच्चा-सभकेँ पढ़बै छेलखिन। दुनू पहर माने भिनसुरको पहर आ दुपहरको पहर-के स्कूल चलै छल। पाँच बर्खक पछाइत रामकिसुनक पिता- हीरालाल, रामकिसुनक नाओं स्कूलमे लिखा देलैन। अखुनका जकाँ हजार-लाखक बाजार विद्यालय नहि बनल छल। विद्यालयमे प्रवेश शुल्कक रूपमे किछु निर्धारित रकम नहि छल, अपना खुशीसँ अभिभावक एक रुपैआ शिक्षककेँ प्रवेश रूपमे दऽ दइ छला।

गामक मध्यमे स्कूल छल तँए असगरो बच्चा-सभ स्कूल आबि जाइ छल। चारि बर्खक पछाइत रामकिसुन गामक स्कूलसँ पास कए मिडिल स्कूल सिमरामे नाओं लिखौलक। चौंथा-सँ-सातमा धरि मिडिल स्कूलमे पढ़लक। चारि बर्खक पछाइत रामकिसुन मिडिल पास करि हाइ स्कूल तमुरियामे नाओं लिखौलक। टोलक माने रामकिसुनक जाइतिक टोलक, चारिम विद्यार्थी रामकिसुन छल जे हाइ स्कूलमे नाओं लिखौलक।

बाढ़ि, रौदी, शीतलहरी आइये नहि सभ दिनसँ मिथिलांचलमे होइत आबि रहल अछि। चारू कचहरीसँ समाजक लोक सेहो अपन उपजावारी आ बेवसायसँ सेहो जुड़िये गेल छला। किछु बटेदारक रूपमे तँ किछु अपन-रोजगारक रूपमे, हीरालाल सेहो एकटा कचहरी माने मालिकक कचहरी, सँ जुड़ि गेल छला, जइसँ सालो भरि पानक जे खर्च मालिककेँ होइ छेलैन से दैत रहथिन, बदलामे पाँच कट्ठा खेत पानक तरे देने छेलैन। मालिकक लाटमे माने कचहरीक लाटमे समाजक किछु गोरेक आबा-जाही मालिक लग भइये गेल छेलैन जे काज-उदममे अपन काज बुझि सहयोग करैत रहैन।

1962 इस्वीमे मिथिलांचलमे भारी शीतलहरी भेल। ओहन शीतलहरी भेल जे जहिना किसानी जीवन मरल तहिना इलाकासँ गीध, तुलसी आ गहुमन साँप सेहो उपैट गेल। साए परिवारक बस्ती कमलपुर, माने पानक खेती केनिहार साए परिवार छल, जिनका सभक पान गलि गेलैन। मात्र हीरालालक बीसो आँतर बरेबक पान बँचल रहलैन। अखुनका जकाँ ने पानक खर्च समाजमे छल आ ने बाहरसँ माने कलकतिया पानक आगमन छल। ओना, खेनिहारो, पान खेनिहारोक संख्या समाजमे कम्मे छल। काज-उदम, जेना श्राद्ध-विवाह, पूजा इत्यादिमे सामूहिक ढंगसँ पानक वितरण होइ छल, जइसँ किछु विशेष खर्च होइ छल।

पानक खेती मुइने हीरालालक चलती एलैन। चलती ई एलैन जे जे खर्च पानक अछि, ओ तँ पाने ने पुरौत। आन साल माने बीतल साल, जे पान एक रुपैए, डेढ़ रुपैए ढोली बिकाइ छल, अभाव भेने साठि-पैंसैठ रूपये ढोलीक दाम भऽ गेल। नीक पाइ हीरालालकेँ पानसँ भेलैन। कचहरीक लाट, माने एकटा मालिकक लाट, हीरालालकेँ रहबे करैन, पाइक उपयोग खेत कीनैमे केलैन। करीब अढ़ाइ बीघा खेत ओइ पाइसँ कीनि लेला।

1966 इस्वीमे रामकिसुन तमुरिया हाइ स्कूलसँ सेकेण्ड डिवीजनमे मैट्रिक पास केलक। ओना, जनता कौलेज झंझारपुरमे खुजि गेने

कमलपुरक विद्यार्थी पएरो आबि-जाए कौलेजमे पढ़िते छला आ पढ़बो केलैन। ने रामकिसुनकेँ अपन आगू पढ़ैक विचार, आ ने गार्जनक विचार, तँए रामकिसुन आगू नहि बढ़ि सकल। ओना, तइसँ पहिने जे टोलक तीन गोरे, जाइतिक टोलक, आगू बढ़ल छला ओइमे सँ दू गोरे मैट्रिकेमे लसैक गेला आ एक गोरे मैट्रिक पास केलाक पछाइत घोघरडीहा आइ.टी.आइ कौलेजमे कारपेन्टरक ट्रेनिंग लेलैन। ओना, मैट्रिकमे लसकलहामे सँ सेहो एक गोरे कारपेन्ट्रीक ट्रेनिंग लेलैन। तइ समय नोकरीमुखी समाज नहि बनल छल तँए अपन जीविका लोक अपन खेते-पथार वा कोनो छोट-मोट रोजगारेकेँ बनौने रहला। तहूमे हीरालालकेँ 1962 इस्वीक देखल आमदनी छेलैन्हे, तँए खेती–माने बरेब–केँ अपन जीविकाक आधारक प्रति असीम बिसवास मनमे बनले छेलैन। तैसंग अढ़ाइ बीघा जमीन बढ़ने जीवनक आरो आशा जगिये चुकल छेलैन। ओना, पानक दरमे, माने मूल्यमे, सेहो पछाइत बढ़ोतरी भेल। बढ़ोतरी होइक कारण भेल जे परोपट्टामे पानक खेतीए नष्ट भऽ गेल। पानक खेती तँ एकमौसमी छी नहि जे चारिये मासमे अपन रंग पकैड़ लेत। दू सालक पछाइत पानक खेती अपन रूप पकड़ैए, जे अनेको साल धरि जीवित रहैए।

1967 इस्वीमे रामकिसुन मंगलदेवक संगी बनि साम्यवादी दलक सदस्यताक फार्म भरि सदस्य बनल। तइसँ पहिनौं कमलपुरमे साम्यवादी दल बनल छल, मुदा ओ अगिलग्गीमे फँसि धूमिल भऽ चुकल छल। पार्टीक छोट टुकड़ीक रूपमे समाजमे साम्यवादी पार्टी उठिकऽ ठाढ़ भेल छल, जे अगिलग्गी केसमे फँसने तहस-नहस भऽ गेल। पाँच गोरेकेँ जिला न्यायालयसँ दस-दस बर्खक सजाए भऽ गेलैन। घटना की भेल से अखन नहि।

साम्यवादी पार्टीक सदस्य बनला पछाइत रामकिसुन पार्टीक कार्यक्रममे इमानदारीसँ भाग लिअ लगला। संगे अपन किसानी जीवनमे समय बीतबए लगला। 1967 इस्वीमे भोगेन्द्रजी पार्टीक सांसद भेला। भोगेन्द्रजीक भाषणसँ रामकिसुन बहुत अधिक प्रभावित भेला। गामक

बीच केना संगठनक संग पार्टीक विचारधारा समाजमे दौड़ैत चलए, नीक जकाँ तँ नहि, मुदा रामकिसुनक मनमे पनैपिये गेल छेलैन। नवयुवकक संगठन बनबै पाछू रामकिसुन भरपूर समय दिअ लगला।

संजोग बनल, उन्नैस साए उनहत्तैर (1969) इस्वीमे गाममे माने कमलपुरमे, दुर्गापूजा करैक विचार समाजमे जगल। गामक बीच रामकिसुन पार्टीक एकटा जवाबदेह कार्यकर्ताक रूपमे परिचित भऽ चुकल छल। गामक मध्य विद्यालयक प्रांगणमे समाजक बैसार भेल। बैसारमे सर्वसम्मति विचार भेल जे विद्यालयेक प्रांगणमे दुर्गापूजा हुअए। ऐबेर तँ घर (मन्दिर) नहि अछि तँए विद्यालयेमे मूर्तिक स्थापना हुअए। इलाकाक केतेको गाममे दुर्गापूजा विद्यालयेमे होइए। बैसारमे प्राय: सभ टोलक लोक उपस्थित छला। आसीन मास चढ़ि चुकल छेलइ। पूजाक समय लग आबि चुकल छल। मधेपुर प्रखण्ड, तइ समय लखनौर प्रखण्ड नहि बनल छल, नमहर-नमहर अट्ठाइसटा पंचायत प्रखण्डमे छल, जे पूबमे कोसी धारसँ लऽ कऽ पच्छिममे कमला धारक पच्छिम धरि पसरल छल। मधेपुर प्रखण्डक प्रमुख कमलपुरेक छला।

प्रखण्ड प्रमुखक घर कमलपुरक उत्तरवारि टोलमे छेलैन। हुनकर माने प्रमुखक अपन विचार छेलैन जे पूजा बड़की पोखरिक उत्तरवरिया महारमे हुअए, जे गामसँ एकभागमे पड़बो करत आ अपना घर लग हेबो करत। बैसारक प्राते भने प्रमुख उत्तरवरिया महारमे पूजाक माटि लऽ लेलैन। गाममे भारी प्रतिक्रिया भेल। बेवस्थाक दृष्टिसँ समाज सामंती बेवस्थामे बान्हल छल। गामक किछु नवयुवक, जइमे रामकिसुन सेहो छल। गामक मध्य विद्यालयक प्रांगणमे पूजा हुअए तइले बीड़ा-पान उठौलैन। वैचारिक रूपमे समाज ओझराइये गेल छल जे ई नीक कि उ नीक। माने विद्यालय-प्रांगणमे पूजा हुअए से नीक आकि बड़की पोखरिक उत्तरवरिया महारमे हुअए से नीक..? नवयुवकक बीचमे हीरालाल अपन नाओं घोषित करैत बजला-

“समाजक जँ सभ कियो ओमहर चलि जेता, माने प्रमुखजीक माटि

लेल स्थानमे, तैयो हीरालाल माटि लइत कहैए जे एक कट्ठा महार (पोखरिक दच्छिनवरिया महार) अछि माने विद्यालयक बगलमे, तइमे तीनटा आमोक गाछ अछि, अही गाछमे सँ बीचला गाछमे चारिअनाक कागजबला फोटो आनि काँटीसँ ठोकि असगरे पूजा ताधैर करैत रहब, जाधैर जीबैत रहब।"

शुरूहे सालमे माने 1969 इस्वीमे एक्के गाममे दूठाम दुर्गापूजा शुरू भेल। जहिना कहल जाइए जे लूटमे चरखा नफ्फा, तहिना भेबो कएल। भेल ई जे इलाकाक किछु स्थान (दुर्गा मन्दिर) छोड़ि बाँकी सभ स्थानमे बलि प्रदान होइए से कमलपुरमे नहि भेल। ओना, रंग-रंगक धार्मिक-सम्प्रदायिक समर्थक गाममे छथिये, जे बलि-प्रदानकेँ विरोध करबो केलैन आ कइयो रहबे कएल छैथ। अही आधारपर विद्यालयक मध्य जे दुर्गा-पूजा शुरू भेल, तइमे बलि-प्रदानक विरोध भेल जइसँ सर्वसम्मति विचार बलि-प्रदानक विरोधमे भेल। जखने एक स्थानमे बलि-प्रदानक विरोध भेल तखने बेकतीगत विचार फँसि गेल। जइसँ बाध्य भऽ प्रमुख सेहो बलि-प्रदानक विरोध केलैन। यएह छी जनशक्ति। गामक बीच मात्र किछु गनल लोक छला जे खुलि कऽ, माने खुल्लम-खुल्ला, विद्यालयक बैसारक निर्णयपर कायम रहला, बाँकी समाजमे उनट-फेड़ हुअ लगल। जइसँ गनल-गुथल एकछाहा समर्थन देनिहार माने पूजा स्थानक, कम रहला बेसी दू-दिसिया भऽ गेला। ओना, वैचारिक रूपमे किछु तना-तनी समाजमे भइये गेल।

पूजाक दौड़ शुरू भेल, तहूमे पहिल-पहिल बेर शुरू भेल, गामक अधिकांश लोक समाजक बीच, माने दुइयो चारि आदमी आ टोलक-टोलो, एकठाम बैस, सामाजिक काज बुझि पूजाक विषयमे राय-विचार करए लगला। तहूमे नमहर पूजा माने दस दिनक दुर्गापूजा, भेने खर्चो बेसी हएत तँए जनसहयोगक जरूरी अछिए। चन्दा उगाहीसँ लऽ कऽ मूर्तिक संग घरोकेँ पूजायोग्य बनाएब जरूरी भइये गेल। ओना, एकटा बात जरूर भेल जे पूजाक गप-सप्प होइत स्थानक चर्च सेहो हुअ लगल। की पक्ष भेल आ

की विपक्ष भेल, माने विचारक कि समर्थन भेल आ की विरोध भेल, चर्चाक मुद्दा ई नहि बनि ई बनि गेल जे दुर्गापूजा सन पूजा जे दिन-राति चलैबला होइए, तइमे भाग लइले धियो-पुता आ पुरुखक संग स्त्रीगण सेहो जेबे करती, तँए जेते सुरक्षित मध्य विद्यालयक पूजा हएत ओ बड़की पोखरिक नहि हएत। तैसंग समाजमे पहिने हकार पड़ि गेल छल जे पूजाक परसादी लइले जरूर अबै जाउ। दिन-राति पूजाक पछाइत परसादीक वितरण होइते अछि। अखन तक समाजमे एहेन धारणा रहबे कएल अछि जे दुश्मनो कोनो यज्ञक हकार दइ छैथ तँ ओइमे जरूर जेबाक चाही। लोककेँ झगड़ा वा मनमुटाव लोकसँ होइए तइमे देवी-देवता किए बाड़ल जाएत।

मूर्ति बनैक पछातियेसँ लोकक आवाजाही दुर्गा स्थानमे शुरू भेल। ओना, बड़की पोखरिक उत्तरवरिया महारक पूजा स्थलपर लोक नियारि (विचारि) कऽ जाइ छला मुदा विद्यालयक स्थानपर बिनु नियारनहु टहैल जाइ छला। आरो जे भेल से भेल मुदा समूहक रूपमे लोक एकठाम हुअ लगला। विद्यालयक दुर्गास्थानमे कार्यकर्ताक अभाव भइये गेल। किए तँ चन्दा उगाहीसँ स्थानक बेवस्था करै धरिक काज छल। विचार रूपमे स्थानक जेते समर्थक विद्यालय प्रांगणक दुर्गापूजाकेँ भेटल तेते बड़की पोखरिक उत्तरवरिया महारक पूजा-स्थलकेँ नहियेँ भेटल। तइमे एकटा दोसरो कारण भेल। ओ भेल जे किछु खास परिवारक दब-दबा स्थलकेँ घेरि लेलक। जे विद्यालयक स्थानमे नहि भेल। एते शुरूहे दिन भऽ गेल जे देवी-देवता किनको बाँटल छैन, ओ तँ सभक छैथ तँए साँझूपहर-के साँझो दइले आ भिनसरु पहर-के फूलो, पूजाक फूल, पहुँचबैले जाएत। स्थानकेँ सभ दिन नीपब-बहारब सेहो अछिए। एक तँ ओहुना बच्चा सबहक सेहन्तामे रहैए जे नीक-सँ-नीक काज सभ दिन करी, माने भेल जे नित्य नूतन काजो आ विचारो, तइमे नव-नव स्थान भेटने काजो आ विचारोक बाढ़ि एबे कएल।

मनमे दबल किछु लोकक विचार कर्म रूपमे जगलैन जइमे चाह-

पान, झिल्ली-कचड़ी इत्यादि-इत्यादिक कारोबार सभ उभरल। असगरे दुखनी माए एहेन छेली जे भैंटक लाबाक दोकान करैक विचार केली। तहिना असगरे-असगरे भूलिया आ चुल्हिया छेली जे एक गोरे रमदानाक लाबाक दोकान करैक विचार केलैन तँ दोसर गोरेक विचार भेलैन जे पूजाक दौड़मे केतेको गोरे उपास सेहो करै छैथ तिनका फलहार-ले, जिनका छैन ओ ने पाकल केरा आ गाइक दूधसँ करै छैथ मुदा जिनका नहि छैन ओ तँ अल्हुएकेँ ने फल बुझै जइसँ उसनल अल्हुआक फलहार सेहो समाजमे चलिते अछि। तँए उसनल अल्हुआ-सुथनीक कारोबार चलि सकैए। तँए हम यएह कारोबार करब।

एक्कैस टोलक गाममे मंगलदेव आ रामकिसुनकेँ ओहन दसो गोरे समय दइले तैयार नहि भेलैन जे पूजाक काजमे हीय खोलि काज करितैथ। किछु लोक दुर-छिया करिते छला। तँए कहब जे सभ सुतिये रहला सेहो बात नहियेँ रहल। जखन पाँच-सात गोरेक समूह कोनो टोल चन्दा ले जाइ छला तँ टोलोक किछु गोरे संग मिलि चन्दाक काज करबे करै छला। ओना, एकटा गुण आरो भेल, पूजाक प्रेमी लोकक, पुरुष-नारी दुनू, आगमन स्थानमे बेसी जरूर भेल। स्थानक, माने पूजा स्थलक, जेतेक महत्व अछि तइसँ कि धरमशालाक महत्व बेसी थोड़े अछि। तँए स्थानक प्रांगणमे लोक बैसते छला। जेतए धनिक अछि तेतए हाइ-फाइमे धरमशाला बनैए आ जेतए नहि अछि तेतए गाछ-बिरीछक छाँहक आशा होइए।

अखन धरिक, माने उन्नैस साए उनहत्तैर इस्वी धरिक, जे कमलपुरक समाज छल ओइमे ने राजनीतिक चेतना जगल छल आ ने बेवस्थाकेँ बेवस्थित ढंगसँ निमाहैक शक्ति छल। माने भेल जे अखन तकक विचारधारानुसार झूठ बाजब पाप मानल गेल अछि मुदा समाजमे केते लोक छैथ जे झूठ नहि बजै छैथ? किछुकेँ लाचारी छैन, किछुकेँ मजबूरीयो छैन्हे। खाएर जे छैन मुदा झूठक माने अधला विचार नहि, चलाकीसँ बाजब बुझल जाइए, तँए झूठक रूपेँ बदैल गेल अछि। ओना,

समाजमे झूठ अपन साम्राज्य तेना बढ़ा नेने अछि जे धर्मे जकाँ जिनगीक नस-नसमे माने जिनगीक हरक्षेत्रमे कब्जा कइये नेने अछि। तँए झूठ आकि सत्यकेँ समाजक कोन बात जे बेकतीक बीचो नहि बुझि पेब सकै छी। खाएर जे अछि से अछि तइसँ कमलपुरबलाकेँ कोन मतलब छैन, हुनका मतलब छैन अपन गाम आ अपन समाजसँ ।

ओना, झूठ-सचकेँ बेराएब कठिने नहि महाकठिन अछिए, किए तँ आजुक सच काल्हि झूठ भऽ जाएत आ कौल्हुका सच आइ झूठ भऽ गेल अछि। से खाली लोकेक मुँहक अछि से बात नहि अछि। दुनियाँक आनो-आन क्षेत्रमे, जेना धार-धूर, खेत-पथार आ समुद्रो-पहाड़क अछिए।

गाममे, कमलपुर गाममे, दुर्गापूजाक कलशस्थापन होइते जेना वातावरणमे नरमी-गरमी दुनू आएल। आएबो सोभाविक अछिए, किए तँ कलशस्थापन-सँ-पंचमी धरि पूजामे कोनो वृहत्ता नहि अबैए जइसँ नरमी आ नव काज भेने गरमी एबे कएल। मुदा छठम दिनसँ, बेलनौती दिनसँ, पूजाक प्रक्रिया बढ़ि जाइए। पूजाक प्रक्रिया बढ़ने क्रियाक संचारक नव उत्साहक आगमन सेहो होइए।

पंचमी दिन सौंसे गाम हल्ला भेल जे बेलनौती करए बड़की पोखरिक उत्तरवरिया महारक दुर्गास्थानमे हाथी औत। विद्यालय स्थानक जे विचारक लोक रहैथ, माने कार्यकर्त्ता सभ, हुनका सबहक विचारमे उठलैन जे पूजा मनुक्ख करैए आकि हाथी-घोड़ा करैए? जेकरा मन होइ छै ओ अपन हाथक लगौल बम्बै आमक भोज करैए आ जेकरा मन फुरै छै ओ मांस-माछक भोज सेहो करिते अछि। तइले केकरो बान्ह-छेक थोड़े छइ। भगवती, माने दुर्गा-भगवती, अपन पूजाक निर्णय अपने कइये नेने छैथ जे हम दुनूठाम रहब, जे सन्त-महात्मा मधुरक भोज करता हुनको संग ओहिना रहबैन जेना छागर चढ़ौनिहारक संग रहबैन। मरजी तँ अपन-अपन अछि जे जेहेन अरजी।

दोसर साँझ बीत चुकल छल, माने पंचमी रातिक, मंगलदेव आ रामकिसुन दुनू गोरे एकठाम बैस विचारए लगला जे हाथी केना आबि रहल

अछि। भाड़ाक छी आकि सहयोगक? भाड़ापर सभ किछु भेटते अछि। मुदा भाँजपर चढ़लैन जे एकटा मुखियाक (पंचायतिक मुखिया) हाथी छिऐन। मुखियाक नाओं सुनिते मंगलदेवक मनमे जेना झन-दे उठलैन। झन-दे उठैक कारण भेलैन जे अखन तक दुनू गोरे–मंगलदेवो आ रामकिसुनो–बुझै छला जे पूजा कमलपुरक समाजक बीच भऽ रहल अछि जे समाजक भेल। मुदा तइमे आन समाजक भागीदारी कोन रूपमे भऽ रहल अछि? मंगलदेव बजला-

"रामकिसुन, गामक प्रश्न छी, तहूमे गाम तेना वैचारिक दौड़मे अखन पड़ि गेल अछि जे बाहरी बात बुझब कठिन अछिए। तँए हाथीक प्रश्नपर चुप्पे रहब नीक हएत।"

एक तँ रामकिसुन नव उमेरक, तैपर पीठपोहू पिता आ टोलोक किछु लोक छेलैन्हे तँए मंगलदेवसँ बेसी उत्साहित छला, बजला-

"रणभूमिमे चाहे पिते किए ने होथि मुदा सोझा-सोझी जँ ठाढ़ हेता तँ हुनकोसँ सामना हेबेक चाही।"

निसचित निर्णयपर दुनू गोरे एबो ने कएल छला कि राधेश्याम आबि बाजल-

"काल्हि वृद्धावस्था-पेंशनक कैम्प गाममे लागत।"

रामकिसुन बजला-

"केतए कैम्प लागत?"

राधेश्याम बाजल-

"बड़की पोखरिक महारक दुर्गास्थानमे लागत।"

रामकिसुन बजला-

"के सभ औता?"

राधेश्याम-

"बी.डी.ओ. साहैब ब्लौकक पूरा स्टापक संग औता जइसँ हाथक-हाथ पेंशनक मंजूरी हएत।"

रामकिसुन-

"अपना सभकेँ वृद्धापेंशनसँ कोन मतलब अछि। चालिस बर्खक पछाइत ने नम्बर औत। अखन जे बुढ़ा-बुढ़ी सभ छैथ ओ ने कहता जे साठि बर्खक उमेरक फल केते भेटत। की चाहो-पान चलि सकैए आकि नहि।"

बेलनौती दिन, माने षष्ठी दिन, भिनसरेसँ गाममे चहल-पहल शुरू भेल। एक दिस बेलनौतीक चहल-पहल तँ दोसर दिस वृद्धापेंशनक कैम्पक चहल-पहल। विचित्र स्थिति समाजक लोकक बीच भइये गेल। एक दिस संविधानक अधिकारक प्रश्न तँ दोसर दिस भगवतीक डिम्हाक बेलनौती। ओना, दुनू स्थानक पूजा समितिक दृष्टिकोण अलग-अलग छल। जहिना बड़की पोखरिक उत्तरवरिया महारक दुर्गापूजा समितिक दृष्टिमे छल जे अधिक-सँ-अधिक अपन शक्तिक प्रदर्शन हुअए जइसँ समाजमे दब-दबा बनल रहत तहिना विद्यालयक दुर्गापूजा समितिक दृष्टिमे छल जे समाजक अधिक-सँ-अधिक लोककेँ पूजाक रूपमे समाजकेँ शक्तिसँ जोड़ल जाए। तँए दुनूक बीच, माने दुनू पूजा समितिक बीच, कार्यशैली (काज करैक ढंग) अलग-अलग भइये गेल छल।

बड़की पोखरिक महारक पूजाक सहयोग प्रशासन तंत्रसँ लऽ कऽ राजनीति तंत्र होइत इलाकाक जे सुखी-सम्पन्न लोक छैथ, सभक नीक जकाँ भेल। शुरूहेसँ, माने जहियेसँ मूर्तिक माटि लेल गेल तहियेसँ, जातीय रंग सेहो चढ़बैक परियास कएल गेल। मुदा ओ गजपट भऽ गेल। गजपट होइक अनेको कारण भेल, मुदा तइमे दूटा कारण प्रमुख रूपमे फँसल। पहिल ई जे बड़की पोखरिक पूजा समाजक पैघ जाइतिक छिऐन आ विद्यालय स्थानक छोट जाइतिक छिऐन। भेल तँ से नहि अछि। भेल अछि जे गामक दू टोलमे पैघ जाइतिक बास छैन। जइमे एक टोलक सहयोग विद्यालय स्थानक पूजाकेँ छल आ दोसर टोलक लोकक दोसर स्थानक।

अखन तक जे पैघ जाइतिक रूप रेखा समाजक बीच रहल ओ अपनेमे विभाजन रेखा खींचने छल। विभाजन रेखा ई खींचने छल जे

किछु परिवार अपनाकेँ जाइतिक बीच श्रेष्ठ कुल-मूलक बुझै छैथ आ बाँकीकेँ निम्न बुझै छैथ। जइसँ ने एकठाम बैस गामक सभ खाइ-पीबै छैथ आ ने बेने-तिहार चलै छैन। जइसँ निम्न कुल-मूलक जे परिवार छैथ हुनका बीच जे पढ़ल-लिखल लोक छैथ, तइ समयमे संस्कृत पढ़ल-लिखल पण्डित सभ छला, तिनका सभकेँ अनसोहान्त सेहो लगैन मुदा समाजक शक्तिक बीच किछु चलि नहि पबैन। तहिना जे राजनीतिसँ जुड़ल परिवारक लोक, माने निम्न श्रेणीक परिवारक, ऐठाम राजनीतिसँ जुड़बक माने भेल स्वतंत्राक लड़ाइक लड़ाकू शक्तिसँ अछि, छला ओ खाइ-पीबैक दौड़मे गप-सप्पक केतेको उझुक्का उठा चुकल छला। माने ई जे निम्न श्रेणीक जे छैथ तइमे सँ किछु परिवारक संग सोल्होअना खाएन-पीन नहि चलै छल, आ किछु परिवारक संग जे चलै छल तइमे अन्तर छेलैन। ओना समाजक बीच, माने जाइतिक समाजक बीच, जे अन्तर शुरूमे छल तइमे वैचारिक उझुक्का उठने, उझुक्काक माने भेल वैचारिक संघर्ष, किछु पटबो कएल आ किछु ऊँच-नीच खेत जहिना दमकल कि-बोरिंगक पानिसँ पटबो करैए आ किछु नहियोँ पटैए, तहिना समाजोक बीच भइये गेल छल। माने ई जे ऊच्च श्रेणीक जाति निम्न श्रेणीक ऐठाम चूड़ा-दही खाइ छला आ निम्न श्रेणीक ऊच्च श्रेणीक ऐठाम भात-दालि खाइ छला। गाँधीजीक माने काँग्रेसक किसान पार्टीसँ जुड़ल कमलपुरक गाँधीजी, जनिक पहिलुका नाम बचनू मिश्र रहैन। बचनू मिश्र 1934 इस्वीक भुमकमक बीच रिलीफक बँटबारामे अपन इमानदारीक चलैत गाँधीजी बनि भेल छला, वैचारिक अगुआइ करै छला। जइसँ एक खान-पान समाजमे बनि गेल। ओना, अखनो किछु दूरी अछिए। दूरी ई अछि जे भात-दालि खेबाक एक चलैन नहि बनल अछि, चूड़ा-दही आ पूड़ी-तरकारीपर आबि अँटैक गेल अछि। देशक आजादीक लड़ाइक, माने अंगरेजी शासककेँ भगौल सिपाही गाँधीजी छलाहे, अपन राजनीति करए लगला। अपन राजनीतिक माने भेल पूजाक स्थानकेँ मुख्य मुद्दा, माने स्थान लऽ कऽ जे विषमता समाजमे उठल छल, बना अपन ओहने प्रभाव 1969 इस्वीमे पुन: बना लेलैन जेहेन 1934 इस्वीमे बनौने छला। ओना, चारिअनाक मेम्बर

(किसान सभाक) जीवनमे एक्केबेर बनला, मुदा अपनाकेँ एक्केबेर मे ओहन किसान नेता बनि गेला, जिनका महात्मे गाँधी जकाँ अन्तिम समयमे भरपूर मारि लगलैन। ओना, गाँधीजी जकाँ गोली तँ नहि खेलैन मुदा मरला ओही माइरिक चोटसँ।

एहेन नहि बुझब जे ऊच्च जाइतिक बीच ऊच्च-नीचक समस्या छल आ निम्न जाइतिक बीच नहि छल कि अछि। से नहि, सेहो अछिए। तहूमे कमलपुर सन गाम, जइमे दुर्गा-पूजाक आगमन भेल अछि। आनो-आन जातिमे खाइ-पीबैक झगड़ा शुरू भेल, अखनो चलि रहल अछि। खाएर जे अछि, से कमलपुरबला अपन बुझैत रहता। विद्यालयक दुर्गा-स्थानक शक्ति बढ़ैक एकटा दोसरो कारण भेल। दोसर कारण ई भेल जे कमलपुरक सटले गाम विष्णुपुर अछि, जइ गाममे ऊच्च जाइतिक निम्न कुल-मूलक संस्कृत साहित्यक ज्ञाता भेला। मुदा समाजमे कोनो पूछ नहि भेलैन, जइसँ गाम छोड़ि कानपुर (उत्तर प्रदेश) चलि गेला। ओइठाम नीक कमाइयो भेलैन आ नीक प्रतिष्ठो भेटलैन। परिवारक बाल-बच्चाकेँ नीक जकाँ पढ़ौलैन-लिखौलैन। जइसँ उत्तर प्रदेश सरकारमे प्रशासनिक अफसर सेहो छैथ। जिनगीक अन्तिम समयमे, साठि बर्ख बीतला पछाइत, पण्डितजीकेँ मिथिलांचलक माने गामक माटि-पानि विचारमे तेते जोर मारलकैन जे कानपुरक सभ किछु छोड़ि गाम चलि एला। मुदा जे समाज आइ तक नइ पुछलकैन ओ वृद्धावस्थामे दुतकारबे करतैन किने। कहबे करतैन जे 'जखन देहमे हूबा छल तखन बाहर गमेलौं आ मरैबेर मे गाम आबि समाजकेँ सरधुआ भोज खुएबैन?'

कमलपुरक विद्यालय-स्थानक दुर्गापूजामे विष्णुपुरक पण्डितजीक भरपूर सहयोग भेटल। सहयोग ई भेटल जे शास्त्र-पुराणक विचार दुनू गाम–कमलपुरो आ विष्णुपुरो–क समाजक बीच पण्डितजी बाँटए लगला। जहिना समाजक लोककेँ पण्डितजी दबाएल देखै छला तहिना अपनो दाब बुझिये पड़ैन। पण्डितजीक माध्यमसँ विद्यालयक दुर्गापूजाकेँ तेते सहयोग विष्णुपुरसँ भेटल जे गामक दूरी तँ वएह रहल मुदा वैचारिक दूरी पटने दुनू

गामक बीच दूरी कमि गेल। कखन दिन, कखन राति आ कखन साँझ, कखन भोर., सभटा जेना मेटा गेल आ टोल-पड़ोस जकाँ भऽ गेल। होइतो अहिना अछि जे समाजक दूरीकेँ विचारक दूरी कम करिते अछि। से कमलपुरो आ विष्णुपुरोक बीच भेबे कएल।

अखन तक जे कमलपुर आ विष्णुपुरक बीच, पैघ जातिमे, कथा-कुटुमैती (बिआह-दान) नहि होइ छल ओ शुरू भेल। ओना, आजुक परिवेशे बदैल गेल अछि, तहूमे गाड़ी-सवारी भेने आरो दूरी कमि गेल अछि।

भगवतीकेँ डिम्हा पड़ला पछाइत पूजामे सघनता अबैए। अखन तक, माने षष्टी तक, जे पूजाक विहीत अछि तहूमे बढ़ोतरी अबिते अछि। जइसँ सप्तमीसँ मेला सेहो शुरू होइए। गाममे माने कमलपुरमे पहिल बेर दुर्गापूजा शुरू भेल छल तँए गामसँ बाहर जे नोकरी करै छैथ सेहो सभ परिवारक संग गाम आबि गेला। समाजक सभ अपन-अपन कुटुम-परिवारकेँ पूजाक हकार देलैन। तैसंग इलाकामे पूजा भेने इलाकाक लोककेँ एते अधिकार तँ बनियेँ जाइ छैन जे पड़ोसीकेँ नइ धन तँ तन-मनसँ सहयोग करब सेहो धर्म छीहे। धरमे पालन ने धर्मक दिशा छी। कमलपुरक दुनू स्थानक बीच मेलाक स्पष्ट अन्तर भइये गेल। ओना, जे दर्शक छैथ ओ दुनू स्थानमे करजोड़ि (कलजोड़ि) भगवतीक आराधना करिते छैथ, मुदा दर्शकोक बीच तँ दर्शक छथिए जिनका आराधना कम आ मेलाक रस चुसब बेसी रहै छैन।

विद्यालयक स्थानक पूजा सोल्होअना समाजक (गामक) सहयोगसँ शुरू भेल छल, तँए ओइठाम सामाजिकता बेसी छेलैहे। समिति (विद्यालयक दुर्गा मेला समिति) बाहरक बेपारी, दोकान-दौड़ी करैबलाकेँ ने अबैले कहलैन आ ने नहि अबैले कहलैन। माने ई जे ने केकरो रोकलैन ने केकरो आग्रह केलैन। समाजक बीच जे अपन शक्ति जागल छल तइ अनुकूल समाजेक नवयुवक सभ मनोरंजनक लेल नाटक खेलेबाक विचार तँइकऽ बेवस्था सेहो कए लेलैन। जखन कि बड़की पोखरिक दुर्गास्थानमे

अनेको रंगक आर्थिक आमदनी भेने अनेको रंगक मनोरंजनक बेवस्था भेल। खरचोक कोनो समस्या नहि छेलैन, जखन कि विद्यालय-स्थानक पूजाक बीच आर्थिक अभाव छेलैहे। भाय, जखन शक्तिक आराधनाक विधान दुर्गापूजा छी तखन समाजमे केते शक्तिक आराध्य भेल सेहो तँ समाजेक लोककेँ ने देखए पड़तैन। खाएर जे भेल कि होइए, तेकरा भवितबे बुझू।

बड़की पोखरिक उत्तरवरिया महारक स्थानमे, परोपट्टाक जे बाजार सभ अछि, तइ सभसँ बेपारी सभकेँ बजाहटि भेल जइसँ दोकान-दौड़ीक बढ़ोत्तरीसँ मेलाक रूप-रंगमे सेहो बढ़ोत्तरी भेबे कएल। किछु भेल मुदा एते तँ भेबे कएल जे बहरबैया जे कियो एला, माने पूजा देखए, ओ दुनू स्थानक भगवतीक दर्शन केबे केलैन। बात बीचमे फरिछा ली। उत्तरवरिया महारक दुर्गास्थान कहैक माने ई अछि जे विद्यालयक जे स्थान अछि सेहो ओही पोखरिक, माने बड़की पोखरिक, दछिनवरिया महारमे अछि। अखनो जेते कमलक फूल ओइ पोखैरमे फुलाइए तेते आन एक गामक कोन बात जे इलाकाक पोखैर मिलाकऽ नहि पूरत। तँए गामक नाम कमलपुर छी। पहिल सालक पूजाक संजोग एहेन रहल जे एकटा छलगोरिया, मूर्ति बनौनिहार, सूर-पता लगा गाम पहुँचला। विचार-विमर्श केलाक पछाइत ओ मूर्ति बनाएब शुरू केलैन। संजोगसँ तेते सुन्दर मूर्ति बनौलैन जे सभ देखनिहारक मुहसँ निकलल जे धन्यवाद ओइ बनौनिहारकेँ दिऐन जे एहेन सुन्दर मूर्ति बनौलैन।

कसकसौआ मेला भलेँ ओइ स्थानमे नहियेँ किए ने भेल हुअए मुदा परोपट्टाक तेते दर्शकक आवागमन गाममे भेल जे सौंसे गाम तीनू दिन सप्तमीसँ दसमी दिन, दर्शकक आवाजसँ गनगनाइत रहल। तैबीच ईहो भेल जे किछु असमाजिक घटना सेहो बड़की पोखरिक उतरवरिया दुर्गास्थानमे घटल, जेहेन घटना दच्छिनवरिया दुर्गास्थानमे नहि घटल। एक तँ ओहुना गामक मध्य विद्यालय रहने चौबगली गामक दर्शकसँ लऽ कऽ कमलपुरक एक्कैसो टोलक धिया-पुता सहित चेतन-सियान, मर्द-औरत धरि गामक सड़क सभकेँ तेना भरने रहला जे कोनो गलत तत्त्वकेँ गलती

करैक साहसे नहि भेलइ। ओना, बीचमे एकटा आरो भेल, ओ भेल झूठ-सचक मिलानीक सीमानपर। किछु झूठ बजनिहार, जे दुनू स्थानक समर्थकक बीच झगड़ा लगबए चाहि रहल छला, ओ अनेरे दस गोरेक बीचमे झूठा बनि गेला। खाएर, भगवतीक पूजासँ जँ एतबो भेटल तँ कम नहियेँ भेल।

रंग-रंगक काजो आ रंग-रंगक विचारोसँ समाजक लोक तेना जकैड़ गेला जे अपने बेथे सभ बेथित भऽ गेला। मुदा अपन बेथाकेँ अपने मनमे बेवस्थित करैत, आन-आन गाम समाजसँ जे दर्शकक (दुर्गापूजा देखनिहार) आगमन गाममे छल, तेकरा बेवस्थित ढंगसँ निमाहैक विचार, सभक मनमे जागि गेलैन, जइसँ हजारो-हजार लोकक (दर्शकक) भार उठा निश्चिन्तसँ पूजाक समापन केलैन।

पूजा तँ सम्पन्न भऽ गेल मुदा वैचारिक मतभेद समाजमे तेना जगि गेल जे जहाँ-तहाँ गारि-गरौऐलसँ लऽ कऽ मारि-पीट धरि हुअ लगल। जहिना बाढ़ि एने गाछी-कलमक अनरनेबा–पपीता–क गाछ लगले सुखए लगैए तहिना दुर्गापूजा विसर्जनक पछाइत गाममे झूठ बजनिहारक सुखान लगि गेल। अखन तक जइ समाजमे झूठ-सचकेँ बुझब आ बुझि कऽ बेरौनिहारक अभाव छल ओ तेना बरसाती बीरार (कोनो वस्तुक बीआसँ गाछ बनबैक जगह) जकाँ भुभुआ कऽ जनमल जे लगले सघन बीरार भऽ गेल। जइमे अकटामिसियाक लत्ती जकाँ तँ खेतक-खेत समाजमे जनमबे (जनमबे) कएल जे ताड़-नारिकेल आ बेल जकाँ सेहो जनमल। माने ओहनो गाछ जनमबे कएल जेकरा ने कौआक डर आ ने कुत्ता-बानरक डर। ओहने गाछ मंगलदेवक मनक खेतमे सेहो जनमलैन।

भेल एना जे गामक, माने कमलपुरक, पछवारि गाम–रतनपुर–मे सिंहेश्वर नामक एकटा सुखी सम्पन्न परिवारक बेकती छैथ। कमलपुरक मास-मालिक सिंहेश्वरक पूर्वज तीन पुस्तसँ रहलैन। मास मालिकक माने भेल ओहन जमीन्दार जे अपना गाममे मालगुजारी असुल करैत होथि, आ हुनकर अपन खेत जँ अपन मिल्कियतसँ बाहर, दोसर मिल्कियतमे, रहल तँ ओ ओइ मलिकाना गामक मास मालिक भेला। एक तँ ओहुना सामान्यो

परिवारक आमदनी बढ़ने खर्चा केनिहारक चस्की बढ़िये जाइए, तैठाम वंशगत आमदनीबलाक बढ़ने तँ चस्की (खर्चक चस्की) आरो बढ़िते अछि। जइसँ मन सेहो बढ़ल रहिते अछि। मन बढ़बक माने भेल दोसरकेँ सदिकाल कुदृष्टिसँ देखब।

मंगलदेव मध्यम जाइतिक मध्यम श्रेणीक, मध्यम श्रेणीक, माने गामक दृष्टिसँ, नहि कि जिला-जवार आकि देश-विदेश दृष्टिए, परिवारक ओहन नवयुवक छैथ जे कौलेजक चारि सालक जीवन बीता पाँचम सालमे प्रवेश कऽ चुकल छल। तैबीच गाममे दुर्गापूजा शुरू भेल छल। अपना ऐठामसँ निकैल मंगलदेव दच्छिन मुहेँ, अपन खेत काज करए, जाइ छल। दच्छिनसँ सिंहेश्वर चारि-पाँच गोटाक संग उत्तर मुहेँ अबै छला। घरसँ थोड़बे आगू बढ़लापर मंगलदेव सिंहेश्वरकेँ देखिते अपन विषयमे सिंहेश्वरक मुँहक सुनल झूठ बात सिंहेश्वरकेँ पुछि देलखिन। छक्का-पंजा जननिहारो आ केनिहारो सिंहेश्वर छेलाहे। नमगर-चौड़गर बात केनिहार समाजमे आइये अछि से बात नहि, सभ दिन रहल अछि। सिंहेश्वर अपन रोब भरल रूतबामे जवाब देलखिन। जवाब सुनि मंगलदेव अपन रूतबा देखबैत झपैटकऽ सिंहेश्वरक गट्टा पकैड़ लेलैन। खाएर जे भेल से भेल, ओ बीतल दिनक बात भेल।

दुर्गापूजाक पछाइत एकटा प्रश्न समाजमे आरो उठि गेल। ओ उठल चन्दा-उगाही लऽ कऽ। विद्यालयक दुर्गास्थानक हिसाब-वारी जतरे दिन बिसरजनक पछाइत फरिछा गेल। आठ गोटे एहेन जवाबदेह, समितिक कार्यकर्ता, छैथ जे पहिनहि अन्दाजि लेलैन जे चन्दाक उगाही कम हएत, तँए विधिवत ढंगसँ पूजा-आराधना करब तँ बेसी भारी मोटा माथपर नहि पड़त। जैठामक परम्परा रहल अछि जे नहि पान तँ पानक डंटियोसँ पूजा होइते अछि, तखन किए भारी मोटा माथपर लेब। जखन काज असान रहत तखन भारी मोटाक प्रश्ने की अछि। आठो गोरेकेँ तीस-तीस रुपैआक अतिरिक्त भार पड़लैन, सालक पूजा अन्त भेल। दोसर दिस, माने बड़की पोखरिक उत्तरवरिया महारक दुर्गा स्थानक पूजा समितिक बीच चन्दा

उगाही लऽ कऽ विवाद भऽ गेल। विवादक कारण भेल छल जे आधासँ बेसी चन्दा असुलनिहारे राखि लेलक। बैसारक बीच आगूक समय बनल जे फल्लाँ दिन अपन-अपन हिसाब सभ दऽ देता।

समय-पर-समय बनैत गेल मुदा ने बैसार भेल आ ने हिसाब-बारी फरिछाएल। नइ फरिछाइक भीतरिया कारण ईहो छल जे अधिकांश सदस्यक (समितिक समस्य) ऊपर ओहने चार्ज छल। समितिक बैसार नहियोँ भेने एते तँ भेबे कएल जे मुहाँ-मुहीं सभ एक-दोसरक दोख लगैबिते रहल जइसँ समाजक बीच सभक कएल काजक उद्धार भइये गेल। मने-मन सभ यएह मानि लेलैन जे भगवतीक नाओंपर जे अपने खाएत ओकरा भाभन्स नहि हेतइ।

समाजक बीच, माने कमलपुरक ग्रामीणक बीच, दू तरहक (रंगक) विचारधाराक जन्म भेल। विद्यालयक दुर्गास्थानक जे समर्थक छला हुनका बीच पूजा (दुर्गापूजा) पूज्य रूपमे जहिना रहल तहिना उत्तरवरिया महारक दुर्गास्थानक समर्थकक बीच दुर्गापूजा बेपारक (विजनेसक) रूपमे पकैड़ लेलक। जे जोड़ पकड़ैत चलिये रहल अछि।

पूजाक आइ पचासम बर्ख भऽ गेल। समाजक रूपो-रंग बहुत कुछ बदैल गेल आ पहिलुका बैचक जे कार्यकर्त्ता सभ छला, तइमे किछु मरियो गेला आ किछु वृद्ध भेने नवका पीढ़ीकेँ भारो सुमझा देलैन। ओना, आजुक परिवेशमे दुनू स्थानक दुर्गापूजा ऊपरा-ऊपरी भऽ गेल अछि मुदा बदलल परिवेशमे, माने आन-आन रंगक पूजो आ सार्वजनिक दोसरो काज बढ़ने, अखन तकक जे दुर्गापूजाक इतिहास रहल अछि तहूमे बदलाव आबिये गेल अछि।



शब्द संख्या: 6126, तिथि: 04 जून 2021

तृतीय पड़ाव

उन्नैस साए एकहत्तैर (1971) इस्वी, मंगलदेव सेहो कौलेजसँ निकैल चुकल छल। ओना, कौलेजक स्थिति एहेन बनि गेल छल जे परीक्षा सभ तीन-तीन-चरि-चरि बर्ख विलम्बसँ हुअ लगल छल। तैसंग किछु कौलेजमे खुल्लम-खुल्ला परीक्षामे चोरी सेहो शुरू भऽ गेल छल आ किछु कौलेजमे नहि भेल, जइसँ कौलेज सभमे एकरूपता अनैले धरना-प्रदर्शन सेहो छात्रक बीच चलि रहल छल।

पाकिस्तानमे चुनाव भेल, जइमे पूर्वी पाकिस्तान, जे अखन बंगला देशक नामसँ जानल जाइए, मुजीवुर रहमानक पार्टी बहुमतमे आएल। अखन तक पच्छिमी पाकिस्तानक शासन पूर्वी पाकिस्तानपर रहल। जबरदस्त लड़ाइ पूर्वी पाकिस्तानमे शुरू भऽ गेल। एक देशमे लड़ाइ भेने आनो-आन देश ओइमे भागीदार भइये जाइए। मुजीवुर रहमानक संग भारत, तइ समयमे इन्दिराजी प्रधान मंत्री छेली, नीक जकाँ देलकैन। अमेरिका पाकिस्तान दिससँ उतैर चुकल छल। ओइ समय सोवियत संघ शक्तिशाली देशक रूपमे, दुनियाँक नक्शामे, अपन स्थान बना चुकल छल। जे बंगला देशक पक्षमे उतैर गेल।

अखन तक, माने 1971 इस्वी तक, भारतमे अन्नक (खाद्यान्नक) अभाव छेलैहे। देशक जन-गणक स्थिति सेहो नीक नहियेँ छल। तहूमे तेहेन लड़ाइ, बंगलादेश लऽ कऽ पाकिस्तानक संग फँसल जे देशक स्थिति आरो चरमरा गेल। खाएर जे भेल से भेल, बंगलादेश एकटा नव देशक रूपमे दुनियाँक नक्शामे जन्म लेलक।

सालक एहेन संजोग रहल जे फागुनसँ माने शिवरातिक परातसँ बरखा शुरू भऽ गेल। से कोनो एक्के-दुइये बेर भेल से बात नहि, सालो भरि बरखा होइते रहल। जइसँ देशक (भारतक) कृषिपर काफी प्रभाव

पड़ल। एक दिस अन्नक (खाद्यान्नक) अभाव सालक-सालसँ छेलैहे, दोसर दिस आरो प्रभावित भऽ गेल। जइसँ देशमे भुखमरीक स्थिति बनियेँ गेल छल। जगजीवन बाबू कृषि मंत्री छला। मुदा अपन जवाबदेहीकेँ अपन कौशलसँ ऐ रूपेँ निमाहलैन जे अन्नक मामलामे देश आत्म-निर्भर भऽ गेल। ओना तइसँ पहिने, माने 1971 इस्वीसँ पूर्व, देशमे खासकऽ बिहारमे चारि सालक रौदी, 1966 सँ 1969 इस्वी तक भऽ चुकल छल। जइसँ मिथिलांचलक स्थिति आरो बिगैड़ गेल छल।

सोवियत संघ आ भारतक बीचक सम्बन्धमे जे मजगूती आएल तइसँ बीस सूत्री कार्यक्रम इन्दिराजी बनौलैन। समाजवादी दिशानुमुख कार्यक्रम छल।

1967 इस्वीक चुनावमे देशक केतेको राज्यक सरकार बदैल गेल। कांग्रेस पार्टी, जे अखन तक एकक्षत्र राज राज्यसँ लऽ कऽ केन्द्र तक करै छल, तइमे जबरदस्त मोड़ आएल। बिहारमे सेहो कांग्रेसक सरकार हारि गेल, महामाया बाबू ‘जनक्रान्ति’ नामक नवका दल बना ठाढ़ केलैन आ मुख्यमंत्री बनला। कांग्रेससँ बाहरक जे पार्टी छल, माने कांग्रेससँ अतिरिक्त, ओ सभ मिलि बिहारमे सरकार बनौलक। ओना, सरकारमे सभ तरहक विचारधाराक विधायक शामिल छला तँए सरकार चलब कठिन छेलैहे। खाएर जे छल, मुदा कर्पूरीजीक नेतृत्वमे समाजवादी पार्टी आ साम्यवादी पार्टीक साएसँ ऊपर विधायक भेबे केलाह। जे दुनू पार्टी सरकारमे शामिल छला। जइसँ जनकल्याणक कार्यक्रम बनबे कएल। शिक्षाक क्षेत्रमे एतेक जरूर भेल जे मैट्रिकक परीक्षामे अंगरेजीकेँ धकेलल गेल। माने ई जे अखन तक जे अंगरेजी विषयमे पास केला-बाद विद्यार्थी पास होइ छल, से आब नहि रहल जइसँ रिजल्टमे, माने मैट्रिकक रिजल्टमे, नीक बढ़ोतरी भेल।

1967 इस्वीक चुनावक समयमे मधुबनी जिला नहि बनल छल, तँए ‘पूर्वी मधुबनी’ आ ‘पच्छिमी मधुबनी’क नाओंसँ दूटा एम.पी.क क्षेत्र छल। पच्छिमी क्षेत्रसँ भोगेन्द्रजी आ पूर्वीसँ शिवचन्द्र झाजी चुनाव

जितला। ओना, बिहार सरकारमे तेतेक खिंचम-तीर भेल जे अठारहे मास सरकार चलल। जहिना स्वतंत्रता आन्दोलनक समय, माने 1947 इस्वीमे, जनगणक बीच राजनीतिक चेतना उभड़ल, तहिना 1967 इस्वीक चुनावक समय सेहो उभड़ल। अखन तक, माने 1952 सँ 1962 इस्वी धरि, चुनावमे जे सुषुप्तावस्था जन-गणक छेलैन तइमे जागरूकता आएल, जइसँ जनता सड़कपर उतरल। साम्यवादी दलक प्रभाव कमलपुरपर सेहो पड़ल। साम्यवादी दलक जिलाक पार्टीक द्वारा अनेको कार्यक्रम जमीनपर उतरल। ऐठाम एकटा बात आरो अछि, ओ अछि सरकारक कार्यक्रममे मधुबनी जिला नहि छल, मुदा साम्यवादी पार्टी अपन जिला बना नेने छल। कोसी नहरसँ लऽ कऽ बटाइदारी, सूदखोरी इत्यादि-इत्यादि कार्यक्रम छेलैहे। भोगेन्द्रजी सांसद छला, गामसँ लऽ कऽ संसद धरि जिलाक समस्या उठए लगल।

मंगलदेवक संग रामकिसुन भरपूर समय समाजक माने कमलपुरक बीच लगबए लगला। कमलपुरमे नियमित कार्यक्रम आ नियमित बैसार, माने पार्टीक बैसार, हुअ लगल। जइसँ समाजमे जागरूकता आएल। सदस्यक संख्या बढ़ल। जुलुसक रूपमे अपन प्रदर्शन कमलपुरक साम्यवादी दल करए लगल। गामक बीच सभा, अंचलक बीच सभा आ जिला-बीचक सभामे सेहो अपन भागीदारी उपस्थिति करबैत पार्टी कार्यक्रमकेँ, समाजक बीच उतारै पाछू सेहो लगि गेला। पार्टीक बीच प्रभाव देखि जिलासँ पार्टी स्कूल चलबैक कार्यक्रम कमलपुरमे बनल। तीन दिनक कार्यक्रम बनल, जइमे जनार्दन चौधरी- भागलपुर, चन्द्रकेतु शर्मा-सीतामढ़ी आ भोगेन्द्रजीक कार्यक्रम बनलैन। नीक कार्यक्रम भेल। जिलाक सइयो नवयुवक कमलपुरक कार्यक्रममे शामिल भेल छला।

भोगेन्द्रजीक आम सभाक कार्यक्रम सेहो बनल। जहिना सभामे लोकक भरपूर उपस्थिति भेलैन तहिना भोगेन्द्रजीक भाषण जनकल्याणक सेहो भेलैन। ओना, अखन तक साम्यवादी दलकेँ ‘धर्म विरोधी’, ‘जाति विरोधी’ कहि जे जातिवादी पार्टी आ धरमौआ पार्टी अपन खास स्थान

बनौने छल तइमे जबरदस्त धक्का लगल।

कमलपुरमे एक संग दू तरहक आन्दोलनक कार्यक्रम बनल। पहिल जमीनक बटाइदारी आ दोसर सूदखोरी। संजोग एहेन छल जे ने गामक जमीन्दार एकोटा छला आ ने सूदखोर महाजन। ओना, किछु जमीन्दार एहेन छला जे समैयक हवाक रूखि देखि अपन खेत-पथार बेचि लेलैन। मुदा एकटा जमीन्दार ओहन छला जिनका साए बीघासँ ऊपर जमीन छेलैन। ओना, गामक रकबो पाँचे साए बीघाक अछि, तइमे पाँचटा जमीन्दार छला। कमलपुरक मंगलदेव आ रामकिसुन बहुत परियास केलैन जे जे जमीनक (बटाइ जमीनक) सही बटेदार छैथ, ओ बटाइ केस करैथ मुदा से भेल नहि। जे सही बटेदार छला ओ या तँ जमीन्दारक दाब-चापक दुआरे मुँह नहि उठौलैन वा किछु एहेन बटेदार छला जे गामक पार्टीक आधारपर विरोधी छला। खाएर जे छला मुदा मंगलदेव आ रामकिसुनक नेतृत्वमे साम्यवादी दलक बटेदार बनला आ केस कोर्टमे भेल। जमीनक दखल करब आरो भारी समस्या बनि गेल, किए तँ सोझा-साझी जमीन्दार अपने खेती नहि करै छला। गामक बीचमे सही गरीब बटेदार आ कानूनी बटेदारक बीच लड़ाइ फँसैक सम्भावना बनि गेल। जेकर सोल्होअना लाभ जमीन्दारकेँ भेटैत। तैबीच एकटा आरो भेल, ओ भेल जे जइ जमीनक बटेदार छला, माने बटाइ खेती करै छला, तइ खेतक अतिरिक्त जे जमीन्दारक खेत छेलैन, माने गाछी-कलमक संग कचहरी आ कचहरीक इर्द-गिर्दक जमीन, तैपर कब्जा करैक योजना बनल। भेबो कएल। गामक विभाजन स्पष्ट रूपेँ दू दलमे बँटि सोझमे आबि गेल। ओना, तइमे किछु आरो कारण भेने तेसरो ग्रुप बनबे कएल। ओना, संगठित रूपमे ग्रुप नहि बनल, मुदा एते तँ बनबे कएल जे दुनूमे सँ, माने जमीन्दारो आ बटेदारोमे सँ, किम्हरो ने जाएब। ओना, तहूमे बिखड़ाउ भेबे कएल। बिखड़ाउ ई भेल जे चाहे बटेदार हुअए कि जमीन्दारक संग पुरनिहार, मुदा केसमे मुदई-मुदालहक संग तेसरोक खगता होइते अछि, जेना गबाह, जमानतदार इत्यादि, तइमे कोनो-ने-कोनो रूपमे बिरले कोनो परिवार बचल रहल नहि

तँ सभ परिवार अपन उपस्थिति पार्टीमे दर्ज कराइये लेलैन। खाएर जे भेल, मुदा एते तँ भेबे कएल जे जहिना कानूनी बटेदार माने जे बटाइदारी केस केने छला, कैँ जँ जमीन सोल्होअना नहियोँ भेलैन तहिना जमीन्दारक जमीन सेहो किछु बँटाएल, बँटाएलक माने भेल जिनका सभकेँ जमीन गछि केसमे संगी बनौने छला, सेहो भेबे केलैन। तैसंग जमीनक जे उचित मूल्य छल तेकर चौथाइसँ लऽ कऽ आधा मूल्य तकमे सभ जमीन जमीन्दारक सम्पन्न भऽ गेलैन आ गामकेँ माने कमलपुरकेँ, जमीन्दारसँ मुक्ति भेट गेल।

बटाइदारीक बीच, जमीन दखल करैक बीच, अगिलग्गी केश भऽ गेल। जइ केसमे जमीन्दार तँ अपने काते-करोट रहला मुदा गामक लोक नीक जकाँ फँसि गेला। नीक जकाँ फँसैक कारण भेल जे अनेको जाइतिक लोककेँ केशमे फँसौल गेलैन। उनतीस गोरेक ऊपर केस भेल छेलैन। केसक कारण किछु ने छल, राताराती पनरह-बीसटा टाट हरिजन (मुसहर) द्वारा ठाढ़ करबा देल गेल छल आ जखन दखल करैक खियालसँ बटेदारक दल निकलल तखन ओइमे आगि लगा हरिजन (मुसहर) कैँ अगुआ केस भेल। जीवन नया मिलेगा, अन्तिम चितामे जलके, सएह भेल। एक संग उनतीसटा ओहन उत्साहित नवयुवक समाजमे उठिकऽ ठाढ़ भेला जे समाज सुधारक दिशामे आगू बढ़ला। ओना, जहिना गामक बीच साम्यवादी विचारधाराक प्रभाव बढ़ल तहिना दोसर दिस पंचायत प्रमुख भेने सामन्तवादी विचार सेहो उभरले जाइ छल। मुदा एते तँ रच्छ रहबे कएल जे गाममे ने धर्मक नाओंपर आ ने जाइतिक नाओंपर एकोटा झंझट भेल। एकर माने ई नहि बुझब जे गाममे रंग-बिरंगक सम्प्रदाय आ रंग-बिरंगक जाति नहि छल। तहियो छल आ अखनो अछि, भलेँ ओइमे किछु आधुनिकता किए ने प्रवेश कऽ गेल हुअए।

गामक बीच, माने गामक लोकक बीच, एते अधिक मुहाँ-फुल्ली भऽ गेल जे लगक लोक रहितो, माने एकठाम घर रहितो बाजा-भुकी बन्न भऽ गेल। विचारधाराक प्रभावसँ जँ गप-सप्प हेबो करैत तँ झगड़े-झंझट भऽ

जाइत। जखने बाजब-भूकब बन्न भेल तखने लेन-देन, पैंच-पालट सभ प्रभावित भेल, जइसँ समाजकेँ चलैमे असोकर्ज हुअ लगल। पूर्वमे जे जमीन्दारक प्रभाव छेलैन, ओहो समाप्त भऽ गेल। किए तँ बुझले अछि जे 'खाया-पीया धोया हाथ, तेरा-मेरा कोन साथ।'

समाजक विचारधारापर प्रभाव पड़ल। जइसँ एक्के-दुइये लोकक मुहसँ निकलैत समाजक अधिकांश लोकक मुहसँ निकलए लगलैन जे जमीन आ जमीन्दार लऽ कऽ एते दिन समाजमे झगड़ा छल, मुदा से तँ आब रहल नहि, तँए जइ दिनक जे दोख छल से भेल आब सभकियो समाजक एक-इकाइक रूपमे अपन-अपन सहयोग करू। नीक विचार, तँए गामक विचारधारामे एकरूपता बनल। एक शब्दमे सभ कियो अपन-अपन सहमति जतौलैन जे एक समाज छी तँए एक बनि रहबे कल्याण हएत। ओना, मंगलदेवो आ रामकिसुनो अपन दलक बीच, माने साम्यवादी दलक बीच, सहमत बनाइये लेने छला जे समझौता भऽ जाए। मुदा बीचमे जे बाधा छल ओ छल जे तेरहटा ओहन मुकदमा जे तीस सालसँ कोर्टमे लटकल छल, बिना तेकरा हल केने समाजमे समझौता केना हएत। हँ एकटा एहनो भऽ सकैए जे समानो रूपमे आकि कनी कमियोँ-बेसी कोर्टक मुकदमाक रहल तँ मुकदमाक वजन देखि समझौता कएल जा सकैए, मुदा से तँ कमलपुरमे छल नहि। छल ई जे एक पार्टी, साम्यवादी दल, एकतरफा मुद्दालह छला आ दोसर पार्टी एकतरफा मुदई। मुदा तैयो सभ सहमत जतौलैन जे एक शर्त्तपर समझौता कऽ लेब। ओ शर्त्त ई जे समाजक बीचक विवाद छी, तँए समाज अपने बीच बैस निराकरण कऽ लैथ तँ सभसँ नीक। मुदा तइमे पंच ओहन होथि जे कोनो झंझट वा केस-मुकदमामे संलग्न नहि रहल होइथ। सौंसे गाममे तँ सहमत बनि गेल मुदा जखन ओहन लोकक ताक-हेर भेल तखन एक्को गोटा ओहन नहि भेटला जे कोनो-ने-कोनो दलसँ जुड़ल नहि छला।

भोगेन्द्रजीक बीच समझौताक (आपसी समझौताक) विचार भेल छल किए तँ भोगेन्द्रजी कार्यक्रममे कमलपुर आएल छला, जखन वापस

जाए लगला तखन विरोधी पार्टी माने दोसर पार्टीक दर्जनो लोक आबि कऽ कहलकैन जे 'जहिया जे भेल से भेल, अपने जे कहबै हम सभ तैयार छी।' अपन विचार भोगेन्द्रजी दऽ देलखिन जे सभकियो एकठाम बैस मिलि-जुलि विवादकेँ अन्त करू। तेकर पछाइत भोगेन्द्रजी बेर-बेर तगेदा सेहो करए लगला जे की भेल?

बटाइदारीक पीठेपर सूदखोरीक आन्दोलन सेहो चलि रहल छल। गामक पनचानबे प्रतिशत लोक ओहन छला जे अन्न-पानि हुअए आकि रुपैआ-पैसा, कर्जक तरमे छेलाहे। जमीन्दारे मालिक जकाँ महाजन मालिक सेहो छेलाहे। तैबीच कानूनी बात भोगेन्द्रजीक मुहसँ सभ सुनियेँ चुकल छला जे केतबो दिनक कर्ज किए ने हुअए, दोबरसँ बेसी नहि लेल जा सकैए। तँए सभक मनमे बिसवास बनले छेलैन। महाजनक कर्ज वापस करब समाजक सभ रोकनहि छला। ओना, छिट-फुट घटना माने पकड़-धकड़, गारि-गरौऐल अनेको भेल, मुदा सामुहिक रूपमे एको दिन नहि भेल।

मधुबनी जिला बनि चुकल छल। नित्यानन्द बाबू डी.एम. छला। विधिवत लखनौर ब्लौक काज शुरू नहि केने छल। अट्ठाइसो पंचायतिक ब्लौक मधेपुर छल। कमलपुरमे बी.डी.सी.क बैसारक कार्यक्रम बनल। नित्याबाबू अपने सेहो एला। कार्यक्रमक दौड़मे महाजनीक चर्च करैत बैंकक चर्च करैत ॠण-मुक्तिक प्रमाणपत्र सेहो बाँटि देलखिन।

कम्मे कर्जदारकेँ प्रमाणपत्र भेटलैन, आम कर्जदारकेँ नहियेँ भेटलैन। मुदा एते तँ भेबे कएल जे ओहन कर्जदारकेँ प्रमाणपत्र भेटलैन जिनका ऊपर कर्जक भारी मोटा छेलैन। महाजनो सभ अपन हिसाब जोड़िकऽ देखलैन तँ बुझि पड़लैन जे बारहअना, माने तीन-चौंथाइ, कर्ज तँ जाइये रहल अछि, अपन कारोबारमे ढील देलैन। तैबीच एकटा महाजन छला, ओ मरि गेला आ परिवारमे चारि भाँइक भैयारीमे भिन-भिनौज भऽ गेलैन। चारू भैयारीक समांग सभ ओहन छला जे या तँ नौकरी करै छला वा अपन कारोबार करै छला। नमहर महाजनक महाजनी बन्न भेने छोट-

छोट महाजनी-करोबारी जे छला ओ भरमे-सरम अपन हाथ-पएर समेटि लेलैन। ओना गामक ई स्थिति बनि चुकल छल जे कोनो परिवारमे कन्यादान हुअ आकि मृत्युक श्राद्ध-कर्म, बिना कर्ज लेने काज चलि नहि सकै छेलैन। गामक जे नवयुवक सभ छला ओ अपन जीवनकेँ अपना बले ठाढ़ करैक पाछू जी-जान लगा देलैन। जइसँ छोट-मोट कारोबार आ खेतियोक रंग बदलल। गामक स्थितिमे दिनानुदिन सुधार हुअ लगल।

कमलपुरक प्रभाव चौवगली गाम सभपर सेहो पड़ल जइसँ वैचारिक संघर्ष सेहो शुरू भेल। कमलपुरे जकाँ, माने ई जे जहिना कमलपुरमे अनेको जाति आ अनेको साम्प्रदायिक समर्थक अछि तहिना आनो-आन गाममे अछिए। कनी कम कि कनी बेसी मुदा अछि तँ सभ गाममे। ओना, बिना साम्यवादी विचार पड़नौं समाजक बीच एक-दोसरमे टकराव होइते छल मुदा से होइ छल मुहपुरुखीक लेल, जइसँ समाजमे कोनो तरहक नवीनता नहि अबै छल उल्टे किछु-ने-किछु नोकसान भइये जाइ छल। साम्यवादी विचारधारा उठने संघर्षक, माने आपसी लड़ाइ-झगड़ामे, मोड़ आएल। मोड़ अबिते बेवस्थामे विपरीत प्रभाव पड़ल। जइसँ समाजक आर्थिक, शैक्षणिक बीच नीक प्रभाव पड़ल। अखन तक जे पढ़ब-लिखब समाजक मुट्ठी भरि जाइतिक बीच छल ओइ बन्धनमे ढील आएल। स्कूल-कौलेजक संख्या तीव्र गतिसँ भलेँ नहि बढ़ल मुदा धीमियोँ गतिसँ बढ़बे कएल। अखन तक जे रोजगार (उद्यम) खास-खास जाइतिक बीच बन्हौटा बरद जकाँ छल तहूमे बदलाव आएल।

मधेपुर ब्लौक नमगर-चौड़गर पेटबला ब्लौक छेलैहे। पूबमे कोसी नदीक पूबरिया पार आ कमला नदीक पछबरिया पार धरि पसरल छेलैहे। कोसी इलाकाक पंचायत मटरस। कामधेनु गाए जकाँ पंचायत छेलैन्हे। कोसीक उपद्रवक नाओंपर अनेको सुविधाजनक काज होइते अछि। एक तँ ओहुना आनो-आन पंचायतिक बहुसंख्य अवादी ओहन छल जे सरकारक माने मात्र कोटाक चीनी, गहुम आ मटिया तेल बुझै छल, तइसँ बेसीक खगते की अछि। जइसँ पंचायतिक कर्ता-धर्ताकेँ दुनू हाथ लड्डू

भेटते छेलैन, मटरस पंचायतिक मुखिया, ओहन परिवारक छलाह जिनकर पूर्वजकेँ गामक अधिकांश जमीनो छेलैन आ महाजनीक कारोबार सेहो छेलैन। ओना, महाजनी तरे-तर बिला लगल छेलैन, मुदा सरकारी आमदनीसँ मनो आ धनो भरल छेलैन्हे।

मधेपुर ब्लौकक किछु पंचायतिक मुखिया मटरसक मुखियाकेँ भार देलैन जे कमलपुरक रामकिसुनक दू भाँइक बिआह मटरसमे भेल अछि, दुनू लड़कीकेँ जबरदस्ती हीरालालक घरसँ निकालि पुन: मटरस आनल जाए। अपन राजनीति बुझि मटरसक मुखिया सहर्ष भार उठा लेलैन। कमलपुर पंचायतिक भार प्रमुख लेलैन जे कोनो तरहक बाधा-रूकावट नहि हुअ देब।

दिनक बारह बजे, एक्के-दुइये टोलोक लोक माने हीरालालक जाइतिक टोलक लोक, गोलिया लगल आ प्रमुखक संग जे आदमी आएल छल ओ सभकियो मिलि एकमुँहरी भऽ हीरालालक ऐठाम पहुँचल। तीनू भाँइ रामकिसुनो आ मातो-पिता, माने दुनू परानी हीरोलाल, दरबज्जाक आँगनमे बैसल, पाँचो गोरे एक दोसरकेँ आँखि उठा देखबो करैत आ परीक्षा लेल छागर जकाँ मुँह खसा मने-मन अपन जीवनक अन्तिम क्षणोक हिसाब गनैत। निरलजपनोक तँ अपन सीमा अछि मुदा तहूसँ आगू बढ़ि मुखिया (मटरसक मुखिया) अँगनाक ड्योढ़ीपर ठाढ़ भेल, जइ बेटीकेँ दान स्वरूप दऽ देने छल, बलजोरी दुनू बेटीकेँ बाँहि पकैड़ आँगनसँ निकालि लेलक।

..अन्तो-अन्त दुनू परानी हीरालाल यएह बजैत रहला जे अहाँक बेटी छी, लऽ जाएब तँ अपन लऽ जाउ। सएह भेल। दुनू लड़कीकेँ अगुआ सभ विदा भेल। घटनाक नीक-बेजाएक गप-सप्प इलाकामे उठि गेल। अधिकांश गामक सामान्य लोक घटनाक निन्दा केलैन। अपन विचारपर दृढ़ दुनू बापूत रामकिसुनक मनक विचारमे आरो सक्कतपन आएल। जइ जाइतिक रामकिसुन छैथ ओइ जाइतिक संख्या इलाकामे कम अछि। माने ई जे किछु गनल-गुथल गाम अछि जइ गाममे रामकिसुनक जाति अछि।

अखन तक जे परम्परासँ होइत आबि रहल अछि तइ अनुकूल बेटा-बेटीक बिआह-दान जाइतिक बीच होइत आबि रहल अछि। जहिना मटरसक मुखियाक कथा-कुटुमैती सभ गाममे अछि तहिना रामकिसुनक कथा-कुटुमैती सेहो सभ गाममे अछिए। अपन-अपन कुटुमक समर्थनमे सभ गामक कुटुम, जहिना मुखियाक तहिना रामकिसुनक मुँह उठौलैन। एक-दोसराक बीच कहा-कही होइत-होइत गारि-गरौऐल सेहो गामे-गाम पसैर गेल। तैपर साम्यवादी दल, जइ दलक रामकिसुन नेता छैथ, जमिकऽ गामक कार्यक्रमक मंचसँ लऽ कऽ ब्लौक-जिलाक कार्यक्रमक मंचपर उठबए लगला। रामायणिक बालि जकाँ दुश्मनक आधा शाक्ति, झूठ-साँचक (सही-गलतक) बीच सेहो भइये जाइए, सत्यकेँ अपन शक्तिक संग असत्यक आधा शक्ति आबिये जाइए। जइसँ वैचारिक संघर्षमे रामकिसुनक विचार ऊपर उठलैन आ मुखियाक विचार दबलैन।

तैबीच एकटा आरो छल ओ छल जे रामकिसुनक ससुर रमाउत (रमौत) पंथक महंथ छला। अपनो दरबज्जापर मन्दिर बनौने छला आ आन-आन गाममे सेहो अपन चेला बनौने छला। जमीन्दारे-महाजन जकाँ महंथ सभक सेहो आमदनीक रास्ता खुजले छेलैन। बेटीकेँ अपना घर अनला पछाइत महंथजीक विचारपर काफी प्रहार भेलैन। केतेको चेला महंथजीक मुँहपर अवाच कथा कहए लगलैन। जइसँ गाम-गामक रास्ता महंथजीक बन्न भेलैन आ आमदनीमे सेहो कमी एलैन। ओना, सत्यक अपन महत्व अछिए। केतबो प्रभावशाली-सँ-प्रभावशाली लोक किए ने हुअए मुदा सत्योक तँ अपन प्रभाव अछिए। किछु दिनक पछाइत महंथजी हरदा बाजि विचारमे सुधार केलैन। विचारमे सुधार भेने अपने मुहेँ महंथजी लड़कीकेँ, माने बेटीकेँ, पुन: रामकिसुन परिवारमे वापस करैक विचार केलाह, मुदा से हएत केना?

गाम-गामक लोककेँ पंच मानि, अगुआ मानि, ऐ काजक भार, माने बेटी वापसीक भार, देलखिन। हीरालालक पिसियौत भाए कमलपुर आबि हीरालालकेँ कहलैन- “भैया, जइ दिनक जे दोख छल, से भेल आब अहाँ

लड़की अपना घर लऽ आनू।”

हीरालाल बजला-

“जहिना घरसँ निकालि अपन बेटीकेँ मटरसबला सभ लऽ गेल, तहिना जँ घरमे आनिकऽ दऽ जाएत तँ हम राखि लेब।”

विचार ऐठाम आबि अँटैक गेल। साल बीत गेल। दुनू लड़कियो आ लड़कीक माइयो सोग (चिन्ता) सँ सोगाए लगली। दुनू लड़की बीमार पड़ि गेली। मटरसबला सभ ऐ बातपर अँटकल रहला जे कमलपुरबला अबैथ आ लड़कीकेँ लऽ जाइथ। हीरालाल ऐ विचारपर गीरह बन्हने जे जहिना घरसँ निकालि अपन बेटी मटरसबला लऽ गेल तहिना दऽ जा। हम अनैले नहि जेबैन। जँ कियो पुछैन, माने हीरालालकेँ, जे बेटाकेँ बिआह कऽ लिअ। तँ हीरालाल एक्के जवाब सभकेँ दैथ जे पहिने बेटीबला अपन बेटीक बिआह कऽ लिअ। पछाइत हम बेटाक बिआह करब। जँ जातिमे बिआह नहियोँ हएत तँ आने जातिमे कऽ लेब, मुदा से करब बेटी बिआहक पछाइत।

रसे-रसे समय बीतैत गेल। तीन साल बीत गेल, तैबीच महंथोजीक अपन सेवकान, माने जइ-जइ गाममे चेला बना पंथक निर्माण केने छला, सभ टुटि गेलैन। अन्तो-अन्त समझौता भेल आ आन-आन गामक लोक सभ अगुआइ करैत, दुनू लड़कीकेँ पुन: हीरालालक परिवारमे आनिकऽ दऽ देलैन।

दुनू पुतोहु तँ हीरालालक परिवारमे आबि गेलैन मुदा जे सिनेह पहिने, माने कमलपुरसँ जाइसँ पहिने, छेलैन तइमे कमी आबि गेलैन। ओना, हीरालालक उत्साहमे दोबरोसँ बेसी उत्साह आबियेे गेल छेलैन किए तँ दू समाजेक बीच नहि दू विचारधाराक बीचक सफलता सेहो हाथ लगले छेलैन।

रामकिसुन अपन पार्टीक (साम्यवादी दलक) जिला स्तरक नेता माने पार्टीक जिला परिषदक सदस्य, सेहो बनि गेला। जेना-जेना समय बीतैत गेल तेना-तेना रामकिसुनक प्रभाव सेहो बढ़ैत गेलैन। एकटा निर्भीक

कार्यकर्ताक रूपमे रामकिसुन अपन प्रभाव बना लेलैन। समाजक बीच, माने कमलपुर-समाजक बीच, वैचारिक मोड़ सेहो आबिये रहल छल। जइ समाजक लोक, माने कमलपुरक जातीय समाजक लोक, रामकिसुनक परिवारमे लड़कीकेँ घरसँ निकालैमे गामक प्रमुखक संग-संग मटरसक मुखियाक संग देने छला से सभ रामकिसुनक संग आबि गेला। नव पीढ़ी सेहो उठिकऽ ठाढ़ भेल, जइसँ पुरान पीढ़ीक प्रभावमे कमी सेहो एबे कएल। तैबीच मधेपुर ब्लौक विभाजित भऽ गेल। ब्लौकक चौदहटा पंचायत मिला लखनौर ब्लौक बनि गेल। ओना, किछु पंचायतो विभाजित भऽ बेसी भेबे कएल। मटरस मधेपुर ब्लौकमे रहल आ कमलपुर लखनौर ब्लौकमे आबि गेल। जइसँ पहिलुका सम्बन्ध, माने मटरसक मुखिया आ कमलपुरक मुखियाक (प्रमुख) बीच सम्बन्ध, छल तइमे कमी सेहो एबे कएल।

कमलपुरक साम्यवादी आन्दोलन दिनानुदिन बढ़ने जहिना पार्टीक (दलक) प्रभाव बढ़ल तहिना विरोधी पार्टीक, माने गामक विरोधी पार्टीक, विघटन सेहो हुअ लगल। अखन तक जे सामन्ती संस्कार प्रमुखमे छेलैन ओ आरो उग्र भेलैन। जइसँ एकगोटाक, माने गामक पसारी जाति नौआक, महींस थानाक दारोगाक संग मिलि दरबज्जापर सँ खोलि जबरदस्ती लऽ गेला। महींसबला तत्काल एकटा केसक मुद्दालह छला, जइसँ सोझा-सोझी तँ महींस नहि छीन सकला, मुदा घटनाक पछाइत, महींस खोललाक तीन दिनक पछाइत प्रमुखकेँ माने कमलपुरक मुखियाकेँ खूब मारि मारलैन। मारि खेलाक पछाइत मुखियाक (प्रमुखक) प्रभावमे काफी कमी एलैन। जइसँ अपनो समर्थकक बीच विवाद शुरू भेलैन।

तीन भाँइक भैयारीमे रामकिसुन माझिल भाए। ननूलाल जेठ आ जीवनलाल छोट भाए। डेढ़ सालक पछाइत ननूलालकेँ लड़की (बेटी) भेलैन। एक तँ ओहुना ननूलालक पत्नी जीवनक घटना सभसँ रोगाइये गेल छेली तैपर सन्तान भेला पछाइत आरो रोगा गेली। साल पुरैत-पुरैत मरि गेली मुदा बेटी जीवित रहलैन। किछु दिनक पछाइत दोसर बिआह

ननूलाल केलैन।

चारि साल बीतैत-बीतैत रामकिसुनकेँ दूटा बेटी (लड़की) भेलैन। ओना, रामकिसुनक पत्नी सेहो नीक जकाँ रोगाइये गेल छेली। पहिलुका लड़की तँ अढ़ाइ सालक भऽ गेल छेलैन मुदा दोसरकेँ सालो नहि लगल छेलैन कि बिच्चेमे ओहो माने रामकिसुनक पत्नी सेहो मरि गेलखिन। जइसँ परिवारक बीच रामकिसुनक परेशानी आरो बेसी बढ़ि गेलैन। मुदा तैयो परिवारकेँ सम्हारैत रामकिसुन पार्टीक संग ओहिना जुड़ल रहला जहिना पहिने छला। तैबीच आरो दोसर घटना भेलैन जे साल भरिक आगू-पाछू रामकिसुनक माइयो आ पितो (माने हीरालाल दुनू परानी) मरि गेलखिन।

ओना, ननूलालक दोसर बिआह हीरालाल अपने सोझामे कऽ देने छेलखिन। पछाइत रामकिसुनक पत्नी मरलैन। पत्नीकेँ मुइलाक साल भरिक पछाइत रामकिसुन दोसर बिआह केलैन। ओना, पहिलुका पक्षक माने पहिल पत्नीसँ जे दूटा बेटी भेल छेलैन सेहो दुनू छेलैन्हे। बेटीक मुइलाक पछाइत माने रामकिसुनक पत्नीक, महंथजीक मन आरो टुटि गेलैन। किए तँ मात्र एकेटा सन्तान छेलैन। पहिलुका जे सुधि-बुधि महंथजीक छेलैन तइमे काफी बदलाव एलैन। दस-बारह बीघा अपन खेत सेहो छेलैन। ओना, आधासँ बेसी खेत धार-धूरमे पड़ि गेल छेलैन मुदा तैयो चारि-पाँच बीघा खेत ओहन छैन्हे जइमे खेती होइ छैन।

एक तँ उमेरोक हिसाबसँ, माने सत्तैर बर्ख पार केलापर, आ दोसर पत्नियोँ मरि गेलैन जइसँ महंथजीक मन चीरी-चोंत भऽ गेलैन। जाबे धरि गाममे महंथजी रहै छला, ताबे धरि तँ खेनाइ-पीनाइ इत्यादिक जोगार पत्नी करै छेलैन, आ जखन सेवकानमे टहलै छला तखन मन्दिरक मूर्तिकेँ झोड़ामे लऽ संगे नेने जाइ छला, तँए गाममे पूजाक खगते नहि छेलैन। अपना गाममे तँ महंथजी अपन पत्नीकेँ कण्ठी दऽ चेला सेहो बनौने छला जइसँ भानस-भातमे छुत नहि मानै छला, मुदा जखन सेवकानमे जाइ छला तखन जँ परिवारक, जइ परिवारक ऐठाम जाइ छला, स्त्रीगणो जँ

चेला बनि कण्ठी नेने छली, तिनको भानस कएल, माने छुबल, नहि खाइ छला। अपने हाथे भानस करै छला आ खाइ छला। एकर माने ई नहि बुझब जे अपन मनमना भोजन भेटै छेलैन। ओना, एकटा सेवक माने चेलाकेँ सेहो संगमे रखिते छला, मुदा ओ भानसक सभ कथुक ओरियान कऽ चुल्हि लग राखि दइ छेलैन आ महंथजी अपने हाथे भानस करै छला।

बारह मासक सालमे महंथजी छह मास सेवकानमे घुमै छला आ छह मास गाममे रहि, मन्दिरमे पूजा-उत्सव सेहो करै छला। आ सालमे एकबेर मन्दिर स्थापनाक नाओंपर भनडारा सेहो करै छला, जइमे अपन सभ सेवककेँ दल दऽ बजबैत रहैथ, जइमे भनडरो होइ छल आ दुनू दिन महंथजी प्रवचन सेहो करै छला। सेवको सभ अपन गुरुदुआर बुझि आन-आन कुटुम्ब सभसँ अधिक महत्व दऽ पहुँचते छला। अपन सिदहो-पानि आ भगवानक स्थापनाक चढ़ौआ सेहो दइते छेलैन। मन्दिरक स्थापनाक संग दोसर उत्सव रामनवमी सेहो महंथजी करै छला, तइमे सेवकानकेँ छोड़ि गामक समाजक बीच करै छला, जइमे रामभजनसँ लऽ कऽ रामलीला सेहो समाजकेँ देखबैत रहथिन। साले-सालकेँ के कहए जे सालमे एक्के गाममे दर्जनो ठाम रावणवध, भिन्न-भिन्न रूपमे होइते अछि मुदा ओ रावण केहेन अछि जे बध भेला पछातियो जीविते रहैए। जाबे रामायण अछि ताबे राम-रावण आ जाबे महाभारत अछि ताबे एकलव्य-द्रोणाचार्य सेहो रहबे करता। खाएर जाए दियौ, ई अतीतक विचार भेल।

बैशाख मास, टहटहौआ रौद, दिनक तीन बजे महंथजी अपन बेटी-जमाइक गाम- कमलपुर पहुँचला। जे कमलपुरमे महंथजीकेँ समधिक रूपमे सुआगत कहियो भेल छेलैन से कमलपुर आइ आगिमे जरल कलम-वाग जकाँ महंथजीकेँ बुझि पड़ि रहल छैन। अपन कोखिक सन्तान, जे अपनोसँ पहिने चलि गेल छेलैन, जे जमाए जमाए छेलैन ओ आइ दोसरक जमाए भऽ गेल बुझि पड़ैन, तैसंग अपन दुनू नातिनकेँ देखि महंथजीक मन बेकाबू जकाँ भऽ गेलैन। दरबज्जापर पएर रखिते नातिनकेँ शोर पाड़ि बजला- "बेटी शान्ति, एमहर आबह।"

शान्ति, जेठ नातिन महंथजीक, बबाजी रूपक मुहसँ ‘बेटी’ सुनि अकबकाएले छल कि रामकिसुन अपने बाड़ीसँ निकैल दरबज्जाक आगू एबे केलाह कि महंथजी बजला-

“पाहुन, शान्तिकेँ हम लऽ जाएब। पालव-पोसव आ कन्यादान सेहो अपने हाथे करब। अहाँकेँ कोनो भार नहि।”

कलशैत रामकिसुनक मनमे अनेको विचार एकसंग उठि गेलैन मुदा बजला एतबे-

“पहिने हाथ-पएर धोइ किछु खा लिअ। पछाइत जे हएत से बुझल जाएत।”



शब्द संख्या: 3669, तिथि: 12 जून 2021

चतुर्थ पड़ाव

1974 इस्वी अबैत-अबैत, विचारधाराक प्रवाहमे कमलपुर कुरुक्षेत्र बनि गेल। एक नहि अनेको प्रश्न समाजक बीच उठिकऽ ठाढ़ भेल। एक दिस सामन्ती विचारधारा कर्मक्षेत्रमे जोड़ मारि उतरए लगल तँ दोसर दिस साम्यवादी विचारधारा अपन गति सेहो पकैड़ लेलक जइसँ बातो-बातमे आ काजो-काजमे टकराव हुअ लगल।

देशक परिस्थिति किसानोन्मुख भइये रहल छल। जइसँ नव-नव तकनीको आ आनो-आन सुविधा किसानकेँ मुहैया हुअ लगल। अमेरिकासँ गहुम कर्जमे अबै छल, ओ बंगला देशक लड़ाइक बीच टुटि गेल। इन्दिराजी प्रधानमंत्री छेली। बीस सूत्री कार्यक्रमक योजना बना देशकेँ आत्मनिर्भर, भोजनक प्रश्नपर, बनबैक दिशामे कठोर डेग उठौलैन, जइसँ उजरल-उपटल गामक चेहरापर लाली उतरए लगल। कमलपुरक किसान सेहो आगू बढ़ि बोरिंग करेबाक विचार कए एकसंग पाँच गोटा, बोरिंग-दमकल लइले तैयार भेला। नव-नव प्रोत्साहन किसानकेँ भेटए लगल जइसँ एक तिहाइ, माने तैंतीस प्रतिशत, कर्जक सब्सीडीक रूपमे सहायता सरकार दिअ लगल।

जखन पाँचो गोटा एकठाम बैस बोरिंगक उपयोगपर विचार केलैन, तखन बीस बीघाक, प्रति बोरिंगक हिसाबसँ अनुमान केलैन जे आधा गामक खेतीले पाइनिक खगताक पूर्ति भऽ जाएत। जखने पाइनिक सुविधा किसानकेँ भेटत, तखने उपजावारीमे वृद्धि हेबे करत। शुरूमे पाँच गोटाक विचार वोरिंग करबैक भेल छेलैन, मुदा काजक प्रक्रिया, माने बोरिंग-दमकलक बैंक सहित सरकारी काजक प्रक्रिया, शुरू होइते दू गोटा विचारसँ पाछू हटि गेला। तीन गोटा, मंगलदेव, रामकिसुन आ रामदेव, अपन विचारपर ठाढ़ भऽ एक-एकटा बोरिंग तीनू गोटा गड़ौलैन। तइ

समयमे झंझारपुरमे स्टेट बैंक खुजि गेल छल, ओही बैंकसँ तीनू गोरेकेँ बोरिंग-दमकल कर्जक रूपमे भेटलैन।

जहिना मंगलदेव तहिना रामकिसुनो आ रामदेव सेहो नव किसानक रूपमे अपन उपस्थिति समाजमे दर्ज करौलैन। कमलपुरक खेतीमे नवपनक शुरूआत भेल। मुदा सइयो रंगक समस्या सेहो समाजमे उठिकऽ ठाढ़ भेल। साँढ़-पाड़ा जकाँ लोकक बीच काना-कानी चलए लगल। सौंसे ब्लौकक, माने लखनौर ब्लौकक अड्डा कमलपुर बनि गेल। समाजक बीच जहिना खेतीक कलामे टकराव शुरू भेल, तहिना गामक विचारधारामे सेहो भेल। जइ खेत होइत माने फसल लगल रहलो पछाइत, हरक बरदकेँ एते छुट छल जे खुलाआम, माने बिना रोके-टोके जा सकैए, तैठाम हट्ठा बरदकेँ रोकब शुरू भेल। चौक-चौराहापर आवाज उठए लगल जे जँ हमर गाछी-कलममे पएर रखलक तँ पएर काटि लेबइ। तँ केतौ उठए लगल जे हमरा खेत देने जँ पाइनिक (बोरिंग पाइनिक) नाला बनाएत तँ ओतइ ओही कोदारिसँ काटि ओही नालामे गाड़ि देबइ।

पाँच गोरेमे जे दू गोरे बोरिंग नहि गड़ौलैन तेकर कारण छल जे दुनू गोरे सामन्ती विचारसँ, माने पाछूसँ अबैत विचारसँ, तेते प्रभावित भेला जे पाछू हटि गेला। समाजक बीच वैचारिक रूपमे इनारक स्थानपर चापाकलक विरोध, ई कहि भेल जे ऐमे, माने चापाकलमे, चमड़ाक वासर लगल रहैए, जइसँ अशुद्ध पानि निकलैए, तँए ने ऐ पानिसँ पूजाक प्रक्रिया हएत आ ने कोनो होमे-जाप। तहिना हॉलर-चक्कीक विरोधमे आवाज उठि रहल छल जे जे ढेकी-जातक कुटल-पीसल हएत ओ हॉलर-चक्कीक थोड़े हएत। आने गाम जकाँ कमलपुरोक लोक कर्मक्षेत्रसँ हटले छला। हटैक पाछू मनमे एते तँ बनले छेलैन जे जे भगवान मुँह चीरि जन्म देलैन, हुनके ने पुरबैक भारो छैन, तँए अपन काजक जरूरते की अछि। सरकारी सुविधो आ तंत्रो (शासन बेवस्था) एक पक्षीय भऽ गेल। छोट-छीन घटना भेला पछाइत साम्यवादी दलक कार्यकर्ताक ऊपर पैघ-सँ-पैघ केस (दफा लगा) थानाक दरोगा करए लगला। जखन कि पैघ-सँ-पैघो घटना दोसर

पक्ष जँ करै छल तँ ओकर कोनो सुनवाइ थानामे नहि होइ छल। जइसँ जहिना थानाक रूखि तहिना ब्लौक-कार्यालयक रूखि एक पक्षीय भऽ गेल। ओही समय वृद्धकेँ वृद्धा-पेंशन आ पढ़ल-लिखल नवयुवककेँ बेरोजगारी-भत्ता भेटब शुरू भेल छल। गामक रूपे विचित्र भऽ गेल। जैठाम साठि बर्खसँ ऊपरबला सभकेँ वृद्धा-पेंशन भेटब छल तैठाम पचीस-तीस बर्खक ओहन लोककेँ सेहो वृद्धा-पेंशन भेटल जे सामन्ती विचारक पृष्ट-पोषक छल, जखन कि साठि बर्खसँ ऊपरबला जँ साम्यवादी पार्टीक परिवारसँ जुड़ल छला तँ हुनका सभकेँ पेंशन नहि भेटलैन। दिन-राति काजक पाछू, माने वृद्धा-पेंशनक पाछू, ब्लौकक माटि चाटि गेला पछातियो वृद्धा-पेंशन नहि भेटलैन। तहिना शिक्षित बेरोजगारक पेंशनमे सेहो भेल। मुदा जे भेल से भेल, एते तँ अनपढ़ो-अनाड़ी लोकक आँखि देखबे केलकैन जे ब्लौक आ थाना किछु खास लोकक छी। आम लोकक नहि छी। आँखिक सोझमे सभ किछु भऽ रहल छल, मुदा कियो रोकनिहार नहि। रोकबो केना करितैन। जैठाम जीवनक वुनियादी प्रश्न सोझामे छेलैन तैठाम तेकरा छोड़ि छोट-छीन प्रश्नमे उलझबो नीक नहियेँ हएत। साम्यवादी दलक जे छला ओ छोट-छीन विवादकेँ नजरअन्दाज करैत किसानक नव चेहराकेँ उजागर करए चाहै छला। समाजक अधिकतर लोक खेतीसँ जुड़लो छला आ जीवनक मुख्य आधार सेहो बनौनहि छला। सरकारी संस्था, माने किसानसँ जुड़ल संस्था, सभ सेहो अपन गतिविधि क्रियाशील रखनहि छल, जइसँ परम्परासँ अबैत अन्न, फल, तरकारी इत्यादिक बीजमे सुधार करैत जहिना किसान दिस बढ़ौलैन तहिना किसानो ओकरा पकैड़ अपन खेती-बाड़ीकेँ मजगूत केलाह। ओना, लखनौर ब्लौकक किछु गामक किसान पहिनेसँ नगदी खेतीसँ जुड़ल छला, माने खेतीक पुरान पद्धतिक अनुकूल मनी क्राप्स (नगदी खेती), जरूर करै छला मुदा तिनका समाजक लोक जाइतिक एक सीमामे बान्हि देने छेलैन। ओ सीमा ई जे अमुख वस्तुक खेती अमुख जाइतिक छी, तँए दोसर जाति ओइसँ परहेज केने हटल छला। ओना, लखनौर ब्लौकक जे पछवरिया-दच्छिनवरिया गाम सभ (पंचायत सभ) अछि, ओ कमलाधारक दुनू दिसक

छी। आइये नहि, जहियासँ कमला धारक बान्ह बनल तहियेसँ जहिना पाइनिक बहावसँ सुविधा भेटल तहिना साले-साल टुटने इलाकाक उपटान सेहो होइते रहल अछि। खाएर जे अछि मुदा एते तँ अछिए जे जइ किसानकेँ जखन जे गर लगै छैन, माने जखन जइ चीजक खेतीक मौका भेटै छैन, तखन तही तरहक फसिल लगा अपन जीवनक भरपाइ करिते छैथ।

कमलपुर गाममे पहिल किस्त, माने सामूहिक ढंगसँ, बोरिंग भेने खेतीमे उछाल आएल। भलेँ सौंसे गामक खेतीमे नहि आएल हुअए, मुदा किछु खेतीमे नहि आएल सेहो नहियेँ कहल जा सकैए। गामक औसतन उपज धानक कट्ठा मन छल, माने कच्ची सेरक मन, जे तीस किलोक बरबैर छल, जेकरा लोक चालीस सेरक मन वा अड़तालीस सेरक मन बुझै छला, तेकर अखन चर्च नहि, अखन एतबे जे जैठाम कच्ची कट्ठा मनक धानक नीक उपज बुझै छला, तैठाम 'पूसा एक्कैस' धान आ 'सोनरा चौंसैठ' गहुम आबि उपजमे चारि गुणाक छलांग मारलक। अखन धरि जे फल-फलहरीक उपज होइ छल तैठाम नव रूपमे एने, माने बीज-गाछकेँ सुधार भेने फल-फलहरीक उपजमे सेहो छलांग लगल। जहिना अन्न, तीमन-तरकारी आ आमक फलसँ अतिरिक्त आनो-आन फल एने गामक सुरतमे नवपन आएल, तहिना किसानक जिज्ञासामे सेहो नवीनता एबे कएल।

उन्नैस साए पचहत्तैर-छिहत्तैर (1975-76) इस्वी अबैत-अबैत कमलपुर गामक चेहरामे लालिमा आएल। अखन धरिक जे गाम छल, माने खेतीक सम्बन्धमे, तइमे नीक उन्नैत भेल। खेतक चहुमुखी उपयोग भेने एकसंग अनेको रूपमे उन्नैत भेल। तेकर अनेको अनुकूल परिस्थिति सेहो बनल।

जहिना पूसा, ढोली, पूसा माने दरभंगा जिलाक, तइ समय दरभंगा जिलाक विभाजन नहि भेल छल, आ ढोली मुजफ्फरपुर जिलाक अन्तर्गत कृषि फार्म खुजल, जइमे किसानकेँ अनेको रंगक समस्याक निदान भेटए

लगल, जइसँ कृषिमे क्रान्ति सेहो एबे कएल। ब्लौकमे कृषिसँ सम्बन्धित एकटा विभागक बढ़ोतरी भेल, जइमे पी.ओ. करिकऽ प्रखण्ड स्तरक ऑफिस खुजल। जे पी.ओ.क कार्यालयक रूपमे काज करए लगल। प्रत्येक गाम (माने पंचायत)मे भी.एल.डब्ल्यू. करिकऽ एक-एक गोटा नियुक्त भेला। जे कृषिसँ सम्बन्धित जानकारी किसानकेँ देबए लगलखिन। प्रखण्ड कार्यालयमे कृषिसँ जुड़ल नव-नव ओजारोक जानकारी आ तत्काल सरकारक अनुदानित रूपमे पूजी सेहो किसानक हाथमे आबए लगलैन। एक तँ हथकरघा रूपमे ओजार तैसंग अनाड़ी किसानक रूपमे चलौनिहार, तँए अनेको बाधा-रूकावट भेबे कएल, मुदा तैयो किसान आगू बढ़ि खेत जोतैक ट्रेक्टर तक गाम लइये अनलैन।

ओना, शुरूमे भी.एल.डब्ल्यू. अन्नमे धान-गहुम आ तेलहनमे तोड़क जानकारियेटाक रूपमे आ सब्सिडीक रूपमे काज करै छला, मुदा पूसा फार्ममे जहिया-कहियो किसान मेला लगै छल तइमे भाग लेबा-ले किसानकेँ सेहो प्रेरित करबे करै छला। फार्म अपन क्षमतानुसार कार्यक्रम करिते छल, जइसँ किसानकेँ किछु-ने-किछु अनेको तरहक लाभ होइते छल। रंग-रंगक नव-नव धान-गहुमक बीज, रंग-रंगक उन्नैतिक किस्मक तीमन-तरकारीक बीज, रंग-रंगक उन्नैत किस्मक फल-फलहरीक बीजो आ गाछोक सुविधा भेटए लगल। जेकर लाभ कमलपुरक किसान उठौलैन। आजुक परिवेशमे कमलपुरमे बिड़ले कोनो अन्न हएत जेकर बीज परिमार्जित रूपमे नहि आएल अछि।

ओना, मंगलदेवो आ रामकिसुनोकेँ विचारधाराक सम्बन्ध नागेन्द्रजी, माने डॉ. नागेन्द्र कुमार झा पैटघाट (लोहना) सँ सेहो भेलैन। दुनू गोटाक आवाजाही, माने जहिना नागेन्द्रजी कमलपुर मंगलदेव आ रामकिसुन ऐठाम अबै छला तहिना रामकिसुनो आ मंगलदेवो पैटघाट जाइ-अबै छला, जइसँ पारिवारिक सम्बन्ध बनि गेल छेलैन। ओना, नागेन्द्रजीक जेठ भाय सेहो साम्यवादी विचारमे रमल लोक छेलाहे मुदा ओ नेपालक सीमामे बेसी रहला, जइसँ जेहेन सम्बन्ध रामकिसुनो आ

मंगलदेवोकेँ हेबा चाही, तेहेन तँ नहि बनि सकलैन, मुदा एते तँ भेबे कएल जे दुनू एक-दोसरकेँ जानए लगला। हुनका संग किछु खास समस्यो छेलैन, कौलेजमे शिक्षक छला, तँए छुट्टियो कम होइ छेलैन जइसँ गामो कम अबै छला। तँए भेँटो-घाँट नहियेँ जकाँ होइ छेलैन। एते तँ अपन माटि-पाइनिक संग सम्बन्ध बनले छेलैन जे जहिना धुमकेतु तहिना डॉ. धीरेन्द्र नेपालक नागरीकता नहि लेलैन। मुदा पिताजी, नागेन्द्रजीक पिताजी स्व. भुवनेश्वर झा गाममे रहि एते क्रियाशील तँ छेलाहे जे सइयोसँ ऊपर रंगक फूलक फुलवारी दरबज्जापर लगौने छला। जहिना ओ (स्व. भुवनेश्वर झा) फुलवारी लगबैमे क्रियाशील छला तहिना बोलियो-वाणी आ बेवहारो छेलैन। जइसँ दिनानुदिन सम्बन्ध बढ़ैत गेलैन आ जीवनक अन्तिम छोड़ धरि बनल रहबे केलैन। जइसँ ओहने सम्बन्ध अखनो छैन।

अखन धरिक जे समाजक रूप-रेखा रहल तइमे हुनकर सभक, माने नागेन्द्रजी सभक, नीक योगदान रहल छैन। अन्न-पानिक मामलामे जे भेल हुअए मुदा फल-फलहरी आ फूलक संग्रह जे हुनका सभक छैन ओ प्रशंसनीय छैन्हे। जे समाजक बीच अखनो धरोहरक वस्तु अछिए। साइयो रंगक नव-नव फूल कमलपुरमे आबि गेल। जे पंचमुखी अपराजित, दुनू रंगक- उज्जरो आ कारियो, कमलपुरक लोक अखन धरि नहि लगौने छला सेहो अपन दुआर-दरबज्जाकेँ पँचमुखी अपराजितसँ सजा लेलैन। तहिना माधवी, रजनी गन्धा, राजवेला इत्यादि फूल गामक फुलवारीमे पसरबे कएल अछि।

तैबीच माने 1974-75 इस्वीक बीच, कमलपुरमे एकटा आरो विचार उठिकऽ ठाढ़ भेल। ओ विचार ई जे जइ देशमे सभकेँ अपन मतो देबाक आ समानताक अधिकार सेहो समानरूपसँ सभकेँ भेटल अछि तइ देशक समाजमे छुआ-छुत बनल रहए से नीक नहि, तँए एकरा बेवहारिक रूपमे बदलल जाए। ओना, बेवहारिक रूप अनैमे अनेको आधारमे दूटा प्रमुख आधार अछि। पहिल समाजक बीच छुआ-छुत, जे खेनाइ-पीनाइसँ लऽ कऽ देहमे भीरब धरिमे छुत छल। ओना, ओहूमे अनेको रूप अछि

जइमे दूटा प्रमुख अछि, पहिल- एकठाम बैस खाएब-पीब, जिनका देहमे भीरै तँ छिऐन मुदा खाइकाल छुआ-छुत आबि जाइए। तइसँ अलग दोसर ई जे जिनकर बनौल वस्तुक उपयोग परिवारो आ समाजोक विशिष्ट काज, माने यज्ञ-जप आ साधारणो काजमे करै तँ छी, मुदा खाइ-पीबैक कोन बात जे देहमे भीरबोसँ छुत लगैए।

अनेको समस्याक बीच फँसल कमलपुरक लोक छुआ-छुतक आधारपर विचार केलैन, एकसंग दू प्रश्न अछि, पहिल- परिवारक गठनमे आन समाजक संग जुड़ल जे जातीय मुद्दा छी, तँए एक समाजसँ हल नहि भऽ सकैए, मुदा एते तँ भइये सकैए जे दुनू एक-दोसराक काज (परिवारसँ जुड़ल) मे संग-साथ तँ भइये सकै छी। समाजमे कम-सँ-कम एते तँ लाभ भइये सकैए जे खेबो-पीबो आ देहमे भीरबोसँ जँ परहेज अछि ओ मेटा जाएत। समाजक एक-एक दुर्गुणकेँ जाधैर समाजसँ नहि मेटौल जाएत ताधैर समाजमे एकरूपता केना औत। आ जाधैर समाजमे एकरूपता नहि औत ताधैर वैचारिक समाजक विचारक धाराक प्रवाह केना प्रवाहित हएत। जाधैर विचारक प्रवाह जीवनसँ जुड़िकऽ, तात्त्विक रूपमे, नहि चलत ताधैर सामूहिक रूपमे समाजक नीक-बेजाएक विचार केना हएत। अही सभ विचार-विमर्शक पछाइत कमलपुरक समाज, जे एक विचारधारामे प्रवाहित भऽ चुकल अछि, तँए कहब दुर्गुणित समस्याकेँ जीवित रखैक विचारक समाज नहि छल, सेहो छले। छेबे टा नहि छल, रंग-रंगक अपन अस्त्र-शस्त्रक संग छल। खाएर जे छल, से छल, मुदा एते तँ भइये गेल छल जे गामक सभ जाइतिक एकटा समूह तँ बनबे कएल, जइमे सभ जाति एकठाम बैस खाएब-पीबसँ लऽ कऽ विचार-विमर्श करब शुरू करबे केने छला। ओना, अखनो देशमे एहेन समाज अछि जे केतौ छुआ-छुत मेटाएल बुझि पड़ैए तँ केतौ कारीखसँ पोतल सिलेटपर मोटका पैंसिलसँ लिखल अक्षर जकाँ देखाइ नहि पड़ैए सेहो बात नहियेँ अछि। खाएर जे अछि से रहह, मुदा एते कमलपुरमे तँ भइये गेल अछि जे सभ जाइतिक बिआहोक बरियाती आ मृत्युक कठिआरी सेहो, सभ पुरिये

रहला अछि। ओना, आगि लगलापर सेहो सभ एकठाम गोलियाइते छैथ।

सभ जाइतिक संगठन भेने, संख्याक चाहे जे नम्बर होइ, एकठाम भेने जहिना जात-बरियात आ भोज-काजमे एकरूपता आएल तहिना जीवनक काज-उदममे, माने जीवकोपार्जनक रूपमे, सेहो आएल। एकठाम बैस खेला-पीलासँ वस्तुक (भोज्य वस्तुक) विन्यास बनबैमे सेहो सुधार भेल। ओना, एहनो अछिए जे शत-प्रतिशत एको जाति ओहन नहि छैथ जिनकर सभ वस्तुक विन्यास अगुआएले छैन। जे सोभाविक सेहो अछिए। अन्न हुअ कि फल आकि तीमने-तरकारी, नीको अछि दबो अछि। तँए जैठाम नीकक उपलब्धि रहत तैठाम ने ओकर उपयोगक ढंग सुधरत, मुदा जैठाम कोनो धड़ानी प्राणकेँ जीवित रखबाक अछि तैठाम तँ विश्वमित्र जकाँ अभक्ष भक्ष सेहो होइते अछि।

सभ जाइतिक बीच कमलपुरमे एक-दोसरसँ जहिना सम्बन्ध बनि रहल छल तहिना ओकर सम्बन्ध भंग करैक अनेको रंगक अस्त्र-शस्त्र सेहो चलिये रहल छल। हीरालाल माने रामकिसुनक पिता, जे जमीन कीनने छला तइ जमीनमे लखन केस कऽ देलकैन। सोझा-सोझी समाजक सभ देखै छल जे झंझारपुरबलासँ हीरालाल जरसीमन दऽ खेत मोल लेलैन। सभ कीनैए, सभ गाममे कीनैए। तैठाम केस किए भेल? तहूमे ओइ खेतकेँ सभदिन हीरेलाल जोत-कोर करैत आबि रहल छला। माने जहिया नहियोँ कीनने छला, तहियेसँ बँटाइ खेती हीरालाल करैत रहैथ।

आने गाम जकाँ कमलपुरोक समाज अछिए। सत्ता अपना नियम-कायदासँ हड़पैए, समाज अपना नियम-कायदासँ हड़पैए। जैठाम मालगुजारी दू साल नइ देने सोल्होअना सम्पैत (खेत) सत्ता अपना मुहेँ हबैक लइ छल तैठाम समाजोक किछु समाज नहि अछि जे नहि हबकैए? सेहो हबैकते अछि। माने ई जे समाजक मुँहगर बाँहुवली लोक, माने गैर-मुनासिव काज करैबला लोक, सेहो सभ-समाजमे अछिए। जेकर सोर (जड़ि) सत्तासँ जुड़ल रहबो करैए आ नहियोँ रहैए। ओना, बीचमे पेटी कन्टैक्ट सेहो अछिए। माने ई जे असल ठीकेदार सत्तासँ जुड़ल रहल आ

अपन शक्तिक अनुकूल अपनो किछु सेना बनाकऽ रखबे करैए। एहेन सेना सभ समाजमे अछिए जे मुँह-दुबरकैं सभ दिन धकियबैत रहल अछि। खाएर जे अछि, कमलपुरो कि आन समाजसँ बाहरक समाज छी आकि अही समाजक समाज छी जे कोट-कचहरीक पैरवीकार बनि अपन जीविका नइ चलौत, आ राशन-कोटासँ अपन राशन-पानी नइ चलौत, आकि एक-एक जमीनकैं तीन-तीन बेर जरसीमन लइ-दइक बीचमानि नहि करत। आकि बिनु अधिकारक जमीन दोसराक नहि हड़पत आकि गाछी-कलमक आम तोड़ि, कटहरबोनीसँ कटहर नहि तोड़ि आनत..? गाछियो-कलमक कि कम जोगदान समाज-ले रहल अछि। पर्यावरणक संग आम सन अमृत फल सेहो दइए आ ताड़-खजुरक संजीवनी रस सेहो बँटिते अछि किने। ओना, आन गाम जकाँ कमलपुर नहियेँ अछि जे बाहरेसँ ताड़क गाछ देखि तड़ीपीबा गाम कहौत। मुदा तँए कहब जे बाड़ी-झाड़ीमे भाँग-धथूरक बोन नहियेँ अछि, सेहो बात नहियेँ अछि, सेहो अछिए। खाएर जे अछि से रहह, जखन गामे छी तखन जँ छइहे, तखन तँ यएह ने बेसी-सँ-बेसी कहब जे आने गाम जकाँ कमलपुरोक भूगोल अछिए। इतिहास भलेँ आन गामसँ भिन्न किए ने हुअए मुदा भूगोल तँ एक्के अछि। ओना, कमलपुरक भूगोलोमे आन गामसँ सेहो भिन्नता अछिए। गाछ-बिरीछ नमहर रहने ठनको बेसी खसिते अछि। आन गामक अपेक्षा कमलपुरमे ऊँचरस जमीनो बेसी अछि आ बान्ह-सड़क सेहो बेसी अछिए, जइसँ अनगौंआँ जकाँ जलकर भरिकऽ घराड़ी बनबैक खगता गाममे नहियेँ पड़ैए।

गाममे किछु लोकक मनोवृत्ति, 1974-75 इस्वीक समय, एहेन रहलैन जे केस-मोकदमाक विषयमे अपनेटा जनै छी बाँकी गामक लोक निपट छैथ। बिनु आधारोक केस-मोकदमा ठाढ़ कऽ कोर्टक जे बेवहार अछि तइ अनुकूल जमीन हड़पा-हड़पी होइते आबि रहल अछि। एहने हड़पनिहार छला लखन झा। वएह लखन झा हीरालालक जमीनपर केश ठाढ़ केलैन। बुझितो छी आ देखतो छीहे जे सोझा-सोझी चोरी भेल मुदा

चोर ताबे चोर नहि भेल, जाबे ओकरा अदालतसँ प्रमाण-पत्र नइ भेटत। ओना, कानूनक नजरिये भलेँ लोक चोर नहि कहौ मुदा समाजक बीच तँ ओ मने-मन चोर मानले जाइए।

संजोग हीरालालक पक्षमे छेलैन्हे। संजोगक माने ई जे खेत तँ हीरालालक घरे लग छेलैन, तैसंग रामकिसुनक प्रभावक भजार सेहो केतेको मोर्चापर, समाजमे भइये गेल छेलैन। ऐसँ पहिने रामकिसुन सिकमी जमीन कब्जा कऽ चुकल छला, तँए मनमे उत्साह सेहो रहबे करैन। हीरालालक जमीनक मुकदमासँ पहिने लखन झा नीक चोट समाजमे खा चुकल छला। माने ई जे एहने फर्जी केशमे दिनेश झा सभ समांगकेँ, माने लखन झाक सभ समांगकेँ, भरि मन डेंगेनौं छला, जमीनो अपने कब्जामे रखलैन आ कोर्टसँ मुकदमो जीत लेलैन। तइसँ लखन झाक मन समाजमे टुटल रहबे करैन, मुदा दुर्गापूजाक पछाइत, माने 1969 इस्वीक पछाइत, नव शक्तिक जोड़ भेटलैन।

कमलपुरक दुर्गापूजासँ पहिने कमलपुरक समाजक रंग-ढंग किछु दोसर रंगक छल, जे बहुत किछु दुर्गापूजाक पछाइत बदलबो कएल आ सुधरबो केबे कएल अछि।

साल भरि पहिलुका, माने 1969 इस्वीमे जे कमलपुरमे दुर्गापूजा शुरू भेल, तइसँ साल भरि पूर्व, माने जखन स्वतंत्र देश एक्कैस बर्खक वयस्क मताधिकार प्राप्त कऽ नेने छल, तहियाक घटना छी। खजुरबोनीसँ कमलपुर बरियाती आएल। नीक अजगज बरियातीक छल। नीक अजगज अनैक पाछू पैछला कनारि, कारण छल। कारण ई छल जे खजुरबोनी आ कमलपुरक दूरी आठ कोस, पुरना माइलक हिसाबसँ बीस माइल आ अखुनका किलोमीटरसँ करीब तीस-पैंतीस किलोमीटर अछि। जातीय आधारपर खजुरबोनीबलाकेँ तड़बोनीबलासँ भैंसा-भेंसीक कनारि चलैत छल। जे पैछला तीनू-चारू चुनाव (एम.एल.ए.क) मे बढ़ैत गेल। एकबेर खजुरबोनीबलाकेँ जूता पहिरने तड़बोनीबला दरबज्जाक आगूक रस्तापर चलैत देखलैन तँ हुनका दरबज्जापर बजा कान पकड़बौलैन जे जूता

हाथमे उठा गामक सीमा पार करब। तत्काल तँ खजुरबोनीबला अपनाकेँ नि:सहाय बुझि तड़बोनीबलाक विचार मानि लेला, मुदा मनमे आगि लागि गेलैन। तेकरे जवाबमे खजुरबोनीबला अपन जातीय संग्रह करैत ओही दरबज्जापर, माने जइ दरबज्जापर कान पकैड़ जूता हाथमे लऽ गामक सीमा पार करैक आदेश मानने छला, तीन-गैरह माने तीन तरहक नाच नटुआकेँ नचबए लगला। साएसँ ऊपर टायरगाड़ी आ बालि-गाड़ी बरियातीमे छल। बरियातीक संख्या सात साएसँ ऊपर, जइमे जूता-मौजा पहिरने, छत्ता हाथमे नेने, पएरे बेसी बरियाती छला आ अधिकांश गाड़ीपर खाइ-पीबैक वस्तु-जातसँ लऽ कऽ बरतन-बासन छल। अपन समेना, अपन कुरसी, ओना दरबज्जाक आगू जगहो बेसी छल, लगातार तीन दिनक सभ संकल्प केलैन जे जहिना हमरा समाजक लोककेँ कान पकैड़ आदेश मनबौलैन तहिना तड़बोनीबला गौंआँकेँ सेहो मनाएब। तीन दिन तक बरियातीकेँ रोकि नटुआ नचबैत रहब। खजुरबोनीबलाक बेवहारसँ तड़बोनी दलमलित भऽ गेल। खजुरबोनीक सइयो नवयुवक गामक सभ रस्तापर घुमि सेहो रहल छला। संजोग नीक रहल जे गाममे मुसरी झा पंडीजी छला। मुसरी झा पंडीजीकेँ गाममे सभ दिन कोनो-ने-कोनो बेवहारिक चालिक मादे किनको-ने-किनकोसँ झगड़ा भइये जाइन। जइसँ गाममे पंडीजी असगरे अपन विचारक रहि गेल छला। मुदा तेकर गम पंडीजीकेँ मिसियो भरि नहि छेलैन। सभ दिन नियमित गीता पढ़बो करैथ आ मानितो तँ छेलाहे जे गीता शास्त्र नहि जीवनक अस्त्र छी। जखने मनुक्ख अपन आमद-खर्चक योग क्रियासँ जीवनक योग जोगि-जोगि अस्त्र हथिया लेता तखने ने हथिया नक्षत्र जकाँ मौसममे बदलाउ आनए लगता। जइसँ जीवनक मौसम मासूम बनि मस्तसँ मस्तीमे चलए लगतैन।

समाजक, माने तड़बोनीक, जे मुँहगर-कन्हगर लोक सभ छला ओ सभ विचार केलैन जे गामक जे अखन दलमल स्थिति बनि रहल अछि, ओ बिना मुसरी झासँ नहि सम्हरत। तँए सभ कियो चलू आ हुनका पकैड़ भार देबैन तखने गामक कल्याण हएत। समाजक लोककेँ दरबज्जापर देखिते

पंडीजी बजला- "किमहर सुर्ज उगल जे सबकेँ थहाथही करैत दरबज्जापर देखै छी..!"

ओना, पंडीजीकेँ गामक सभ जानकारी भइये गेल रहैन। मुदा अपनाकेँ समाजसँ अलग राखि चलैबला मुसरी झाकेँ मिसियो भरि गम नहि रहैन। तँए निर्भीक जकाँ बाजल छला।

मुसरी झाक बात सुनि सभ-सभक मुँह देखए लगला, किनको किछु बजैक साहसे ने होइन जे किछु बजता। पंडीजी दोहरबैत बजला-

"समाज गलती स्वीकार करू, तखन भार उठा सकै छी।"

पंडीजीक साहस देख, माने मुसरीझाक विचारक तजगरी देखि ढोलबा झा बजला-

"पंडीजी, गामक भार अहाँ असगरे उठा लेब?"

पंडीजीकेँ अपन अध्ययन-मननपर एतेक बिसवास बनले छेलैन जे एकटा मनुक्ख अगहनमे केतौ सौंसे गामक खेतक धानक बोझ थोड़े उघि सकैए मुदा विचारधारा तँ ओहन शाश्वत गुण छीहे जे एक गामक धानक कोन बात जे सौंसे दुनियाँक खेतक धानक बोझ उघि सकैए..! निर्भीक होइत मुसरी झा ढोलबा झाकेँ जवाब देलैन-

"जँ सौंसे गौंआँ मिलि भार देब तखन किए ने गामक भार असगरे उठा सकै छी।"

पंडीजीक विचारक प्रवाहमे ढोलबा झा बिना दोसर-तेसरसँ विचार नेनहि, अपने फुरने बजला-

"अहाँकेँ सौंसे गामक भार भेटल, जा कऽ सम्हारि दियौ।"

ओना, पंडीजीकेँ मनमे खटकलैन जे ढोलबा झा बुड़िवान लोक अछि, एकरा गप्पक मद्दी देब उचित नहि, मुदा अपनहि दोसर मन प्रेरित केलकैन जे असगरे तँ ढोलबा नहि अछि, संगमे आरो मुड़हन-मुँहगर लोक सभ सेहो छथिन। तँए जखन सभ संगे दरबज्जापर पहुँचलैन तइसँ पहिनहि किए ने सभ मिलि विचारि एकटा बजनिहार बनौलैन। ओना,

पंडीजीक मन ईहो कहैन जे अखन तकक जे समाज (गामक समाज) सभ रहल अछि ओ ओहन रहल अछि जेकर डोराडोरि या तँ तइतेँ जकाँ सक्कत मूज जकाँ अछि या तँ काँच सूत जकाँ अछि, काँच सूतक माने भेल जे खुस-खुस टुटैए। पंडीजीक मनमे फेर अपने उठलैन जे मनुक्खोक तँ अपन मनक वेग होइए, ओही वेगानुकूल गामक लोक दबि रहला अछि आ अनगौंआँ बढ़ि रहला अछि। बरियातियोक तँ सभ ओहने नहि छैथ जे समाजक मान-अपमानक महिरमकेँ समान ढंगसँ मानैत होइथ। हो-न-हो कहीं कोनो एहेन घटना ने घटि जाए जइसँ दुनू समाजक नाक-कान कटि जाए। तँए नीक हएत जे जेते जल्दी सम्भव हुअए तेते जल्दी अनगौंआँ सभ गामसँ आदरपूर्वक बहरा जाइथ। सभकेँ, माने समाजक सभकेँ, आगू बढ़ैसँ रोकैत मुसरी झा बजला-

“जखन हमरा ऊपर गामक भार आएल, तखन ओकर निमरजना करब अपन दायित्व बनैए, अहाँ सभ अपना-अपना ऐठाम जाउ, घन्टा भरिक पछाइत, माने एक घन्टा बीतलापर, सभक कानमे नीक-सँ-नीकतम, सभ समाचार पहुँच जाएत।”

हाँइ-हाँइ कऽ मुसरी झा तमाकुल चुना मुँहमे लेलैन आ छोट पएर रहनौं, माने शरीरक कदक हिसाबसँ, हाँइ-हाँइ डेग उठा बरियातीक जे अगुआ कर्ता छला, माने जिनकर बेटाक बिआहक बरियाती सजल रहैन, तिनका लग पहुँचला। पंडीजीकेँ देखि किनको मनमे कोनो तरहक शंका किए उठितैन। इलाकाक लोक मुसरी झाकेँ जनैत जे घर बनबैक लूरि, छोट जानवर रहितो मूसकेँ जहिना चौपायामे बेसी होइ छै तहिना मुसरी झा पंडीजीकेँ सेहो छैन्हे। आदरपूर्वक हिम्मतलाल, जिनकर बेटाक बिआह रहैन, बजला-

“पंडीजी, अपनेक जे आदेश होइ, मानि लेब।”

अपन भारीपन देखि पंडीजीक अपने मन कहलकैन जे बरियातीकेँ बिना किछु पुछने-आछने धाँइ-दे किछु बाजि देब उचित नहि, तँए मुँह उठा बरियाती दिस केलैन जे जिनका जे किछु हेतैन से मुहेँपर कहता आ मुहाँ-

मुहीं ओकरा विचारिकऽ मुड़ियबैत आगू बढ़ब। बरियातीक बीचसँ फोचाइ बजला-

"चुनावमे इलाकाक भोँट लूटि कऽ अहाँक गौंआँ अनै छैथ से?"

मुसरी झा बजला-

"आब नइ अनता। आगू देखैत अहूँ सभकेँ समयपर पहुँचब अछि, तँए समैयक उपयोग सभ मिलि करू।"

कहि मुसरी झा उठि गेला। मुसरी झाकेँ उठिते हिम्मतलाल हाथक इशारासँ नटुआकेँ नाच बन्न करैक आदेश देलैन। सभ अनगौंआँ बरियाती अपन-अपन रास्ता पकड़लैन।

अनगौंआँ बरियातीकेँ गामक, तड़बोनीक सीमा टपिते, गौंआँ सभ नमहर साँस छोड़लैन। मुदा पंडीजी, मुसरी झाक, मनमे तेसरे विचार नचैत रहैन। ओ नचैत रहैन जे गौंआँ हमरा अगुआ कऽ पहिलुका घटनामे जे बेवकूफ बनौता से वरदास कऽ लेब, ओ बीतल दिनक घटना भेल, मुदा गामक जे चौक-चौराहाक हीरो सभ अछि ओ हमरे विचार मानत। आ जँ से मानबे ने करत तखन अपने किए गोला-बरदक कीदैन सेवैक लोभमे फँसब। फेर लगले अपने मन मुसरी झाकेँ कहलकैन, अखन तक जे किछु भेल ओ बीतल दिनक घटना भेल, मुदा वर्तमानो आ वर्तमानपर ठाढ़ भविष्यो तँ आगूमे अछि, तइले जँ अपन समाजकेँ मुड़िया कऽ बाटपर नहि आनब तँ ओ आगूक अपमान हेबे करत किने। तँए नीक हएत जे किए ने अनगौंआँक बीच, माने आन समाजक बीच, अन्तर्राष्ट्रीय कानून जकाँ, जे सामाजिक सम्बन्ध होइए, तइ अनुकूल अपन समाजकेँ सूत्रवद्ध करैत आगू बढ़ी..! ऐठाम अबैत-अबैत माने विचार करैत-करैत, मुसरी झाक मन मानि गेलैन जे सम-सामयिक यएह बाट पकड़ब नीक रहत।

तड़बोनीसँ जखन खजुरबोनीक एक-एक बरियाती सीमासँ बाहर भेल तखन गाछपर जे नुकाएल सभ छल, माने अनगौंआँ (खजुरबोनीबला) लोककेँ देखि जे डरे गाछ सभपर नुका गेल छल, सेहो सभ उतैर-उतैर समाजक बीच आबि समदिया जकाँ समाचार परसए

लगल। परसए ई लगल जे हम आमक गाछपर चढ़ि सभ लीला देखै छेलौं, तँ कियो कहैत जे हम शीशो गाछपर चढ़ल देखलौं जे खजुरबोनीक एक-एक बच्चा-बुच्ची तक सीमा टपि गेल।

बिनु बजौले सौंसे गामक लोक, माने तड़बोनीक लोक, मुसरी झाक ऐठाम सम्बाद, माने मुसरी झा आ खजुरबोनीबलाक बीच जे विचार भेल छेलैन, तइ सुनैले लोकक थहाथही हुअ लगल। लोकक भीड़ देखि मुसरी झाक अपने मन घुरिया-फिरिया लगलैन। जेमहर तकैथ तेम्हरे ओझरी-पर-ओझरी देखि पड़ैन। ओझरीकेँ सोझरबैक कोनो गरे ने देखैथ।

पंडीजीक मनमे उठलैन जहिना समाजक सभ बिनु विचारले एकठाम गोलिऐला अछि तहिना विचारसँ तँ तामल खेतक गोला जकाँ जमीनक ऊपरका परते पतरा गेल अछि। जैठाम ऊपरक परते पतरा गेल अछि तैठाम किछु करब आ बाजब धिया-पुताक खेल थोड़े छी। पंडीजीकेँ गुमसुम देखि टेंगरलाल बाजल-

“पंडीजी, की विचार केलौं से हमरो सभकेँ कहू।”

पंडीजी मने-मन विचारैथ जे मकैक ओरहा नइ ने छिऐ जे खोंइचाक कोनो परिचये नहि रहत, लाबाक संग सभ लाबे लाबा भऽ जाएत। समाज छी किने, दाइलिक खोंइचा जकाँ तेते मोट खोंइचा अछि जे बिना जातमे दरड़ने काज केना चलत। से हएत ऐ अगुताइमे..! भरमे-सरम पंडीजी चुप भऽ गेला। मनमे उठलैन- एक गामक समाजकेँ दोसर गामक समाजक बीच जे कथा-कुटुमैती, भोज-भातक संग खेतो-पथार आ नाचो-गानक सरोकार अछि, ओ केना समयानुकूल चलैत रहत, ओ ने एक दिनक विचार छी आ ने एक काजक फल छी। वैज्ञानिक विकास एते जोड़ मारि देलक अछि, जे दुनियाँक मंचपर पैघ-सँ-पैघ कम्पनी (पूजीपति) राता-राती दनदनाइत ठाढ़ भऽ जाइए आ पैघ-सँ-पैघ कम्पनी राता-राती धाराशायी भऽ दिवालिया सेहो भइये रहल अछि। अपन मनकेँ अमन करैत मुसरी झा बजला-

“भाय लोकैन, अनगौआँकेँ देखि तेना गाम दलमलित भऽ गेल जे

पत्नीक हालत बेहोशीक भऽ गेल छैन। तँए पहिने ओ सम्हारि लिअ दिअ। गप-सप्प केतौ पड़ाएल जाइए, पछातिये हेतइ।”

पड़ोसियाक बिमारीक नाओं सुनिते, जहिना समाजक लोक एका-एकी सभ अपने बिमार हुअ लगैए, तहिना पंडीजीक पत्नीक बिमारीक बात सुनि बिमरियाह बनि सभ ससैर गेला।

तड़बोनीबला घटनाक दू सालक पछाइत कमलपुरमे दोसर घटना सेहो बरियातीएमे भेल। दोसर सालक दुर्गापूजा छह मास आगू हएत आ पहिल सालक छह मास पहिनहि भऽ गेल छल।

भेल ई जे कमलपुरबलाक बेटीक बिआह घुसकीपट्टीबलाक बेटासँ ठीक भेल। चारि कोसक बीचक दूरीमे दुनू गाम अछि। सभ दिनसँ एक गामक कथा-कुटुमैती दोसर गामसँ होइत आबि रहल अछि, अखनो होइए। से अधिकांश जाइतिक बीच होइए। मुदा कमलपुर जकाँ घुसकीपट्टी नहि अछि। जाइतिक संख्याक हिसाबसँ गामक वर्चस्व घुसकीपट्टीमे अछि, जहिसँ अनगौंआँक नजैरमे गाम नीको अछि आ अधलो तँ अछिए। नीक भेल ई जे जइ जाइतिक वर्चस्व छैन, ओइ जाइतिक लेल गाम नीक अछि, आ जइ जाइतिक वर्चस्व नहि अछि, दबल-दबाएल अछि, ओइ जाइतिक गाम अधला भेल। एहेन गाम घुसकीए-पट्टीटा नहि अछि, आनो-आन अनेको गाम अछिए।

ओना, घुसकीपट्टीबलाक संग कमलपुरबलाकेँ दोसरो सम्बन्ध अछि, ओ अछि जतिआरे भोज। एक्कैस गामक जे एक जाइतिक जवार अछि, जेकरा ‘सभा’ सेहो कहल जाइए, ओ सभ जाइतिक नहि अछि। तेकर कारण अछि जे कमलपुरक किछु जाइतिक लोक जे अपनाकेँ नीक कुल-मूलक बुझै छैथ आ घुसकीपट्टीबलाकेँ छोट कुल-मूलक बुझै छैथ, तँए ने कथा-कुटुमैती होइ छैन आ ने जवारी आकि सभैती भोजे होइ छैन। ओना, कमलपुरक किछु जाइतिक सभैतियो आ जवारियो भोज होइते छैन, किए तँ ओ सभ अपनाकेँ एक स्तरक जाति बुझै छैथ। खाएर जे अछि ओ कमलपुरबला जनता आकि घुसकीपट्टीबला जनता, तइसँ

आमजनकेँ कोन सरोकार छैन। तहूमे जखन दुनू गामक बीच कथो-कुटुमैती आ भोजो-भात होइते अछि तखन अनेरे चाउरमे फाड़ा बीछब नीक नहियेँ हएत।

घुसकीपट्टीक शुभकलालक बेटाक बिआह कमलपुरक जीवनलालक बेटीक संग ठीक भेलैन। शुभकलालक बेटा बी.ए. पास, मुदा जीवनलालक बेटी स्कूलक आँखियो ने देखने। औझुका परिवेशो नहियेँ छल। लड़कीक शिक्षा समाजमे दशांसोसँ कम छल। सेहो दशांस किछु खास जाइतिक बीच छल, बाँकी जाइतिक बीच नहियेँक बरबैर छल। गोटि-पङरा कियो-कियो बहरबैया, बहरबैयाक माने भेल बाहरमे नोकरी करैबला, बाहरेमे परिवार राखि अपन बेटीकेँ थोड़-थाड़ पढ़बै-लिखबै छला। तँए बिआह ठीक होइकाल पढ़ै-लिखैक प्रश्ने ने उठल।

ओना, जीवनलालक मन भीतरे-भीतर खुशीसँ चपचपाइत रहबे करैन जे पढ़ल-लिखल बेटा तुल्य जमाइयो हएत आ पढ़ल-लिखल पति संग रहने बेटीक भविष्य सेहो नीक रहत। तँए नीक जकाँ बेटीक बिआहकेँ सम्पन्न करैक अछि। औझुका जकाँ लेन-देन, माने नगद-नारायण, सेहो सभ जाइतिक रोग नहियेँ बनल छल। किछु खास जातिमे जरूर चलैनमे आबि गेल छल मुदा से जीवनलालक जातिमे नहि आएल छल। दुनू गौंआँक बीच बरियातीक जखन चर्च उठल तखन जीवनलाल पाभैर सेरसों आनि शुभकलालक आगूमे राखि बजला जे एकरा गनि लेब आ तइ हिसाबे बरियाती आएब।

सीमाकातक, दू देशक, गाम घुसकीपट्टी छीहे। लड़का ले, माने बेटाकेँ बिआह करैले, एकटा पालकी केलैन। गामक बाजामे पीपहीक जगह शहनाई लऽ लेने छल, तँए शहनाई बाजा सेहो केलैन। गाममे मात्र तीनटा टायरगाड़ी आ सोलहटा कठही गाड़ी अछि, समाजक बीचक सवारी छी, तँए समाजक काजकेँ सभ महत्व दैते छैथ, तँए सामाजिक काजकेँ समाज बनि एते तँ निमाहबे करै छैथ जे बिनु भाड़े-भुड़ीक सेवा करै छैथ।

ठठगर बरियातीक बेवस्था शुभकलाल केलैन। जहिना शुभकलाल

बेटा बिआह-ले अपन अर्पण केलैन तहिना जीवनलाल सेहो समाजक प्रतिष्ठाकेँ पाशापर उताइर देलैन। अपना जनैत शुभकलाल सतर्की केलाह जे बिआहसँ दस दिन पहिनहि जीवनलालकेँ समाद पठा देने छेलखिन जे एक जाइतिक बरिआती नहि, समाजक अनेको जाइतिक लोक बरिआतीमे रहता।

जहिना इशारामे शुभकलाल समाद पठौलैन तहिना जीवनलाल मने-मन बुझि गेला जे सभ जाइतिक बरिआती औता तँए सभ तरहक बेवस्थो राखबक बेवस्था कऽ लेब। जहिना राष्ट्रीय स्तरपर कोनो कार्यक्रम होइए आ ओइमे जहिना सभ तरहक खेबो-पीबोक आ रहबोक बेवस्था होइए तहिना करए पड़त। नहि तँ बुझिते छी जे जहिना राष्ट्रीय स्तरपर कियो तेतैरकेँ अखाद्य भोज्य विन्यास बुझै छैथ तँ कियो तेतैरकेँ भोज्यक प्रमुख विन्यास नहि बुझै छैथ सेहो बात नहियेँ अछि। गामक समाजकेँ आँकि जीवनलाल विचार-विमर्श करए मंगलदेव ऐठाम पहुँचला कि रामकिसुनकेँ सेहो बैसल देखलैन।

दुनू गोरेकेँ माने मंगलदेवो आ रामकिसुनोकेँ देखि जीवनलाल बजला-

“शुभ सगुण बना चलल छेलौं, जे एक्केठाम दुनू भूप भेट गेला।”

जीवनलालक बात सुनि मंगलदेव मने-मन विचारए लगला जे अपना ऐठाम भटियाह बोलीक चलैन सभ दिन रहल अछि, तँए भरिसक जीवनलाल बजला। बिना किछु बजने चुपे रहला। भटियाह बोलीक माने भेल चाहे बढ़ाकऽ बाजब, चाहे घटाकऽ बाजब। जेना अपना ऐठाम उत्तम गाम ननौरकेँ कहल जाइए। मुदा तइसँ पहिने ईहो ने सोचि लिअ पड़त जे गामक माने भेल भौगोलिक स्वरूप। जे माटि-पानिसँ जुड़ल अछि। तँए ननौरक जमीनक पाइनिक लेयर (सतह) केतेक निच्चाँमे अछि, तहूक चर्चा ने करितैथ। जँ लोकक हिसाबे गामक नामकरण हएत तँ ओ गामक समाजक रूपमे हएत।

ओना, एक्के चटसारक लोक तीनू गोरे, माने मंगलदेवो, रामकिसुनो

आ जीवनोलाल छथिए, तँए गप-सप्पक क्रममे कम-बेसी बजबे करै छैथ। रामकिसुन बजला-

“जीवन भाय, अहाँ अपने किए तेसर भूपसँ नाम छिपेलौं?”

वातावरण शान्तिक दिशामे बढ़ल। जीवनलाल बजला-

“मंगल भाय, सभ जाइतिक लोक बरियातीमे रहता तँए..?”

बिच्चेमे रामकिसुन टोकैत बजला-

“सभ जाइतिक होथि आकि एक जाइतिक होथि, बरियाती बरियाती भेला। केतबो आबैथ ओते दरबज्जा तँ गाममे अछिए, तइले चिन्ते कोन अछि।”

ओना, जीवनलालक मनमे खट-खुट सेहो उठिये रहल छेलैन। उठि ई रहल छेलैन जे बजैकाल ने सभ बजै छैथ जे जाति-पाँजि बुढ़िया फूसि छी, मुदा ओ बुढ़िया केते फुइसिक जाल पसारने अछि, से तँ एम.एल.ए; एम.पी.क चुनावमे देखिते छिऐ। जीवनलाल गमारक गोनैर जकाँ दुनू कात चीकने भलेँ देखैथ जे माघमे ओढ़ियो लइ छी आ जेठमे बीछेबो तँ करिते छी। तँए अपन विचारकेँ मनेमे दाबि मंगलदेव बजला-

“खेबो-पीबाक कोनो भारी चिन्ता नहियेँ अछि। दहीक भार मकशूदनकेँ, दोकानक समानक भार सिंहेसरकेँ आ भानसक भार मनोहर आ स्वागतक भार सौंसे समाजक ऊपर भेलैन। सएह ने।”

आजुक परिवेशमे तँ सभ किछु खेबा-पीबासँ लऽ कऽ रहैक समेनाक संग बेपारी खुएनिहारो भेट जाइए मुदा 1970-71 इस्वीक समय तँ से नहि छल।

बरियाती आएल। दलाने-दलान बइसैक ओरियान भेल। तीनटा दरबज्जापर अपन-अपन विचारानुसार बरिआतीक बेवस्था भेल। अखुनका परिवेश नहि छल, परिछन कए लड़काकेँ आँगनक मड़बापर लऽ गेला पछाइत महिलाक बीचक प्रक्रिया शुरू होइए। समाजक खगता मात्र बरियातीक स्वागतमे होइए। तीनू दरबज्जापर शरबत परसा गेल, जलपान

बँटा रहल छल कि बिच्चेमे हल्ला भेल। हल्ला लग पहुँचते मंगलदेव बजला-

"किए हल्ला होइए..!"

देवनाथ बाजल-

"हमरा दुनू जातिकेँ दूटा दरबज्जापर रहैक ओरियान कऽ दिअ।"

मंगलदेव पुछलखिन-

"दुनू मिला दसे-एगारहे गोरे छी, तखन दोसर दरबज्जाक कोन खगता अछि?"

दुनू दू जाइतिक, एक पालकी उठबैबला, दोसर शहनाई बजबैबला, तइ बीचक विवाद छल।

ओना, मंगलदेव ऐ बातकेँ जनै छला जे बरियातीक मनोवृत्ति सदिकाल रहै छैन जे गामकेँ घिनाबी। ओना, समाजो, माने जइ गाममे बरियाती अबैए, तइठामक लोक अपन मान-मर्यादाक विचार करैत सदिकाल शान्तिक रूप पकैड़ तखन फड़त-फुलाएत जखन शान्तिक वृक्षक जे जड़ि अछि तकरा पकैड़ रोपबो करत आ सेवा-बरदास करैत फड़-फूलक आशा मनमे संजोगने रहत। मुदा तइले तँ पात्र चाही, अखन जेहेन पात्र समाजमे अछि तइमे सुपात्र-कुपात्र बुझब असान नहियेँ अछि। फेर लगले अपने मनमे, माने मंगलदेवक मनमे, भेलैन जे जात-बरियातमे कनी-मनी चकचूक सभ गाममे होइते अछि, हमरो गाममे हएत, सएह ने हएत। धारक बाढ़ि जकाँ जहिना औत तहिना जाएत, तइले लोक चिन्ते किए करत। भेल तँ एतबे ने जे अपना ऊपर जेहेन भार पड़त, तेकरा इमानदारीसँ निमाहैक अछि। दोहराकऽ मंगलदेव बजला-

"घरवारीकेँ, माने जिनका ऐठाम बरियाती एलैन अछि, जँ हुनका दोसर दरबज्जा नहि होनि तखन केना हएत?"

जेना देवनाथकेँ मनमे विचारले रहैन आकि बुझले-गमले रहैन तहिना बजला- "दरबज्जा नहि छैन तँ की हेतइ, हम सभ बाँसक बीटक

छाहैरमे वा गाछी-कलमक छाहैरमे रहब।"

देवनाथक बात सुनि मंगलदेव निरुत्तर भऽ गेला, किए तँ मनमे ईहो उठए लगलैन जे एते बरियाती-ले दरबज्जा अछि आ पान-छह गोरेले की नहि अछि। तइ बिच्चेमे जियालाल बाजल-

"मंगल भैया, हमर दरबज्जा खालीए अछि, चलै चलू।"

लखन झाक मुकदमामे जेते शबूतक दम नहि रहैन, तइसँ बेसी दम माहौल (वातावरण) बनबै पाछू विरोधी, रामकिसुनक विरोधी लगि गेला। जहिना तीन बजे भोरमे कोनो बोनक नढ़ियाक आवाज उठिते बोन-बोनक नढ़िया आवाज दिअ लगैए तहिना लखन झाक पक्षमे गाम-गाममे आवाज उठए लगल जे लखन झाक पुर्वजेसँ ओ जमीन आबि रहल छैन।

दुष्ट सोभावक लोक जहिना अपन पाइ खर्च कऽ दोसराक पोखरिक माछ नष्ट करैए, अपन पाइ खर्च कऽ दोसराक घरमे पेट्रोल छीटि जरबैए तहिना अपन पाइ दोसराकेँ उजाड़ैमे नहि लगबैए सेहो बात नहियेँ अछि...। खाएर जे अछि मुदा एते तँ रामकिसुनक मनमे घर केनहि अछि जे जोड़ू जमीन जोरकेँ नहि तँ केकरो औरकेँ। जँ अपन सभ शक्ति लखन झा ऐ जमीनक पाछू लगबैले तैयार अछि तँ हमहूँ अपन सभ शक्ति ऐ पाछू उसरैग देब। आन गामक लोककेँ ढोल पीटने की हएत। बरियाती कतौक हुअए गाइन रहत गामेकेँ।

ओना, अखन तकक जीवनमे रामकिसुन कोट-कचहरी नहि देखने छल। मात्र 6-7 बर्ख मैट्रिक पास केना भेल छेलइ। गामक लोकक मुहेँ अनेको खिस्सा-पीहानी कोर्ट-कचहरीक सुनियेँ चुकल छल जे केना कोर्टमे चीतसँ पट होइए आ केना पटसँ चीत। अखन तक जे समाजक ओहन लोक, जे कोर्ट-कचहरीक काज करैत आबि रहला अछि, से सभ लखन झाक शूर-मे-शूर मिला रामकिसुनक विपक्षमे अपन वक्तव्य जोर-शोरसँ प्रसारित कइये रहल छला।

संजोग बनल, रामकिसुन डटिकऽ जमीनसँ लऽ कऽ कोर्ट-कचहरी तक, जी-जानसँ तैयार भऽ गेल। गामक नवयुवक सबहक बीच

रामकिसुनक नीक पैठ बनियेँ चुकल छल, तँए साहसक संग रामकिसुन मैदानमे डटिकऽ उतैरिये चुकल छल। अखन धरि खेतक उपज सेहो रामकिसुने प्राप्त करैत आबि रहल छल। बारह सालक कोर्टक लड़ाइक पछाइत रामकिसुनकेँ कोर्टसँ पक्षमे डिगरी भेटल। अपन जीवनक सम्पैतिक (जमीनक) पहिल मुकदमा जितला पछाइत रामकिसुनक प्रभाव जहिना नवयुवक सबहक बीच बढ़ल, तहिना इलाकाक मुकदमावाज सभपर सेहो पड़ल।

ओना, रामकिसुनक जमीनक डिगरीसँ ओते लोक प्रभावित नहि भेला जेते लोक रामकिसुनक प्रभाव समाजमे बढ़ैसँ भेला। सभ रंगक, माने सभ स्तरक, लोक समाजमे रहिते अछि, तँए कमलपुरो ओइसँ अलग गाम नहियेँ अछि। एहनो लोक तँ गामक समाजमे छथिये जे अनेरो रस्तापर अमतीकाँटक गाछ रोपिये दइ छैथ। रामकिसुनक विरोधमे एकटा नवगठित समाज उठिकऽ ठाढ़ भेल, जे कोर्ट-कचहरीक पैरवीसँ लऽ कऽ मुकदमाक खर्च तकक भार उठा लेलैन। कोर्टो-कचहरी तँ बुझले अछि जे कोनो नामक (बेकतीक नाओं) एक अक्षरकेँ सुधार करैमे तीस बर्ख, चालीस बर्ख लगिते अछि, तैठाम तँ जमीनक प्रश्न अछि, पचासो-साठि बर्ख लगबे करत। भेल तँ रामकिसुनकेँ आर्थिक क्षतिसँ लऽ कऽ कार्यक्षेत्रकेँ सेहो प्रभावित करब अछि। नीचला कोर्टक फैसलाकेँ ऊपरका कोर्टमे लखन झा बढ़ौलैन।

मंगलदेवक संग रामकिसुनक प्रभावमे जेना एकटा नव शक्तिक संचार भेल। ओ भेल जे जे रामकिसुन कोर्ट-कचहरीक आँखि नहि देखने छल, से रामकिसुन केहेन-केहेन कचहरिया भूपकेँ अलग-चीत फेक देलकैन। अपन-अपन समस्या लऽ कऽ समाजक, माने कमलपुर गामक, नव पनपल साम्यवादी विचारक नवयुवक सभ उठि-उठि ठाढ़ भेला। समाजो तँ बोनाएल अछिए। बोनाएलक माने भेल जे अखन धरिक जे समाज रहल अछि ओ हजारो बर्खक गुलामीक बीचसँ जन्मल पुष्पित-फलित रहबे कएल अछि। जइसँ रंग-बिरंगक हजारो समस्या समाजक

विघटनकेँ पकड़नहि अछि। तहूमे समस्याक एहेन गुच्छित रूप रहल अछि जे जेकरा बेराएब कठिन अछिए। एक दिस जहिना जाति-जाइतिक बीच तहिना जाति-जाइतिक बीचक बीच एते दूरी बनले अछि, जे एक जाति रहितो एक-दोसराक बीच ने बेटी-बेटियारए होइए आ ने एक पाँतिमे बैस खाएब-पीब। तैबीच एकटा आरो बात सेहो अछि जे कमलपुर ओहन गाम अछि जइमे एक्के जाइतिक अनेको कुल-मूलक रहने, एते दूरी बनले अछि जेना एक-दोसर जाइतिक बीचक अछि।

हजारो समस्या समाजक बीच रहितो कमलपुरक नवयुवकक बीच एते चेतना तँ जगिये गेल अछि जे जहिना जाइतिक विभाजन अनेको रूपमे अछि तहिना साम्प्रदायिक सेहो अछिए। से सभ बुझि रहल छी। तँए दुनूक बुनियाद पकैड़ किए ने मनुक्खकेँ मनुक्खक सीमापर आनैक जे हुनकर जीवनक मूल समस्या, माने जइ समास्याक समाधान भेला पछाइत हुनकर जीवन सही दिशामे आगू बढ़तैन, जँ तेकरा पकैड़ जाधैर निर्मूल नहि कएल जाएत ताधैर समाजक कल्याण नहि हएत।

मंगलदेव आ रामकिसुनक अगुआइमे समाजक (कमलपुरक) सइयो नवयुवक एक विचारधाराक संग जुड़ल छेलाहे, तैपर रामकिसुनक मुकदमाक डिगरी सबहक विचारो आ मनोकेँ सक्कत बनाइये देने छेलैन। जइसँ निर्भीकतामे सेहो बढ़ोतरी भेबे केलैन। साले-डेढ़ सालक बीच दर्जनो मुकदमो समाजमे उठिकऽ ठाढ़ भऽ गेल। जखन मुकदमा ठाढ़ भेल, तखन कोर्ट-कचहरीक पैरबी करबसँ लऽ कऽ जहल तकक अनुभव नवयुवककेँ हुअ लगलैन।

जहिना विरोधी, माने साम्यवादी विचारक विरोधी, विचारक विरोध करैत रहला तहिना साम्यवादी विचारक लोक सेहो अपन नव-नव कलेवरक संग आगू बढ़िते रहला। जइसँ समैयक संग जीवनमे बदलाव आबए लगलैन। माने सामन्ती विचारधारो आ जीवनो एकाएकी टुटि-टुटि खसए लगल, जैठाम नव समाजक उदय सेहो भेल। ओना, सोल्होअना धाराशायी हएब कठिन अछिए, किए तँ समाजक विचारधारा वैज्ञानिक

क्रिया नहि ने छी जे राता-राती राजाकेँ रंक आ रंककेँ राजा बना देत। सामाजिक विचारधारा तँ लागल-लागल पीढ़ीक (जेनरेशनक) संग चलैए। ओना, जीवन पद्धति बदलने तेजी अबिते अछि, मुदा तइले अनुकूल परिस्थिति सेहो चाहबे करी किने।



शब्द संख्या: 5817, तिथि: 24 जून 2021

पञ्चम पड़ाव

पचीस बर्ख पूर्व रामकिसुनक शरीरमे एकटा रोगक जन्म भऽ गेलैन। अजीब रोग जकाँ ओ रोग भेलैन। बारह मासक सालमे छह मास रोग प्रवल रहै छेलैन आ छह मास निर्वल। माने ई जे जाड़क मासमे, माने अदहा अगहनसँ अदहा फागुन तक, रोग प्रवल रहै छेलैन, आ गरमीक तीनू मासमे निर्वल। डेढ़ मास जहिना रोगकेँ चढ़ैमे लगै छेलैन तहिना डेढ़ मास उतरैमे। माने भेल जे कातिकसँ डेढ़ मास जहिना रोगक चढ़न्तक होइ छेलैन तहिना अदहा फागुनसँ डेढ़ मास उतारक होइ छेलैन। रोग आरो किछु नहि, शरीरमे उज्जरपन पकैड़ लइन। जे शरीर गरमी मासमे लाल गोड़ भऽ जाइ छेलैन वएह शरीर जाड़क मासमे पाण्डु रोगी जकाँ निस्सठ उज्जर भऽ जाइ छेलैन। जेना शरीरक सभ खून सुखि जाइत होनि तहिना।

ओना, रामकिसुन शुरूक दू-तीन साल, माने रोगक आक्रमणक समय, तँ नहि मुदा तेकर पछाइत डॉक्टर सभसँ राइयो विचार आ दवाइयो-दारू करबए लगला, मुदा रोग ओहिना-क-ओहिना। अपने रोगक प्रभावसँ रामकिसुन रोगकेँ रोग नहि बुझि जीवनकेँ काजक ऐ रंगमे रंगने छला जे शरीरपर सँ मन हटि विचारमे सटि गेल छेलैन जइसँ काजकेँ काज नहि, जीवन बुझि गेल छला, जइमे लगल रहने ने शरीरक थकान बुझि पड़ैन आ ने रोगे मनकेँ दाबि सकैन।

पचीस बर्ख पूर्व मेडिकलो साइंस, औझुका रूपमे नहियेँ छल। तहूमे ग्रामीण इलाकामे तँ आरो नहि छल। जहिना एलोपैथी इलाज केनिहार तहिना हेम्योपैथी डॉक्टर सेहो छेलाह। साधारण पढ़ल-लिखल नवयुवक प्रैक्टिश करै छला, जिनका मेडिकल साइंसक ओहन बोध नहियेँ छेलैन जेहेन बोधक खगता लोककेँ छेलैन। ओना, एलोपैथी आ हेम्योपैथीक इलाज सेहो चलि रहल छल आ समाजक बीच पसरल आयुर्वेदिक सूझ-

बूझ सेहो चलिते छल। आयुर्वेदिक सूझ-बूझक माने भेल तुलसी, सिंगहार, आदी, इत्यादि जेहेन सर्दी तेहेन पातक संग नोन-मरीच मिला सर्दीक करहा बनाएब, तहिना घा-घोसमे गन्धकी पातकेँ मलिकऽ ओकर रस निकालि लगाएबक संग सइयो एहेन औषधि छेलैहे जेकर उपयोग समाजमे होइते छल। तैसंग देवी-देवता-गहवर आ झाड़-फूक करैबला ओझा-गुनीक इलाज (रोगक इलाज) सेहो चलिते छल।

ग्रामीण इलाकामे जे गोटि-पङरा एलोपैथी डॉक्टर छला, जे सरकारी अस्पतालसँ जुड़ल छला, माने नोकरी करै छला, हुनकर प्रतिभाकेँ ऐ रूपेँ दाबिकऽ राखल गेल छेलैन जे रोगी चाहे जइ रोगक हुअए मुदा एक्के रंगक दवाइ सभकेँ अस्पतालमे भेटै छेलैन। सरकारोक स्थिति नीक नहियेँ छल जे समाजक बीच पसरल रोग-वियाधिक इलाज दऽ सकैत। तखन तँ भेल जे समाजमे सरकारक प्रति बिसवास बनल रहए जे इलाकामे सरकारी अस्पतालो अछि आ रोगक इलाजो अछि। मात्र दू-तीन रंगक दवाइ अस्पतालमे रहै छल। ओना, प्राइवेट प्रैक्टिश डॉक्टरो आ अस्पतालसँ जुड़ल कर्मचारियो सभ करिते छला।

शुरूमे, माने रोगक आक्रमणक शुरूमे रामकिसुनो ओहिना अपन रोगक इलाज करबै छला जहिना आन-आन करबै छला। माने भेल जे कहियो एलोपैथीक गोली खा लेलौं तँ कहियो हेम्योपैथिक गोली खा लेलौं। कहियो आयुर्वेदिक कोनो रस पीब लेलौं, तँ कहियो ओझा-गुनीसँ मत्थाहाथ दिया लेलौं। ओहन लोक जकाँ, जे रोगकेँ संगी बना संगे-संग चलै छैथ, माने भेल जे रोगक इलाजो करैत चलैत रहै छैथ आ जीवनो चलबैत चलै छैथ, तहिना रामकिसुनो सालक छह मास दवाइयो खाइ छला आ छह मास नहियोँ खाइ छला। अपना मने अपनाकेँ ई नहि मानि घोषित केने छला जे हम रोगसँ ग्रसित रोगी छी। रोगी तँ अपन ओहन जिनगी बनौनहि अछि जे साधारण मथदुखीसँ मथफोरा रूपक होइत अछि। कोनो रोग एहेन होइए जे हौहैट-कलकैल, फोरा-फुन्सी जकाँ दू-चारि बेर हाथसँ रगैड़ देलापर असथिर भऽ जाइए आ कोनो एहनो तँ होइते अछि जे पँच-

पँच, दस-दस गोरे देहपर चढ़ल रहू वा तेलसँ मालिस करैत रहू। मुदा तैयो रोग अपन कर्तव्य देखैबते अछि। खाएर जे अछि जेतए अछि, से तेतए रहौ, रामकिसुनकेँ तइसँ कोन मतलब। मतलब एतबे जे रोगसँ पटका अपन काज (जीवन) नहि छिनए देबइ। माने अपनाकेँ रोगसँ ग्रसित बुझि काज बाधित नहि करब। जँ शरीरमे प्रवेश केने अछि तँ केने रहअ, तेकर प्रतिकार करैत अपनो दवाइ-दारूक सेवन सेहो करैत चलब आ अपन जे दिनानुदिनक, नित्य, नैनित्य, काम्य आ प्राश्चित-कर्म अछि, तेकरो संगे-संग सेहो नेने चलब।

रोगो तँ रोग छी, ओकरो चालि-ढालि, रूप-रंग की कोनो एक्के रंग अछि। एहनो तँ रोगी अछिए, माने रोगसँ ग्रसित रोगी, जे खेनाइ-पीनाइ, ओढ़नाइ-पहिरनाइसँ लऽ कऽ खेलेनाइ-धुपेनाइमे निरोग रहैए आ काजक बेरमे रोगी बनि जाइए। एकर माने ई नहि बुझब जे राजरोगक चर्च करै छी, जे नीक-निकुत भोजन, नीक-निकुत बासक संग नीक-निकुत खेल-तमाशा तँ करै छी, मुदा छी रोगी।

1974 इस्वीमे बोरिंग-दमकल लेला पछाइत रामकिसुन अपन जीवनकेँ आधुनिक रूपमे, माने नव रूपमे स्थापित करए चाहि रहल छला, जइसँ दिन-रातिक बीच जखन समय भेटैत, तखन तुलसी माला जकाँ काजक जप करए लगै छला। ऐठाम एहेन भ्रम भऽ सकैए जे किसानक जीवन खेत-पथारसँ जुड़ल रहैए तैठाम राति-बिराति केना किछु कएल जा सकैए? ..किसानक जीवन तँ ओहन जीवन छी जे राति-दिनक कोन बात जे अधनीनोमे अपन खेती-पथारीक सूत्र मिलबैए। वएह सूत्र ने मंत्रयोग बनि, लय योग होइत राजयोगक सीमापर पहुँचैए। हठयोगक चर्च नहि करै छी, जेकर आठो सूत्रमे, पाँचक पछाइत गैप (खाली) होइए, आ तेकर पछाइत बाँकी तीनू क्रिया होइए।

रामकिसुनमे एहेन चेतनाक उदय भऽ गेल छेलैन जे जहिना नव पद्धतिसँ कृषि-पैदावार करए लगल छला तहिना समाजक बीच, माने एको गामक समाजक बीच आ आनो-आन गामक समाजक बीच, कृषि

पैदावारक अपन पद्धति अछिए जे बेवहारिक रूपमे चलि आबि रहल अछि। जइसँ रामकिसुन जहिना कृषि फार्म, माने कृषि-संस्थान सभपर नजैर राखि नव-नव जानकारी प्राप्त करै छला तहिना गामोक बीच आ आनो-आन गामक लोकक, माने किसानक, बीच पैदावारक चर्च उठा कृषिक जानकारी सेहो संग्रह करए लगल छला। ओना, रेड़ियो स्टेशनसँ जे खेतीक हिसाब-बाड़ी, माने जहिना खेतक नाप–हेक्टेयर, एकड़, मीटर इत्यादि–तहिना तौल–टन, क्वीन्टल, किलोग्राम–सबहक जानकारी संग्रह करै छला आ तहिना गामक प्रचलित पद्धति- बीघा, कट्ठा, धुर, कनमा, कनई आ पौआ, असेरी, सेर, पसेरी, धारा, मन आ बोड़ाक संग्रह सेहो करिते छला। ओना, अपन जीवनक अन्तो-अन्त तक डेगेसँ खेत नापि बीआ-बालि खसबै छला आ आँजुरे-आँजुर ओकरा, माने बीआकेँ, नापि-नापि वजनो करै छला। खाएर जे करै छला से रामकिसुन करै छला, तइसँ आन-आनकेँ की सम्बन्ध छैन आ केते सम्बन्ध छैन, ई तँ बेकता-बेकतीक बात भेल। बजैक क्रममे पैघ-सँ-पैघ सत्तासीन किए ने होथि, मुदा किसान परिवार आ किसानी जीवनक मान-प्रतिष्ठाकेँ अपना ऊपर ओढ़ि मस्तीसँ कहबे करै छैथ जे हमहूँ किसानेक सन्तान छी आ पालनो-पोषण किसाने परिवारमे भेल अछि। एकर माने ई नहि बुझब जे आजुक किसानक जीवन आ परिवारक अपन बेवहार केहेन छैन। जइ समाजमे जन्म भेल, पालन-पोषण भेल, ओइ समाजक किसानक आजुक की स्थिति छैन? ओना, किसानी जीवन ने एक देशक छी आ ने एक क्षेत्रक, ओ दुनियाँक सभ देश आ सभ क्षेत्रोक जीवन तँ छीहे। अपना ऐठामक, माने मिथिलांचलक, जे जन-समूहक जीवन रहल अछि ओ अदौसँ किसानीए रहल अछि आ अखनो अछिए। कल-कारखानाक ने समुचित आगमन भेल आ ने समाजक जीवनमे दोसर कोनो बदलाव भेल अछि। कल-कारखानाक रूपमे हथ-करघाक चलैन थोड़-थाड़ जरूर रहल मुदा ओ समटल दिशामे रहल। जेना तेलहनसँ तेल बनाएब, खास जाइतिक बीचक व्यवसाय अदौसँ बनल रहल अछि। तहिना रूइयासँ कपड़ा बनबैक कारोबार सेहो खास जाइतिक बीचक बेवसाय रहल अछि। अहिना आरो केतेको रंगक

बेवसाय छल जे समाजमे चलि तँ रहल छल मुदा खास जाइतिक हाथ बन्हाएल रहल। एहेन कोनो उद्योग-धन्धामे बन्हाएल रहल से तेतबे बात नहि अछि। कृषि पैदावारमे सेहो, माने खेती-बाड़ीमे सेहो, रहले अछि। जेना पानक खेती खास जाइतिक बीचक खेती मानलो जाइए आ कएलो तँ जाइते अछि। तहिना तरकारी खेती सेहो खास जाइतिक मानल जाइए। तहिना फूलक खेती सेहो माली जाइतिक खेती मानल जाइए। आरो बहुत अछि, मुदा अखन से नहि। अखन एतबे जे अही बुनियाद माने बेवसायकेँ जँ सामूहिक रूपमे माने सामाजिक रूपमे अपनौल जाइत वा समाजीकरण भेल रहैत तँ अखन धरिक जे सामाजिक परिवेश अछि ओ दोसर रंगक जरूर रहैत।

दुनियाँक नक्शामे देखै छी जे अपन देशक अपेक्षा, माने भारतक अपेक्षा, जापान देश दशांसोसँ कम अछि। माने जहिना भूभागक (जमीनक) हिसाबसँ कम अछि तहिना जनसंख्याक हिसाबसँ सेहो कम्मे अछि मुदा ओ केते आगू बढ़ि गेल अछि आ अपना-सभ केतए लसैक गेल छी, सेहो तँ अपने सभकेँ ने देखए पड़त। ओना, अपनो देशमे, माने भारतमे, सेहो सौंसे देशक, माने सम्पूर्ण भूभागमे ने एक रंगक माटि अछि, आ ने एक रंगक पानि अछि आ ने एक रंगक भौगोलिके बनावट अछि, जइसँ सौंसे देशक किसानक एकरंग जीवन-पद्धति बनि सकैत। एक दिस सालक-साल पानिमे डुमल जमीन रहैए तँ दोसर दिस ओहनो क्षेत्र तँ अछिए जे पानिक अभावमे त्राहि-कृष्ण सेहो करिते अछि। तहिना दिन-रातिक बीच बनल मौसमक सेहो अछिए। कोनो क्षेत्रक लोक गरमीसँ जरैत जीवन गुजारै छैथ तँ कोनो क्षेत्रक लोक सालक अनेको रंगक मौसममे जीवन गुजारिते छैथ। खाएर जे अछि ओ देशक भेल, तइसँ रामकिसुनकेँ कोन जरूरत छैन, मुदा एते तँ जरूरी मानियेँ रहला अछि जे जइ कल-कारखानासँ अबैबला वस्तुक भरपाइ हम नहि कऽ सकै छी, किए तँ ने कल-कारखाना अछि आ ने ओकर कच्चा वस्तु। मुदा भोजन जे जीवनक मूल समस्या छी, ओकर भरपाइ तँ कृषिसँ कएले जा सकैए। ओना,

कृषिसँ उत्पादित अनेको वस्तु अछि जे कल-कारखानाक वस्तु सेहो छीहे।

रामकिसुन आ मंगलदेव अपन परिवारसँ आगू बढ़ि समाज आ सामाजिक जीवनक आर्थिक संसाधनपर नीक जकाँ, माने गहराइसँ, गौर केलैन। तखन देखि पड़लैन जे गामक जे आर्थिक संसाधन अछि, माने उपजाउ जमीन, तकरा उपजबैक जे परम्परागत पद्धति अछि ओकरा थोड़े आगू बढ़ाएब, माने ओइमे थोड़बो नवपन (आधुनिक) आनब, तँ समाजमे एकाएक केतेको गुणा उपज बढ़ि जाएत। जखने खेतक उपज बढ़त तखने जीवनक भरण-पोषणमे असानी सेहो हेबे करत।

अखन तकक, माने 1974-75 इस्वी तक, यएह ने इतिहास रहल अछि जे कोनो गामक उपजावारी एहेन नहि रहल अछि जे ओइ गामक समाजक आवश्यकताक पूर्ति कऽ सकत। जँ से रहैत तँ गामक लोकक परिवारक बीच बहुसंख्य परिवार ओहन अछि जइ परिवारमे समुचित ढंगसँ दुनू साँझ चुल्हि पजरैत हुअए। भूखल पेट आ जरल मन तँ यएह ने सोचि सकैए जे अपन कर्तव्यक चूक नहि, भाग्य-विधाताक चूकसँ एहेन जीवन भेटल अछि।

ओना, कर्मकेँ, माने काजकेँ, समाजक जे चालवाज समूह छैथ, ओ ऐ रूपेँ लथाइर कऽ नीचा उतारि देने छैथ जे जनसमूह कर्मकेँ महत्व नहि दए, भाग्य-भरोसकेँ महत्व दैत सामाजिक परिवेश बनौनहि छैथ। कहब जे से केना? जन-जनक कण्ठमे एहेन विराजिये रहल अछि जे काज केने, माने श्रमसँ जँ होइत तँ मुसहरेकेँ होइत जे दिन-राति कोदारि भँजै छैथ। हँ, एहेन बात जरूर अछि जे कर्मकेँ समुचित ढंगसँ नहि केने गोबरमे घी छोड़ब जरूर होइए मुदा तइसँ कर्मक महत्व समाप्त भऽ जाइए, सेहो केते उचित अछि।

...दुनू गोरे, माने रामकिसुनो आ मंगलदेवो गामक समाजकेँ आगूमे राखि आगूक दिशामे जखन बढ़बैक विचारपर गौर केलैन तखन दर्जनो रास्ताक इजोतक भुकभुकी मनमे उठए लगलैन। जखने रामकिसुनक मनमे भविष्यक जीवनक प्रकाश-पुंज उठलैन कि बजला- “मंगल भाय,

आगूक लेल की करब नीक हएत?”

ओना, अखन तक अनेको प्रश्न समाजमे उठि चुकल छेलैन्हे। किए तँ जखने लोककेँ कोनो औषधिक जानकारी होइए तखने ओइ संग ओहन बिमारियो आ वातावरणक प्रभावक रूप सेहो उठिते अछि। जइसँ समाजमे माने कमलपुरमे, एहेन भेल जे रंग-बिरंगक जातियोक आ रंग-रंगक जीवनोक अनेको प्रश्न लोकक मनमे उठिये रहल छेलैन। उठबो तँ उचित अछिए। मानि लिअ अहाँकेँ जीवनक कोनो धर्मस्थानमे पहुँचब अछि, तैठाम तँ एहेन प्रश्न उठबे करत किने जे ओइ स्थानसँ, माने ओइ धर्मस्थानसँ, जनमानसक स्थानक दूरी की अछि। हँ, ईहो बात जरूर अछिए जे किनको स्थानक दूरी कम छैन आ किनको बेसी, मुदा तँए कहब जे एक्केरंग सभकेँ छैन सेहो बात नहियेँ अछि। रंग-रंगक दूरी सेहो अछिए। जखने एक-दोसराक बीच दूरी रहत तखने ने ओइ दूरीक बीच भेदक दुर्गम स्थान सेहो हेबे करत। ओही दुर्गम स्थानक बान्ह-सड़क ने समाजक बन्धन छी, जे समाजकेँ ब्रह्मफाँस जकाँ बन्हने अछि।

मंगलदेव बजला-

“रामकिसुन, हजारो समस्याक बीच समाज बन्हाएल अछि, सबहक अपन-अपन समस्या सेहो अछि आ सामूहिक, माने सामाजिक समस्या सेहो अछिए। तइमे जेतेक समस्या अछि, सभकेँ एकबेर सूचीबद्ध करिकऽ क्रियाशील बनाएब भारी अछिए। मुदा उठेबे नहि करब तखन समाज समैयक संग चलि केना सकैए।”

ओना, कोनो समस्याकेँ मंगलदेव खोलिकऽ नहि बजला मुदा इशारामे कोनो समस्याकेँ छोड़ि देलैन सेहो बात नहियेँ अछि। अधपक्कू आम जकाँ रामकिसुन किछु विचार बुझबो केलैन आ किछु नहियोँ बुझलैन। जे बुझलैन तहीमे रावणक वंश जकाँ अनेको सखा-सन्तान बुझि पड़ैन। मुदा किछु समस्यापर नजैर गेबे ने केलैन। जँ से जइतैन तँ जरूर विचार उठितैन जे जहिना राजा सगरक साठि हजार सन्तान एक्केबेर भष्म भऽ गेलैन तहिना हएत। खाएर जे भेलैन तइसँ रामकिसुने आकि

मंगलदेवेकेँ कोन मतलब, मतलब एतबे छैन जे जइ समाजमे बेटाक रूपमे जहिया जन्म भेल तहिया समाजक घर-घरमे, एते तँ खुशीक बाढ़ि एबे कएल किने जे समाजमे एकटा भीष्म बेटाक आगमन भेल। ..अपन विचारपर विराम दैत रामकिसुन बजला-

"भाय, अखन जे परिस्थिति अछि तइमे विचारकेँ केना संचालित कएल जाए सकैए?"

रामकिसुनक प्रश्न सुनि मंगलदेवक मन भौक-भौक भोकिया लगलैन। भौक-भौक भौकिआइक कारण भेलैन जे समाजक बीच समस्या तँ हजारो अछि, तइमे जँ अपनो किछु समस्याकेँ पकैड़ कार्यान्वित करब आ किछु समाजो करता तँ समाधान सम्भव अछिए। तँए अपन-अपन समस्या लऽ कऽ सभकेँ मुँह उठबए पड़तैन। मुदा तँए कहब जे एहेन समस्याक विचारे नहि हुअए, सेहो तँ उचित नहियेँ भेल। मंगलदेव बजला-

"रामकिसुन, अपन नियारल आकि विचारल सभ किछु भइये जाइए, सेहो बात नहियेँ अछि, मुदा नहियेँ हएत सेहो बात नहियेँ अछि। हेबो तँ करिते अछि, हेबो करबे करत।"

रामकिसुन-

"तखन?"

मंगलदेव बजला-

"अपना सभ किसान छी, किसान केना उन्नति करता, बस एतबे विचार अखन करैक अछि।"

ओना, मंगलदेवक विचार सुनि रामकिसुनक मन ठमकलैन मुदा अपने मनमे ठहकलैन जे जेते गोरे एकसंग बैस खेबो-पीबो करै छी आ समाज-ले सोचबो-विचारबो करै छी, कम-सँ-कम तेतेक लोकक विषयमे विचार करब तँ उचित हेबे करत किने। मुदा लगले अपने मन कहलकैन जे कोसी आकि कमलाधारक बान्ह-छहर टुटने आकि बेसी बरखे भेने गाममे पानिक बाढ़ि अबिते अछि। अँगना-घरसँ लऽ कऽ बाड़ी-झाड़ी, खेत-

पथारमे बाल-बोधसँ चेतन धरि बाढ़ि असनान करिते छैथ, मुदा धारक बाढ़ि आ बरखा बाढ़िमे एते अन्तर तँ अछिए जे एकटा धारावाहिक असनान भेल दोसर पोखरिक नहाएब। ऐठाम ई नहि बुझब जे कमला धारक बान्ह छी आकि छहर। जँ छहर छी तखन जँ कर्ताक बीच छहर-महर नहि हुअए, सेहो केते उचित भेल। अपने विचारमे रामकिसुनक मन तेना ओझरा गेलैन जे असोथकित जकाँ भऽ गेला। अकैछ कऽ विचारि लेलैन जे अखन तकक जे मंगल भाइक संग सम्बन्ध रहल तइमे जीवनक कहाँ-केतौ काट-खोंट देखै छी, तखन जँ मंगल भाइक विचारानुकूल नहि चलब तखन तँ ओहीठाम ने पहुँच जाएब जैठाम जहिना समाजक बीच एक-दोसरासँ छुट्टा-छुट्टी रहने एक-दोसराक ने साती-भागी होइए आ ने साती-भागीक संग छोड़ैए। यएह तँ छी समाज, जेकरा देखबो अछिए आ देखाएबो तँ अछिए। रामकिसुन बजला-

"भाय, अहाँ कहुना भेलौं तँ ओहन गुरुतुल्य भेबे केलौं जे दिशा-दर्शन करबै छैथ। गप-सप्प सभ दिन एकठाम बैस करिते छी, तखन किए ने आजुक समय आ आजुक परिवेशक समाजपर विचार करैत चलब।"

रामकिसुनक विचार सुनि मंगलदेवक मन पतालक पानिक मानि जकाँ भरि गेलैन। सम-गम होइत मंगलदेव बजला-

"रामकिसुन, दुनियाँ की हँसी-ठट्ठा छी जे एक आस मारि देबै आ वृन्दावनक झूलापर बैस बारहमासा गाबि लेब। वृन्दावनक कृष्णक झूलाक आस तखन ने लगत जखन कृष्ण बनि कृष्णकेँ प्राप्त (देखब) करब।"

मंगलदेवक विचार सुनि रामकिसुनकेँ जेना तृप्ति भेटलैन तहिना मन तिरपित भऽ गेलैन। बजला-

"भाय, जहिना 'हरि अनन्त हरि कथा अनन्ता' रामायणमे तुलसी बाबा गाबि सात अरब जन-मानसक कथा एक्केबेर सुना देलैन तहिना अहूँ वृन्दावनक वृन्दक (समाजक) गाथा गाबि देलिऐ।"

रामकिसुनक हृदयक विह्वलता देखि अपन मनकेँ मंगलदेव चेतौनी दैत विचारलैन जे मोमबत जीवनक संग कखनौं मोमवत विचारसँ

पछुआएब कायरता भेल। मंगलदेव बजला-

“रामकिसुन, अखन अपना सभकेँ एतबे विचार करैक अछि जे कृषि-पैदावारमे बढ़ोत्तरी केना हएत, जइसँ आन देशक कर्जो बन्न हएत आ अपन समाजक चुल्हि दुनू साँझ सेहो पजरबो करत। आ दोसर विचार करैक अछि जे गामक जे हथकरघा उद्योग गाम छोड़ि मेटा गेल, तहिना आजुक परिवेशक अनुकूल ओ केना स्वचालित इंजीनक मशीन बनि ठाढ़ हएत।”

कोनो प्रश्न उठला पछाइत प्रश्नकेँ नीक जकाँ बुझि लेब बेसी नीक होइए तँए रामकिसुन परबा-पौरुकीक घुटकब जकाँ मने-मन विचारकेँ घोंटए लगला। रामकिसुनक मुँहक रूखि देखि मंगलदेव बुझि गेला जे कोनो आँकर-पाथर जहिना परबा-पौरुकीक ठोँठमे बैस घुटकबकेँ रोकैए तहिना भरिसक रामकिसुनोकेँ भऽ रहल छैन। मुदा से तँ रामकिसुनक मुहसँ निकलला पछातिये ने बुझब।

पहिल प्रश्नकेँ, माने उन्नति खेतीक पैदावारक विचारकेँ, तँ रामकिसुन नीक जकाँ बुझि गेला मुदा हथकरघा केना स्वचालित मशीन बनि गाममे चलत, तइ बुझैमे मनकेँ लटपटेने विचारो लटपटा गेलैन तँए मुँहक सुर्खीए बदरंग भऽ गेलैन। मनक उत्थर गहराइ रहने बुझिये ने पेब रहल छला जे जहिना भारी मशीन भेने भारी-भारी समस्याक समाधान असान भऽ जाइए तहिना छोट-छोट (लघु-लघु) मशीन भेने सेहो बेकारीक (बेरोजगारीक) दबावक भारकेँ मेटैबते अछि। रामकिसुनक बकार बन्न देखि मंगलदेव बजला-

“रामकिसुन, अपन किछु विचार स्पष्ट नहि कऽ रहल छी..?”

असमंजसमे पड़ल रामकिसुन बजला-

“मंगल भाय, आधा विचार तँ अधोसँ बेसी बुझलौं, मुदा आधा विचार तँ अधोसँ कम बुझलौं, तँए किछु फुरिये ने रहल अछि..!”

कोनो विचारे वा काजे जखन निच्चाँसँ ऊपर, माने निम्न-सँ-ऊँच

अवस्थासँ लऽ कऽ ऊपर धरिक, आ ऊँच-सँ-निम्न धरिक, बीचक जे अवस्था अछि, ओइ अवस्थाकेँ जेहेन स्पष्ट रूपेँ बुझैक जरूरत अछि, भरिसक रामकिसुन से नहि बुझि पेब रहला अछि तँए मनक संग विचारो विधुआ गेल छैन। मंगलदेव बजला-

“आधासँ बेसी की बुझलौं आ आधासँ बेसी की नहि बुझलौं? किए तँ एकसंग दूटा प्रश्न अछि किने।”

रामकिसुन बजला-

“मंगल भाय, खेतीक उन्नतिक जरूरत किए अछि से तँ थोड़-बहुत बुझि गेलौं, जे जहिना घरमे अन्न (भोजनक वस्तु) नहि रहने मनुक्खक कोन बात जे कुत्तो-बिलाइ आ मूसो-छुछुनैर हकन कनैए, तँए खेतीक पैदावार तँ बुझि गेलौं, मुदा मशीनक विचार बुझिये ने पेब रहल छी।”

रामकिसुनक बात सुनि मंगलदेवक मनमे हर्ष विषमय दुनू भेलैन। हर्ष ऐ दुआरे भेलैन जे एकटा निरविचारी मनुक्खक जे गुण होइए, जे बिना कोनो लागि-लपटकेँ अपन मनक विचार बजैए, जइसँ अपन पूर्ण परिचय सेहो दइए, तहिना रामकिसुन सेहो बजला। मनमे अनका जकाँ मिसियो भरि कलछप्पन नहि रखलैन, जेना अपना समाजक लोकमे अछि। माने ई जे बिनु बुझल काजो आ विचारोक पक्षमे तेते जोर दऽ कऽ बजता जे जेना पूर्ण अनुभवी ओइ काजो आ विचारक बेवहारोक होइथ। तैसंग मंगलदेवक मनमे विषमय ई उठलैन जे रामकिसुन किछु छैथ मुदा पढ़ल-लिखल (मैट्रिक पास) समाजक ओहन कार्यकर्त्ता तँ छथिए जे समाजक बीच अपन विचारक नेतृत्व कऽ रहला अछि। मुदा मंगलदेवक अपने मन विचार देलकैन जे जँ रामकिसुन अखन धरि नहि बुझि पेला अछि तँ की हेतइ। अखन तक कोनो जवाबदेह नेतृत्वकर्त्ता सेहो नहियेँ छैथ, तखन भविष्यक आवश्यकताकेँ देखैत आबो नीक जकाँ बुझि लेब, समाजो आ अपनो-ले हितकर हेबे करतैन। नजैर खिरा जखन पाछू-मुहेँ, माने दुनियाँ दिस, तकलैन तँ मंगलदेवक मनमे दुनियाँक पौने दू साए देशमे तीनटा ओहन देश भेटलैन जइ माध्यमसँ बुझा नीक जकाँ सुझा सकै छैथ। जखने लोक

अपन सुझिसँ देखए-विचारए लगै छैथ, तखने ने जीवन उन्नतिक दिशामे डेग बढ़बैए। मंगलदेव बजला-

“रामकिसुन, दुनियाँमे अनेको रंगक अनेको देश अछि, ओतेकेँ ने बुझब ओते जरूरी अछि आ ने ओइ पाछू अपन सभ साधन, माने पूर्ण शक्ति, केँ लगाएब जरूरी अछि। किए तँ जहिना मेघ दिस देखैत माने ऊपर तकैत चलनिहारकेँ धरती परक खच्चे वा ईंटे-पाथर गड़ल ठेंसाह जगहेमे ठेँसो तँ लगिते अछि आ खच्चामे गड़ैक (लसकैक) डर सेहो रहिते अछि तँए, अखन एतबे विचार करैक अछि।”

मंगलदेवक मुहसँ तीनटा देशक नाओं सुनि रामकिसुनक मन पिपाशु पपीहा जकाँ जिज्ञासासँ भरि गेलैन।

कोनो नव जानकारी प्राप्त भेलापर जहिना विचारक जे नवपन मनमे जगैए जइसँ दुनियाँक नव-नव रूप, माने दृष्टिमान जगत, आँखिक सोझमे अबए लगैए, रामकिसुनोकेँ तहिना भेलैन। बजला-

“हँ-हँ भाय साहैब, अनेरे जे किसान दुनियाँमे जेते रंगक अन्ने अछि वा तीमने तरकारी आकि फले-फलहरी अछि, सभ जँ उपजाबए लगता तँ वौआ जेबे करता किने। किए तँ सभक अपन-अपन समयो होइए आ मौसमक संग माटियो-पानि होइते अछि, जे सभ जगहकेँ समान रूपेँ प्राप्त नहियेँ अछि, तँ नीक हएत जे भने तीनियेँटा देशक रूपरेखाकेँ समेटि नीक जकाँ बुझा देब, अपना ले सएह उपयोगी हएत।”

रामकिसुनक विचार सुनि मंगलदेवक मनमे संतपन, माने शान्तपन जगलैन। शान्तपन जगिते निष्पक्ष संत जकाँ मंगलदेव बजला-

“रामकिसुन, जापान, इंग्लैंड (ब्रिटेन) आ नेपाल तीनू जहिना छोट-छोट देश अछि तहिना जनसंख्यो तीनूक कम्मे अछि, मुदा तीनूक अपन-अपन जे गुण अछि, ओकरा जनने दुनियाँक अनेको देशक बहुत किछु जानकारी प्राप्त भइये जाइए, तँए अही तीनूक चर्च करब बेसी उपयोगी हएत।”

ओना, रामकिसुनक मन ओतए वौआ रहल छेलैन जेतए पौने दू साए देशक नाओं सुनने छला। मुदा तीनूक चर्चकेँ बेसी उपयोगी सुनि अपन सहमत जतबैत रामकिसुन बजला-

“नेपाल तँ अपना सभक सटले देश अछि, जे बाहरी शासकक अन्तर्गत तँ नहि रहल मुदा अपने भीतर ओहन शासनक अन्तर्गत जरूर रहल जहिना बाहरी शासकक अन्तर्गत कोनो देश रहैए।”

ओना, बाहरी शासन आ भीतरी शासनक भेद बुझैक जिज्ञासा रामकिसुनक मनमे ठहकलैन, मुदा विषयसँ विषयान्तर होइ दुआरे मनक विचारकेँ रोकि, बजला-

“मंगल भाय, शासनक बात छोड़ू, तीनू देशक मनुक्खक जिनगीक की स्थिति अछि बस तेतबेक जानकारी दिअ।”

रामकिसुनक विचार सुनि मंगलदेवक अपनो मन मानि गेलैन जे मनुक्खक जिनगीए ने ओइ देशक पूर्ण परिचय दइए, तँए नीक हएत जे तीनूक आर्थिक स्रोत जे अछि मात्र तेतबेक चर्च करब, सही धरतीक सही विचार भेल। मंगलदेव बजला-

“रामकिसुन, पहिने तीनू देशक जे आर्थिक बुनियाद अछि, तेकरा जानिकऽ मनमे रोपि लिअ, पछाइत तीनूक अपन-अपन गुण-अवगुणक चर्च करब।”

रामकिसुन-

“ओ तीनूक बुनियाद की अछि?”

मंगलदेव बजला-

“नेपाल सोल्होअना कृषि-आधारित देश छी। ओना, नेपालकेँ दुनू रूप अछि, माने तराइ क्षेत्र सेहो अछि आ पहाड़ी क्षेत्र सेहो अछि, माने तराइ क्षेत्रसँ लऽ कऽ पहाड़ी क्षेत्र तक सभकियो भूमि आधारित उत्पादन (उपज) पर जीवन-यापन कऽ रहला अछि। उद्योगक नामपर गोटि-पङरा कृषि-आधारित चीनी मिल आ चाउर-दालि-तेलक मिल अछि।”

बिच्चेमे रामकिसुन बजला-

"बस एतबे अछि?"

मंगलदेव-

"हँ। दोसर देश भेल इंग्लैड (ब्रिटेन) जैठाम कृषि नगण्य अछि आ कल-कारखाना जीवनक मुख्य आधार अछि। आ तेसर भेल जापान। जैठाम उन्नत कृषि सेहो अछि।"

अनायास रामकिसुनक मुहसँ निकलल-

"तब तँ सभसँ नीक जापाने अछि।"

मंगलदेव पुछला-

"से केना मानि लेलौं?"

रामकिसुन बजला-

"मनुक्खक जीवनक मुख्य आधार भोजने ने छी। से जँ अपना हाथमे रहल तखन तँ अपन मनोनुकूल ने पैदावारो (उपज) करब आ सन्तुलित भोजनो करब। हालेमे सुनलौं अछि जे जापानमे ओहन किस्मक आम होइए जे दुनियाँमे सभसँ सुन्दर आ सभसँ महग सेहो अछिए। जेकर नाओं मियाजाकी छी आ जापानक संग फिलीपिन्समे सेहो होइए।"

सभसँ सुन्दर आम सुनि रामकिसुनक मनमे अपनो ऐठामक, माने अपनो देशक आम मोन पड़लैन। ओना, अपनो देशक मध्यप्रदेशक जब्बलपुरमे सेहो अछि। मुदा जइ काजे घरसँ निकलल छला तइ काजकेँ बिथुत होइत मनमे जगलैन। जे गप-सप्पमे समय नष्ट करब जीवनक संग खेलवाड़ हएत। ओना, दुनियाँक जानकारी (ज्ञान) सेहो अपन महत्व जीवनमे रखिते अछि मुदा से जँ अखन प्राप्त करए लगब तखन अपन वर्तमान जीवन, माने आजुक जीवन, पछुआ जाएत। जखने वर्तमानक काज (कर्म) पाछू पड़त तखने समयक संग जीवनो छुटत। समयकेँ पकड़ि, माने समयक संग जीवनकेँ चलाएब, चलब ने समुचित जीवन भेल। ...रामकिसुनक विचारमे मोड़ एलैन, मोड़ अबिते बजला-

“मंगल भाय, ओना दुनियाँकेँ जनने बिना अपने-आपकेँ नीक जकाँ जहिना नहि जानि सकै छी, तहिना अपने-आपकेँ जनने बिना दुनियोँकेँ नीक जकाँ सेहो नहियेँ जानि सकै छी। मुदा ऐबेरक समय देखिते छी जे केना समय पूर्व बरखा हएब शुरू भेल, जइसँ आन-आन कर्मक आधारित जीवन भलेँ ओइसँ बेसी प्रभावित नहि हुअए मुदा किसानी जीवनक लेल तँ कुठाराघात भेबे कएल अछि। एहेन समयमे जँ अपनाकेँ सचेत-सजग बना नहि चलब तखन तँ जीवन मार खेबे करत किने। तँए अखन गप-सप्पपर विराम दियौ। खेतमे बीआ पाड़ने छी ओ डुमि गेल अछि, ओही महक पानि उपैछ कऽ फेकबाक अछि तँए अखन जाए दिअ।”

ओना, मंगलदेवक मनक विचार पूर्णरूपेण तैयार भऽ गेल छेलैन जे रामकिसुनकेँ नीक जकाँ बुझा दिऐन जे लघु-उद्योग की छी, अपना ऐठाम केते सम्भावना अछि आ ओइसँ देशक स्थिति केते सुधैर कऽ आगू बढ़त। मुदा रामकिसुनक काजक औगुताइ (धड़फड़ी) देखि विचारलैन जे कोनो विषयक जानकारी प्राप्त करैकाल जँ दोसर विषय मनकेँ पकैड़ लइए तखन नीक जकाँ विषय बुझबमे बेवधान भइये जाइए। मनक विचारकेँ मनेमे सामंजस्य करैत मंगलदेव बजला-

“रामकिसुन, अहाँक काजक महत्व देखि अपनो मन सोल्होअना राजी भइये गेल अछि, गप-सप्पकेँ विराम दैत काज दिस बढ़ी, मुदा विषयक, तीनू देशक जानकारीक, जे अपन धारा अछि ओकरो जानब अपन महत्व रखिते अछि। तँए कनीकाल अहूँ समय बरदाउ, आ हमहूँ अपन विचारकेँ संक्षिप्त करैत एकटा विषय कहि दइ छी।”

मंगलदेवक विचार सुनि रामकिसुन विचारलैन जे अपन जानकारीमे नहि अछि तँए अपने ओइ विषयक महत्वकेँ नीक जकाँ आँकि नहि रहल छी जइसँ महत्वहीन बुझि पड़ैए, मुदा मंगलदेव भाय भरिसक ओइ तह (विषयक मूल धारा) केँ जानि रहला अछि, तँए एते जोर दऽ रहला अछि। नीक हएत जे अपन काजकेँ कनी बिलमबैत पहिने हिनके, माने मंगलदेवेक विचार बुझि लेब जीवन ले उपयोगी हएत। रामकिसुन बजला-

“मंगल भाय, बजारमे जहिना, जेबीमे कम पाइ रहने, अनेको रंगक उपयोगी वस्तु देखि मन सामंजस्य करैए जे की करब केते नीक हएत। तँए दुनू गोरे..?”

रामकिसुनक विवश विचार सुनि मंगलदेव अपनो विचारकेँ छोलि-बना, माने जहिना बाँसक वस्तुकेँ छोलि-बना चिक्कन (उपयोगी) बनौल जाइए तहिना, चिक्कन करैत बजला-

“रामकिसुन, अपना सभ जइ गामक बासी छी से गाम जापानक गामसँ बहुत सुन्दर अछि, माने भौगोलिक दृष्टिसँ, मुदा जीवनक प्रश्न जैठाम अछि, माने मनुक्खक जीवनक, तैठाम अपना सभ तेते अधला, जापानक जीवनसँ, छी जे जखन दुनूक जीवनकेँ सोझमे राखि देखब तँ अपनो मन अपने जरूर धिक्कारत।”

मंगलदेवक विचार सुनि रामकिसुनक विचारमे जेना उछाल आएल, तहिना बाजल-

“मंगल भाय, कने तहेतह तहियाकऽ दुनूक तुलना करियौ तँ।”

रामकिसुनक विचार सुनि मंगलदेव बुझि गेला जे मंत्रेयोग ने लययोगमे पहुँचैक शक्ति बनबैए। भरिसक रामकिसुनोकेँ ने सएह भेलैन, तँए नीक जकाँ अपना ऐठामक लघु उद्योगक सम्भावनाकेँ सोझामे दिऐन। मंगलदेव बजला-

“रामकिसुन अपना ऐठामक जेहेन माटि-पानि-आवोहवा अछि, तेहेन दुनियाँमे केतौ, माने कोनो देशमे, नहि अछि, तंए खेतक जे पैदावार अछि ओ असीमित अछि।”

मंगलदेवक विचार रामकिसुन नीक जकाँ नहि बुझि पेला मुदा नीक जकाँ बुझए तँ चाहिते छला, बजला-

“मंगल भाय, कने असथिरसँ कहियौ जे जे मनमे अछि ओ मनमाफित बुझि जाइ।”

रामकिसुनक विचार सुनि मंगलदेवक अपने मन कछमछा गेलैन।

कछमछाइक कारण छल अनेको प्रश्न सामनेमे आबि जाएब। जहिना अपना ऐठाम माटि-पानिक तुलना, तहिना अपन देश आ जापानक भौगोलिक पूर्ण स्थितिकेँ जानब, तइसंग सभसँ महत्वपूर्ण अछि अपना ऐठामक आ जापानक मानवक बीच मानवीय शक्तिक दूरी। ..मने-मन मंगलदेव विचार केलाह जे किए ने रामकिसुनेकेँ अगुआ समयकेँ पकैड़ पहिने बान्हि ली। मंगलदेव बजला-

"रामकिसुन, दू देशक बात छी, तँए बहुतो बात अछि। अहूँकेँ बीआक पानि उपछैले जाइक अछि, तँए अहीं कहू जे की बुझए चाहै छी?"

जहिना बेसी भुखाएलकेँ कम भोजन भेटने तृप्त-अतृप्त दुनू होइए तहिना रामकिसुनकेँ सेहो भेलैन। एक दिस मनक अतृप्त विचार खिचए लगलैन, माने मनक भूख खिचए लगलैन, आ दोसर दिस जीवनक, माने शरीरक, तृप्त भूख सेहो खिचए लगलैन। सामंजस्य करैत रामकिसुन बजला- "मंगलभाय, ने अहाँ केतौ पड़ाएल जाइ छी आ ने अपने केतौ पड़ाएल जाइ छी, जापानक विषय नीक जकाँ पछाइत बुझब। अखन देखिते छी जे अपना सभक समय केहेन बिगैड़ गेल अछि, तँए जीवनकेँ ओइ अनुकूल नहि बना लेब तखन जीब केना सकब। तँए नीक हएत जे फरिछा कऽ पछाइत बुझब, अखन एतबे बुझा दिअ जे अपना सभकेँ भविष्यक की सभ सम्भावना अछि।"

रामकिसुनक विचार सुनि मंगलदेवक मनमे सेहो समेलैन जे नीक विचार रामकिसुन बुझए चाहि रहला अछि। मुदा जइ गम्भीरतासँ बुझैक जरूरत अछि, से तँ अपनो धड़फड़मे नहियेँ बुझा सकै छी। तथापि ऊपरो-झापड़ जँ विषय दिस माने भविष्यक सम्भावना दिस, विचारकेँ धकेल देब तँ रामकिसुनक अपनो मन ने ओकरा खोदि-खोदि निकालए चाहता। तइ बीच अपनो किए ने इमानदार विचारवान जकाँ विषयकेँ इमानदारीसँ तत्काल अराधि, अपनो होशकेँ सम्हारि ली। मंगलदेव बजला-

"रामकिसुन, एक संग दू प्रश्न अछि, तँए एकटाकेँ संक्षिप्त परिचय

दैत दोसरसँ नीक जकाँ परिचय कराएब।”

अपन सहमत दैत रामकिसुन बजला- “भाय साहैब.! कोनो विषयकेँ सोल्होअना बुझब ने सुननिहारे मने होइए आ ने कहनिहारे मने, ओ होइए विषय मने। तँए दुनूक बीच सामंजस करब जरूरी अछि। समयकेँ देखैत संक्षेपमे बुझा दिअ, पछाइत समय भेटलापर आगू आरो बुझा देब।”

मंगलदेव बजला- “रामकिसुन, जहिना मनुक्खक जीवन सम्भावनासँ लबालब भरल अछि जे जे कियो अपन लक्ष्यकेँ इमानदारीसँ पकैड़ क्रियाक संकल्पित भेलापर प्राप्त करै छैथ। तहिना गामो-समाज सम्भावनासँ भरल अछिए, तँए जरूरी अछि...।”

मंगलदेव अपन विचारकेँ पूर्ण विराम लग अननौं ने छला कि बिच्चेमे रामकिसुन बाजि उठला- “मनुक्खक जीवनक की सम्भावना भाय साहैब?”

मंगलदेव- “रामकिसुन अहाँ तँ अपने काज दुआरे सुनए नहि चाहै छी, तखन...।”

रामकिसुन बजला- “मुड़कट्टीमे कहि दिऔ।”

मंगलदेव बजला- “जहिना मनुक्खक आगू भरपूर सम्भावना अछि जे समयोचित जे जे करए चाहता से प्राप्त कऽ लेता, तहिना अपनो गाम आ आनो-आन गामकेँ असीम सम्भावना अछिए जे किसानक जीवनक काजमे, जे हाथसँ होइत आबि रहल अछि, केना धक्का मारि ओहन स्वचालित मशीन लग पहुँचा दिऐ, जेना जापानक लोक धक्का मारि पहुँचा लेलैन अछि जइसँ हुनका सभक जहिना उत्पादन मशीनक तहिना खेतक सेहो तेते अगुआ गेलैन अछि जे दुनियाँक कान काटै छैथ।”

मंगलदेवक विचार सुनि रामकिसुन बजला- “अखन की करी?”

मुस्कुराइत मंगलदेव बजला- “किछु ने करी, जीवनकेँ पकैड़ जीवनमे (भूमिमे) स्थापित करैत आगू देखैत अपन डेग उठबी। जेतए ठाढ़

छी वा झुकल छी वा बैसल छी वा खसल छी, तैठामसँ अपन जीवनक आधार बना उठि कऽ अखनेसँ ठाढ़ भऽ दौड़ैक चेष्टा करी।”

रामकिसुन बजला- “अखन जाइ छी।”

मंगलदेव ऐठामसँ विदा भेला-पछाइत रामकिसुनक मनमे जेना जिनगीक प्रति तूफान उठि गेलैन। अनेको संकल्प-विकल्प मनमे उठए लगलैन। मुदा समुद्रमे अपनेकेँ थाहि किए ने हेलैत होइ मुदा अपनो तँ जीवन चाहबे करी किने। जहिना सात अरब लोक दुनियाँमे छैथ तहीमे सँ ने अपनो एक छी। जहिना सभकेँ जिनगी चाहिऐन तहिना ने अपनो चाही जइसँ तेना जिनगीमे हेरा जाइ जे जन्मक दुख, माने जन्म होइ कालक कष्ट, हुअए आकि मृत्युक दुख, माने प्राण छुटै कालक दुख, दुनूकेँ बिसैर अपन कर्मक जिनगीक धारमे केतौ हेलैत रही।

अपन संकल्पक संग अपन जीवनकेँ अपना हाथसँ पकैड़ मुट्ठी मुइन जीवनक धारमे रामकिसुन कुइद गेला। जेना-जेना समय आगू बढ़ल तेना-तेना रामकिसुनो बरहमसिया किसान बनि गाममे ठाढ़ भऽ गेला।

समाजसँ जुड़ल रामकिसुन, तँए समाजक सुख-दुखमे संग रहए लगला। कमलपुरक समाजक विचारमे बाढ़िक हिलकोर जकाँ लगिये चुकल छल, जइसँ जेते जीवन, माने जेतेक मनुक्ख, तेते समस्याक जाल पसरले अछि जइसँ सभ अपने बेथे बेथाएल छेबे करैथ। जालो तँ जाल छी जे रग-रगमे गीरह-गाँठ बनले अछि, ओकरा खोलबो असान नहियेँ अछि मुदा जालमे फँसलकेँ तँ निकलबाके छइ। जालकेँ, समाजमे लगल जालकेँ तोड़ब, ने ओते असान अछि आ ने खोलिकऽ पुन: बनाएबे असान अछि। हजारो बर्खसँ टुटैत-खसैत समाजक जीवन रहल अछि, तैठाम हाथ-पर-हाथ रखि सुधारलो तँ नहियेँ जा सकैए। दर्जनो मुकदमामे रामकिसुन मुद्दालह बनि मुद्दालहक बीच ठाढ़ भेला। अपन संकल्प, अपन विचार आ अपन श्रमकेँ अगुआ रामकिसुन जीवनक धारमे कुइद गेला।

श्रमक हिसाबसँ रामकिसुनकेँ आर्थिक क्षेत्रमे जेना उन्नति हेबा चाही तेना नहि भेलैन मुदा वैचारिक क्षेत्रमे एतेक उन्नति तँ भेबे केलैन जे अपन

विचारकेँ समाजक बीच राखि आगू बढ़ैत रहला। मुदा आर्थिक क्षेत्र कमजोर रहलैन। आर्थिक क्षेत्रमे उन्नति नहि होइक कारण भेलैन मुकदमाक खर्च आ सामाजिक काजमे लगने अपन काजमे बाधा।

भोरे माने सूर्योदयसँ पहिनहि, जहिना रामकिसुन सभ दिन अपन सभ खेतकेँ देखैत अपन काज निर्धारित करैत रहैथ, तहिना आइयो खेत देखि केलैन। केलैन ई जे पनरह धुरक एकटा छोट कोली छैन, जे चौमास खेत छिऐन। चौमास खेतकेँ देखि रामकिसुन मने-मन विचारि लेलैन जे चाह जलखै केला-पछाइत आएब आ कोदारिसँ उनटा देब, माने तामि देब। अखन हाल किछु बेसी छै तँए एक दिनक रौद लगने खेत रसपर आबि जाएत। जखने खेत रसपर औत कि ओकर गोला फोड़ि दोहराकऽ सेरिया पछाइत अवाइद लेब।

वएह खेत तामि रामकिसुन एगारह बजेमे खेतसँ आबि, नहाकऽ खाइले गेला कि परसाएल कटहरक कोआ, जे सुगन्धसँ मह-मह करै छल, देखि आन दिनक अपेक्षा किछु बेसिये खा लेलैन। बेसी खाइक दुनू कारण भेलैन, एक दिस जहिना नीक भोजनक आकर्षण, तहिना दोसर दिस तीन घन्टाक हरतोड़ मेहनत सेहो भेले रहैन।

वएह कटहर रामकिसुनक पेटमे फुलिकऽ तेतेक गैस बनौलकैन जे चेतनशक्ति सून कऽ देलकैन।



शब्द संख्या: 4916, तिथि: 04 जुलाई 2021







Notes

....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
